करुणाविचार विरुद्ध उपयुक्ततावाद

अने

परिशिष्टो

हिंसा विरोधक संघ
नगरशेठनो वंडो-अमदावाद
किंमत ०-७५ नै. पै.

प्रकाशक :

वालाभाई गीरधरलाल शाह
मानद मंत्री,
हिंसा विरोधक संघ,
नगर शेठनो वंडो, अमदावाद

आवृत्ति पहेली : १९६२ : प्रत २०००
किंमत : ०-७५ नैया पैसा (पोस्टेज ०-२५)

: मुद्रक :

स्वामी श्री त्रिभुवनदासजी शास्त्री
श्री रामानन्द प्रिन्टिंग प्रेस
कांकरियारोड, अहमदाबाद.

अनुक्रमणिका

विषयनु नाम		पृष्ठ
(१) बुभुक्षितः किं न करोति पापं श्री परमानन्द कापडिया	...	१
(२) करुणाविचार विरुद्ध उपयुक्ततावाद श्री वत्सला महेता	...	५
(३) श्री काका कालेलर	...	८
(४) श्री स्वामी सत्य भक्तजी	...	१७
(५) श्री दलसुख मालवणिया	...	२०
(६) श्री मुनि नथमलजी	...	३३
(७) श्री सन्तबाल	...	३७
(८) श्री रतीलाल मफाभाई शाह	...	३९
(९) श्री चीमनलाल चकुभाई शाह	...	४५
(१०) श्री डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	...	५५
(११) श्री प्राणलाल काळीदास	...	६६
(१२) श्री वत्सला महेता	...	७३
(१३) उपसंहार परमानन्द कापडिया	...	८५

परिशिष्टो

(१) धर्मविचार विनोबाजी ... १२१
(२) करुणानी वेदना ... १२५
(३) उपयोगवाद विरुद्ध वत्सलावहेनने पत्र ... १३५
श्री दयामुनि
(४) वत्सला वहेनने जवाब ... १३९
मुनिश्री जेठमलजी
(५) अहिंसानी उत्क्रान्ति ... १४२
परमानन्द कापडिया
(६) निरामिष आहार ... १७२

आमुख

भारत सरकारनी पशुओ प्रत्येनी हालनी नीति

१. लांबा वखतथी जे प्रश्नोनो अमे विचार करीए छीए तेनो उपाय केटलेक अंशे मळी आव्यो छे। अमारा वाचकोना हाथमां पशुओ प्रत्ये मानवीओना वर्ताव संबंधी एक एवुं पुस्तक रजू करवानी अमे उमेद धरावता हता के, जे तेमने उपयोगी थाय। आवी जातनुं पुस्तक अमारा ग्राहकोने अमे आपीए छीए तेनी अमारा कदरदान ग्राहको कदर करशे तेवी आशा राखीए छीए।

२. आपणा "हिंसाविरोध" पत्रमां संचालको तेम ज वाचको तरफथी सरकारनी पशुओ प्रत्ये हालनी नीति विरुद्ध अवार-नवार विरोध थाय करे छे अने सरकारे तेवी नीति बदलवी जोईए तेवा लेखो वारम्वार प्रगट थाय छे। तेवा विषय उपर चर्चा केन्द्रित करीने लखेला लेखोवाळुं आ पुस्तक अमे प्रगट करी शक्या छीए, ते माटे—"प्रवुद्ध जीवन" ना तंत्री श्री परमानन्दभाई कुंवरजी कापडियाना अमे अभारी छीए। "प्रवुद्ध जीवन" पत्रना एक वाचके सरकारनी पशुओ प्रत्येनी घातकी नीति विरुद्ध लेख मोकल्यो ते उपरथी श्री परमानन्दभाई ए "बुभुक्षितः किं न करोति पापम् (भूख्यो माणस कयुं पाप नथी करतो) ए मथाळा नीचे एक लेख ता. १–३–६१ना "प्रवुद्ध जीवन" माँ प्रसिद्ध कर्यो; ते उपरथी श्रीमती वत्सला वहेन महेताए ते लेखना जवावरूपे—

"करुणाविचार विरुद्ध उपयुक्ततावाद" (Compassion versus utility) ए मथळा नीचे चर्चापत्र लखी पशुहत्यानी अनिवार्यता अने उपयुक्ततानुं समर्थन कर्युं । ते चर्चापत्र श्री परमानन्दभाईए तेमना पत्रमां प्रगट कर्युं अने आ विषय उपर चर्चापत्रो लखी मोकलवा जनताने आमंत्रण आप्युं । ते उपरथी केटलाक लेखकोए चर्चापत्रो 'प्रबुद्ध जीवन"ना तंत्री उपर लखी मोकल्यां हतां । ते पैकी "प्रबुद्ध जीवन"माँ प्रगट थयेलां चर्चापत्रोनो श्रीमती वत्सला बहेन महेताए जवाब आप्यो छे अने आखरे श्री परमानन्दभाईए तमाम लेखोनी समालोचना करी छे । ते तमाम लेखो पुस्तिकारूपे प्रसिद्ध करवानी श्री परमानन्दभाईए अमने मंजूरी आपी छे तेथी अमो ते लेखो पुस्तिकारूपे प्रसिद्ध करीए छीए ।

३. आ पुस्तकमां प्रगट थयेला लेखो वांचतां अमने एम लागे छे के दरेक व्यक्तिए पोतानी मान्यता प्रमाणे–खुल्ला दिलथी तेमना विचारो व्यक्त कर्या छे । कोई पण लेखना विचारो साथे अमे संमत छीये तेवुं अमारा वाचकोए मानवानुं नथी । कया विचार सारा अने अनुकरणीय छे ते अमे अमारा वाचकोना तेमना पोताना विचारो उपर छोडीए छीए । दरेक माणस पोतानी केळवणी, संस्कार संस्कृति, आजुबाजुनुं–वातावरण, अभ्यास, मनन, चिंतन इत्यादि उपर पोतानी मान्यता, आचारविचार, वर्तन इत्यादिनो आधार राखे छे ।

बाळी नाखवामां के तेनो नाश करवामां आवे छे। विज्ञाननो अने पडतर जमीननो वधु उपयोग करवामां आवे तो तो हाल अन्न, शाकभाजी, फळ जेटलां उत्पन्न थाय छे तेना करतां घणा ज वधारे प्रमाणमां उत्पन्न करी शकाय तेम छे।

५. माणस Carnivorous मांसाहारी, Non carnivorous निरमांसाहारी के omnivorous के सर्वभक्षि प्राणी छे ते बाबतमां जगतना मोटा मोटा डॉक्टरोमां मतभेद छे। जगतना घणा मोटा डॉक्टरो एवा मत उपर आव्या छे के माणसो Non carnivorous प्राणी छे। मांस ते माणसनो कुदरती खोराक नथी। मांसाहारथी शरीरमां अनेक प्रकारना रोग थाय छे अने मटतां वधारे वार लागे छे। आवी जातनुं साहित्य घणा प्रमाणमां निष्णात-अनुभवी अने ऊँची डिग्री धारी विद्वान् डॉक्टरो तरफथी सतत प्रसिद्ध थया करे छे। एकला मांस उपर जीवनार माणसो दुनियामां घणा जूज छे। तेमनो मोटो भाग जंगली अवस्थामां छे। जगतना सुधरेला देशोमां अन्न, शाकभाजी अने फळ मुख्य खोराक छे; ज्यारे मांस पूरक खोराक तरीके वापरे छे ते अनिवार्य छे ते कहेवुं भूलभरेलुं छे। मांसाहार माणसनी अज्ञानता, जङ्गलीपणुं, जूनवाणी, जडता इत्यादिना पुराणा अवशेषो छे। बळ प्राप्त करवा माटे मांसाहारनी जरूर छे तेवी केटलाकोनी मान्यता भ्रम छे। हाथी, घोड़ा, बळद, गाय, भेंस, पाडा, आखला इत्यादि प्राणीओ वनस्पत्याहारी होवा छतां बळवान छे। तेओ लांबा वखत सुधी काम करी शके छे अने स्वभावे ओछा झनूनी होय छे। मानवो-साथे हळीमळी जाय छे अने पाळवा लायक बने छे। ज्यारे वाघ, वरू, सिंह, चित्ता इत्यादि मांसाहारी प्राणीओ जंगली दशामां विकाळ अने झनूनी स्थिति भोगवे छे। ते लांबा वखत सुधी महेनत करी शकतां नथी अने मनुष्यो तेनो उपयोग करी शकता नथी अने तेमने विश्वासमां लई शकाय तेवां थतां नथी। मांसाहारीना पक्षपातीओए आ हकीकत विचारवा जेवी छे मांसाहारनी तरफेण के अनिवार्यतानुं प्रतिपादन करनाराओ वेद अने मनुस्मृति इत्यादि पुराणां धर्मशास्त्रोनो आधार टांके

छे। धर्मशास्त्रो एक वखते के एक व्यक्तिए लखेलां नथी। समयन वहेण साथे, समाजना उत्कर्ष साथे तेमां पण परिवर्तन थये गयां छे धर्मशास्त्रो तो मोटी खाण छे, तेमाँथी बंने तरफना आधारो मळी आ छे। वेदमां हिंसानुं-प्रतिपादन कर्युं नथी. परन्तु अर्थनों अनर्थ के अयोग्य अर्थ करीने पाछळथी वेदोनो आधार लई धर्मना नामे यज्ञोम प्राणीओनां वलिदाननी प्रथा शरू थई छे तेवुं आर्यसमाजना प्रणेता महर्षि दयानन्द सरस्वती तेमज विद्यमान विद्वान पण्डित-वर्य श्री सातवलेकरजी प्रतिपादन करे छे। शास्त्रोमां केटलीक हकीकत रूपक होय छे। तेमां गूढ अर्थ समायेलो होय छे। उपलक अर्थथीघ णीवार गेरसमजूत थाय छे। जगद्गुरु श्रीमद् शंकराचार्ये जैनोनी अहिंसा अपनावीने ब्राह्मण धर्मनो पुनरोद्धार कर्यो छे। तेमज जगतनां मोटां विद्वानो अने तत्त्वचिंतकोए पण पशु प्रत्ये दयानो उपदेश कर्यो छे। माणसने omnivorous सर्वभक्षि मानवामां आवे तो पण माणस बुद्धिशाळी प्राणी होई विवेक राखवो जोईए, कूतरां विलाडां जेवुं ना थवुं जोईए।

६. युरोप, अमेरिका प्रदेशोमां प्राणी प्रत्ये दयावाळो एक वर्ग एवो पण उत्पन्न थवा लाग्यो छे के तेओ दृढतापूर्वक माने छे के माणसोथी जानवरोनुं शोषण थतुं अटकाववा सारु जानवरोनी के प्राणीजन्य चीजनो उपयोग बंध थवो जोईए। तेवा लोको वेगनो कहेवाय छे। तेओनी हालनी संख्या आशरे ४० थी ५० हजारनी छे। तेयो जानवरना चामडां, हाडकां, शींगडां, आंतरडां इत्यादिनी बनेली कोई पण चीजनो के रेशमनो उपयोग करता नथी। दूध सरखुं पण वापरता नथी, चामडानी जगाए प्लास्टीक वगेरेनी चीजोनो उपयोग करे छे। खोराकमां अन्न साथे सूकां-लीलां रसदार फळो, शाकभाजीनो उपयोग करे छे। मांस, माछली, इन्डानो [illegible] त्याग करे छे। जानवरोनां अंगोमांथी उत्पन्न थयेली दवाओ पण वापरता नथी। प्राणीओमां लागणी छे तेवुं अत्यार सुधी नहीं माननारा देशोमां ज्यारे आवी संस्थाओ अने वर्गो उत्पन्न थाय छे त्यारे भारत

माता जेनी संस्कृति हजारो वर्षोथी अहिंसा अने प्राणीओ प्रत्ये प्रेम अने दया उपर रचायेली छे ते ज भारतवर्षमां वीसमी सदीमां पण मांसाहार अनिवार्य माननारा वसे छे अने तेनुं प्रतिपादन करे छे ते शोचनीय छे।

७. भारतवर्षमां "अहिंसा" परमोधर्म छे तेवी छाप वधुमां वधु जैन धर्मने आभारी छे । ते धर्मना अनुयाथीओ पण मोती अने रेशमनो वेपार करे छे तेवी दलील करीने मानवोनी हिंसकवृत्तिने थावडवी योग्य नथी । वधा जैनो मोती अने रेशमनो वेपार करता नथी । वेशक केटलाक जैन वेपारीओ मोती अने रेशमनो वेपार करे छे तेनो दोष समग्र जैन धर्मीओ उपर लादी शकाय नहीं । जैनो पासेथी वधु प्रमाणमां अहिंसानी अपेक्षा राखी शकाय ते वास्तविक छे पण तेथी हिंसावादीओने प्रोत्साहड़ आपवुं वाजवी नथी । जैनोए प्रत्यक्ष तथा परोक्ष हिंसाथी पर रहेवुं जोईए अने प्रलोभनो दूर राखी आदर्श अहिंसावादी तरीके जीवन व्यतीत करवुं जोईए, तोज समाजमां तेमनी छाप पडे ।

८. वैदकीय अने विज्ञानना नामे एकलां वांदराओ उपर प्रयोगो थतां नथी परन्तु वांदरां, कूतरां, विलाडां, ससलां, देडकां, घोड़ा, गाय, वळद इत्यादि जानवरो उपर एवा प्रकारना घातकी प्रयोगो थाय छे । केटलाक प्रयोगो anaesthesia कलोरोफोर्मथी के अंगोपांग बहेरां करीने करवामां आवे छे । तेमांना केटलाक प्रयोगो पूरी सचेत अवस्थामां करवामां आवे छे । तेमांना केटलाक प्रयोगो तो एकला वधा घातकी होय छे अने जे जानवर उपर तेवा प्रयोगो करवामां आवे छे तेने एवी भयंकर वेदनओ वेठवी पडे छे के जेने लीधे ते चीसों, वराडा, धमपछाडा करे छे अने तेनां अंगोपांग बेडोळ वनीं जाय छे । ते जोईने जे कोई माणसमां मानवता रहेली होय छे ते जरूर कंपी ऊठे छे । आ जगाये अत्रे एक दाखलो टांकवा रजा लईए छीये । एक सीनेमानटी मांसाहार करती हती, पण कतलखानाम जानवरोने केवीरीते मारीने मांस तैयार करवामां आवे छे ते तेणे ज्यारे जाते जोयुं त्यारथी मांसभक्षण करवानु छोडी दीधुं ।

जे जे देशो मां वैदकीय संशोधन माटे वांदरां, कूतरां, बिलाडा, ससलां देडकां, इत्यादि पंचेन्द्रिय प्राणीओ उपर जुदी जुदी जातना घातकी अने अमानुषी प्रयोगो सतत अने मोटा प्रमाणमां करवामां आवे छे अने कायदा द्वारा तेवा प्रयोगोने कायदेसर ठराववामां आव्या छे ते ज देशोमां –"एन्टी वीवी सेक्शन" संस्थाओ उत्पन्न थई छे अने मोटामां मोटी–छेल्लामां छेल्ली डिग्रीओ धरावता अनुभवी निष्णात डॉक्टरो आवा घातकी प्रयोगो प्रत्ये नफरत दर्शावे छे; एटलुं ज नहीं परन्तु तेथी मानवजानने कोई पण जातनो लाभ थाय तेवी शक्यता पण नथी अने तमाम प्रयोगो निःसार्थक छे तेवुं कमिशनो नीमी साबीती साथे प्रतिपादन करे छे । ते माटे "Cetury of Vivisection and Antivivisection by (Author) Westa-coff. (Publishers) C. W. Daniel Ltd.England वाचवा अमारी भलामण छे ।

९. आ पुस्तिकामां रजू करेला केटलाक लेखोमां जानवरो उपरना प्रयोगो अनिवार्य अने मानवजाति माटे उपयोगी छे तेवुं समर्थन कर्युं छे, परन्तु तेमां तेमनी अतिशयोक्ति अने केवळ कल्पना छे। एन्टी वीवी सेक्शनना निष्णातोना अभिप्राय प्रमाणे जानवरो उपर थता प्रयोगोथी मानवजातिने लाभ थाय तेवी कोई पण सिद्धि प्राप्त थई नथी अने तेवी सिद्धि थवानी शक्यता पण नथी । जे केसोमां रोगोमां असर पहोंची

उपर प्रयोगो करवामां घातकी पणुं छ ते माटे पण आवा प्रयोगो बंध थवा जोईए अने कायदाथी तेनो अटकाव थवो जोईए । **आत्मवत् सर्व भूतेषु** भारतनो आ धर्म भारतसरकारे भूलवो न जोईए अने पशुओने अभयदान आपी जगतमां दाखलो बेसाडवो जोईए ।

१०. जानवरोने पण मनुष्यो माफक कुटुंबभावना, सगाई, प्रेम, सहवासवृत्ति, सुखदुःख, विरहवेदना इत्यादि भावना होय छे । तेवां प्राणीओ प्रत्ये दया नहीं राखवाथी तथा घातकी रीते वर्तवाथी माणस माणस वच्चे पण दयाहीनता अने घातकीपणुं उद्भवे छे । माणसे माणसने मारवा माटे तलवार, तोप, बन्दूक, मशीनगन इत्यादि संहारकशस्त्रो सर्ज्यां छे एटलुंज नहि पण माणसोनो सामुदायिक संहार सर्जवा तेम ज तेमने रिबावी रिबावीने मारवा माटे गेसबोंब, जुदी जुदी जातना रोग उत्पन्न करे तथा आखा शरीरे चाँदाँ पाडे तेवा बोंब, अणुं बोंब, हायड्रोजन बोंब, इत्यादि अनेक प्रकारना बोंबो, शस्त्रो अने स्वयंसंचालितझडपी विमानो सर्ज्यां छे । आ बधुं मांसाहार, पशुपक्षीओ प्रत्येनी दयानो अभाव–तेमना तरफना घातकीपणानुं परिणाम छे ।

विटामीन हवे तो केमीकलोमांथी तेमज वनस्पतिमांथी तैयार थई शके छे अने एक गोळी विटामीननी लेवाथी सवाशेर दूध के एक बे इंडानी गरज सारे छे ।

देवदेवीओ आगळ धर्मना नामे पशुबली आपवानुं बंध करवानी हवे दरेक सुधरेली सरकारनी फरज छे । सुधरेला देशनो कोई पण शासनकर्ता–तेमां खास करी आपनी भारतसरकारनी मान्यता नहीं होय के देव देवी आगळ धर्मना नामे बली आपवामां पुण्य थाय छे । मुख्यत्वे अज्ञानी, नीचला थरना लोको आवा भोगो धरावे छे । कलकत्ताना काली मन्दिरमां बकराना भोग अपाय छे ए आपणा देशना सुधरेला शासनकारो तेमज बंगाळ अने कलकत्ताना सुधरेला विद्वान, संस्कारी अने समजदार

जे जे देशो मां वैदकीय संशोधन माटे वांदरां, कूतरां, विलाडा, ससलां देडकां, इत्यादि पंचेन्द्रिय प्राणीओ उपर जुदी जुदी जातना घातकी अने अमानुषी प्रयोगो सतत अने मोटा प्रमाणमां करवामां आवे छे अने कायदा द्वारा तेवा प्रयोगोने कायदेसर ठरावचामां आव्या छे ते ज देशोमां –"एन्टी वीवी सेक्शन" संस्थाओ उत्पन्न थई छे अने मोटामां मोटी–छेल्लामां छेल्ली डिग्रीओ धरावता अनुभवी निष्णात डॅाक्टरो आवा घातकी प्रयोगो प्रत्ये नफरत दर्शावे छे; एटलुं ज नहीं परन्तु तेथी मानवजानने कोई पण जातनो लाभ थाय तेवी शक्यता पण नथी अने तमाम प्रयोगो निःसार्थक छे तेवुं कमिशनो नीमी साबीती साथे प्रतिपोदन करे छे । ते माटे "Cetury of Vivisection and Antivivisection by (Author) Westa-coff. (Publishers) C. W. Daniel Ltd.England वाचवा अमारी भलामण छे ।

९. आ पुस्तिकामां रजू करेला केटलाक लेखोमां जानवरो उपरना प्रयोगो अनिवाय अने मानवजाति माटे उपयोगी छे तेवुं समर्थन कर्युं छे, परन्तु तेमां तेमनी अतिशयोक्ति अने केवळ कल्पना छे। एन्टी वीवी सेक्शनना लेखकोना अभिप्राय प्रमाणे जानवरो उपर थता प्रयोगोथी मानवजातिने लाभ थाय तेवी कोई पण सिद्धि प्राप्त थई नथी अने तेवी सिद्धि थवानी शक्यता पण नथी । जे केसोमां रोगोनी असर पहोंची गई होय छे तेवा केसोमां ते मटाडवाना सीरमोना इन्जेक्शनो आपवा छतां तेवा रोगो थयाना दाखला मोजूद छे अने मुख्य तो जे केसोमां तेवा रोगो थवाना नथी तेवा ज केसोमां रसीओ लेवामां आवे छे अने पछी ते रसीने लीधे रोग थतो अटकी गयो तेवो यश लेवामां आवे छे । केटलाक केसोमां तो आवी जातनी रसीनां इन्जेक्शन आपवाथी रोगोनी उत्पत्ति थाय छे । एन्टी वीवी सेक्शनवाळाओना हाल सुधीना अभिप्रायो दाखलाओ साथे आवाज प्रसिद्ध थाय छे । कोईने लाभ थाय छे के नहिं ते प्रश्न वाजुए राखीए तो पण मानवोना आसरे रहेलां कुदरती प्राणीओ

उपर प्रयोगो करवामां घातकी पणुं छ ते माटे पण आवा प्रयोगो बंध थवा जोईए अने कायदाथी तेनो अटकाव थवो जोईए । **आत्मवत् सर्व भूतेषु** भारतनो आ धर्म भारतसरकारे भूलवो न जोईए अने पशुओने अभयदान आपी जगतमां दाखलो बेसाडवो जोईए।

१०. जानवरोने पण मनुष्यो माफक कुटुंबभावना, सगाई, प्रेम, सहवासवृत्ति, सुखदुःख, विरहवेदना इत्यादि भावना होय छे । तेवां प्राणीओ प्रत्ये दया नहीं राखवाथी तथा घातकी रीते वर्तवाथी माणस माणस वच्चे पण दयाहीनता अने घातकीपणुं उद्भवे छे । माणसे माणसने मारवा माटे तलवार, तोप, बन्दूक, मशीनगन इत्यादि संहारकशस्त्रो सर्ज्यां छे एटलुंज नहि पण माणसोनो सामुदायिक संहार सर्जवा तेम ज तेमने रिबावी रिबावीने मारवा माटे गेसबोंब, जुदी जुदी जातना रोग उत्पन्न करे तथा आखा शरीरे चाँदाँ पाडे तेवा बोंब, अणुं बोंब, हायड्रोजन बोंब, इत्यादि अनेक प्रकारना बोंबो, शस्त्रो अने स्वयंसंचालितझडपी विमानो सर्ज्यां छे । आ बधुं मांसाहार, पशुपक्षीओ प्रत्येनी दयानो अभाव–तेमना तरफना घातकीपणानुं परिणाम छे ।

विटामीन हवे तो केमीकलोमांथी तेमज वनस्पतिमांथी तैयार थई शके छे अने एक गोळी विटामीननी लेवाथी सवाशेर दूध के एक बे इंडानी गरज सारे छे ।

देवदेवीओ आगळ धर्मना नामे पशुबली आपवानुं बंध करवानी हवे दरेक सुधरेली सरकारनी फरज छे । सुधरेला देशनो कोई पण शासनकर्ता–तेमां खास करी आपनी भारतसरकारनी मान्यता नहीं होय के देव देवी आगळ धर्मना नामे बली आपवामां पुण्य थाय छे । मुख्यत्वे अज्ञानी, नीचला थरना लोको आवा भोगो धरावे छे । कलकत्ताना काली मन्दिरमां बकराना भोग अपाय छे ए आपणा देशना सुधरेला शासनकारो तेमज बंगाळ अने कलकत्ताना सुधरेला विद्वान, संस्कारी अने समजदार

सज्जन नागरिकोने शरमभरेलुं छे । आवा वलिदानो वहेम, अंधश्रद्धा स्वार्थांधता, अज्ञानता, जंगलीपणाना अवशेषो छे । धर्मना नामे पशुवली वंध कराववानी भारतना दरेक संस्कारी अने सुधरेला नागरिकनी फरज छे ।

भारतसरकारे मत्स्य उद्योगने प्रोत्साहन आपीने अने माछलीओनी होम डिलीवरी करीने भारत देशने माछीमारोनो देश बनाववो ना जोईए । देशनां पशुपक्षीओनु भारत सरकारे रक्षण करवुं जोईए ।

Enemy of Animal is enemy of Man. पशुओनो दुश्मन मनुष्योनो दुश्मन छे । प्रभु सौने सन्मति आपो ।

पानाचंद मोहनलाल वकील
प्रमुख : हिंसाविरोधक संघ
अमदावाद

ध्यान देने योग्य

हिंसाविरोध संघ की तरफ से निम्न लिखित पुस्तिकाएँ प्रकाशित की गई हैं। खूब ही कम मूल्य में दी जाती है। जिन भाई बहनों को पुस्तिका की जरूरत हो, पत्र कार्यालय में आने के बाद भेज दी जायेगी। इसमें पुस्कल खर्च होता है। इसकी मदद के लिये जिन महानुभावों की सहायता आवेगी वे लोग धन्यभाग्य के पात्र माने जायेंगे।

लि० व्यवस्थापक

हिंसाविरोधक संघ, अहमदाबाद

पुस्तिकाओं के नाम

	किमत रु.न.पै.
(१) वनस्पति आहार अथवा मांस आहार.. ...	०—७
(२) प्राणी दुःख दर्शन (मूक दुनिया रुदन) ...	०—५
(३) चमड़ा की करुण कहानी तथा रेशम में होती हिंसा (हिन्दी और गुजराती) नजर में क्या देखा ? जीवित कीडा की कबर। ...	०—३
(४) बन्दरों की करुण कहानी	०—७
(५) सन्त प्रान्सिस	०—७

संघ की तरफसे

संघ के हितचिन्तक महानुभाव !

इस पुस्तक को प्रकाशित करके मुझे बड़ा हर्ष होता है कि अनेक लोगों के अनेक विचार आपलोगों को पढ़ने को मिलेगा। उस विचार के साथ संघ को कुछ लेना-देना नहीं है।

संघ का विचार तो प्राणी दया है। संघ प्रत्येक प्राणी को सुखी देखना चाहता है। यह जैनधर्म का उपदेश है ...

आपका मानद मन्त्री
बालाभाई शाह

दो शब्द

श्रद्धालु पाठक वर्ग !

हिंसाविरोधक संघ की तरफ से भेट रूप से यह पुस्तक आपलोगों के पास भेजी गयी है। इस पुस्तक में जो कुछ लिखा गया है वह केवल लेखक महानुभावों का अभिप्राय है। अपना संघ तो चुस्त अहिंसावादी है।

जैनधर्म सम्पूर्ण विश्व को यह उपदेश कर रहा है कि अहिंसापरमधर्म है। जब तक इस महावाक्य का पालन न होगा तब तक विश्व में अशान्ति ही रहेगी।

मेरा मत

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुखभाक् भवेत्॥

आपके —

मुनि दयानन्द

१

बुभुक्षित: किं न करोति पापम्

श्री.परमानन्द कापड़िया

मांसमच्छीना आहार तेमज व्यापार-उद्योगने खुब उत्ते-जन आपी रहेल भारत सरकारनी आजनी नीतिथी खूबआघात पामीने एक मित्रे पत्र लख्यो छे, अने आ बाबतने लगती केटलीक पत्रिकाओ मोकली छे। ते सर्वनो सङ्कलित सार निचेमुजब छे :--

मुम्बई, मद्रास, कलकत्ता अने दिल्हीमां मोटा पाया उपरनां कतलखानां उभा करीने भारत सरकार पशुओनी कतलने असधारण प्रोत्साहन आपवा मागे छे। एटलुं ज नहीं पण ते द्वारा उत्पन्न थता मांसनी निकास करीने परदेशी हुंडियामण प्राप्त करवानी आतुरता सेवे छे। वली वरस दहाडे आपणा देश मांथी दोढ बे लाख वांदराओनी निकास थाय छे तेमज मच्छी, देड़कां करचलां वगेरे जीवतां प्राणीओनां पारसल परदेश मोकलवामां आवे छे। आ देशमांथी गोमांसनी निकासना आंकड़ा नीचे मुजब छे।

१९४२-४३ रु. १५,००,०००नी मांसनिकास
१९५२-५३ रु. ५६,३८,०००नी मांसनिकास
१९५६-५७ रु. ६०,३९,४५१नी मांसनिकास

वचगाले महाअमात्य नेहरुनी सूचनाथी गोमांस निका-सनी बन्धी करवामां आवी हती। ताजेतरमां वेपारउद्योगखातानां मन्त्रीए गोमांसनिकासनी छुट आपी छे। आना परिणामे गो मांसनिकासमां एकदम बधारो थवा सम्भव छे। वली गुजरात स रकार मत्स्योद्योगनो खूब विकास करवा मागे छे। आगामी

पञ्चवर्षीय योजनामां मांसनुं उत्पादन ४६ लाख टनथी वधारीने ९२ लाख टन सुधी अने एक करोड पहोंचेली ढोरोनी कतलने बे करोडे पहोंचाडवानुं विचार्युं छे। आ बधा पाछल आ देशमां मांसहारने बने तेटलो उत्तेजवानो अने तेनी निकास करीने बने तेटलुं परदेशी हुण्डियामण मेलववानो भारत सरकारनो आशय छे। आ प्रकारनी भलामणो करवामां आवी छे। आ बधुं जोतां भगवान बुद्ध, महावीर अने गांधीनुं भारत कई दिशाए गति करी रह्युं छे तेनो विचार आवे छे। आम पशुहिंसा तरफ जोसभेर गति करी रहेला देशने ते दिशापथी अटकाववा माटे आपणे कशुं न करी शकीए ? शेठ कस्तुरभाई लालभाई जेवा जैन समाजना आगेवानो आ बाबतमां केम मौन सेवीने बेठा छे ? कांग्रेस सरकार सामे कशुं ज न कही शकाय एवी मनोवृत्ति केटलाकनी जोवामां आवे छे।

आ प्रमाणे पत्रलेखक मित्र आखी समस्या रजू करीने ते संबंधे मारा विचारो, प्रबुद्ध जिवनमां प्रगट करुं एवी तेओ अपेक्षा दर्शावे छे।

आना जवाबरूपे शुं लखवुं के सूचववुं ते जरा मूझवे एवो विषय छे। एम छतां तत्काल जे ते शब्दो मूकवा हुं प्रयत्न करुं छुं। मने लागे छे के जे देशमां संख्याबंध लोको बल्के घणा मोटा भागना लोको—मांसाहारी छे त्यां पशुओनी कतल के मांसमच्छीनो उपयोग कायदाकानूनथी बंध करवानुं शक्य नथी। ज्यां सुधी मांसपरायण लोकोनुं हृदय परिवर्तन कराववामां न आवे त्यां सुधी तेमना माटे आ सगवड पूरी पाडवी अने जरूर प्रमाणे अद्यतन सगवडोमां वधारो करवो ए राज्यसंस्थानी अनिवार्य फरज बने छे। आटली वास्तविकता आपणे इच्छाए अनिच्छाए स्वीकार्ये ज छूटको

छे। पण आजे आ बाबतमात्र मांसाहारी लोकोनी जरुरियातनो ज ख्याल करिने विचाराय छे एम नथी। उलटुं मांसाहारने बने तेटलुं मांसाहारने उत्तेजन आपवुं अने परदेशोने पण मोटा प्रमाणमां मांस पुरूं पाडवुं आवी वृत्ति भारत सरकारना मानसने आवरी रही छे। आनुं कारण आजु-बाजु चोतरफ व्यापी रहेली हिंसाविषयक उदासीनता छे। लोकमानसमांथी करुणा लुप्तवत थई गई छे। मनुष्य सिवाय जड-चेतन सृष्टि बधे जाणे के कशो भेद ज न रह्यो होय ए रीते दरेक वस्तु-पछी ते पशु होय के पथ्थर-मानवोना उपयोग माटे ज निर्मायेल छे। कहेवती पशुसृष्टिने स्वतंत्र अस्तित्वनो-कोई सहअस्तित्वनो कोई अधिकार ज नथी। आवी मान्यता अने मानसिक वलण सर्वत्र प्रसरी रह्यु होय एम लागे छे। बने तेटली विज्ञानना नामे, व्यापारउद्योगना नामे, खोराकना नामे के मनोरंजनना नामे गमे तेटली हिंसा करवामां आवे तो सामान्य जनताना दिलमां ते विषे कोई अरेराटी जोवामां आवती नथी। वली कमनसीबे देशनी आजनी परिस्थिति पण लोकोने पशुहिंसा तरफ अभिमुख करे तेवी बनती रही छे। वस्ति वधती जाय छे, अनाजनुं उत्पादन लोकोनी जरूरियातना प्रमाणमां पाछळनु पाछळ ज रहेतुं जाय छे, एक या बीजा आकारमां प्राणीजन्य पदार्थोनो उपयोग खूब फेलातो जाय छे। खानपाननी लोलुपता सीमा मूकती जाय छे, पशुदयानी वात हांसीपात्र बने छे। देशना औद्योगिक विकास माटे पारविनाना परदेशी हूंडियामणनो जरुरियात उभी थई छे। परिणामे जेम प्रजाजनोनी तेम भारत सरकारनी मनोदशा भूख्या मानवी माफक विवेकबधिर बनी गई छे। संस्कृत भाषामां सुप्रसिद्ध उक्ति छे के 'बुभुक्षितः किं न करोति पापम्'। भूख्यो माणस कयुं पाप नथी करतो ? आ उक्ति आजनी भारत सरकाने बरोबर लागु पडे छे। पृथ्वी

उपरनी गमे ते चीजवस्तुनुं राष्ट्रनी दोलतमां 'national wealth' मां केम करवुं एज भारत सरकारनी चिंतानो मुख्य विषय बनी रह्यो छे।

समजदार मानवी गमे तेवां प्रलोभनो वच्चे पण, माराथी आ वस्तुनो व्यापार नहि थाय. आ बाबतनो उद्योग थई शकशे अने आ उत्पादन वृत्तिनो माराथी विचार नहि थाय एवो विवेक करतो चाले छे अने पोताना धर्म, संस्कार अने सभ्यताना खयालो मुजब पोतानी प्रवृत्तिनास्वरूपनो निर्णय करे छे। भारत सरकार भूतदया जेनुं एक महत्वनुं अङ्ग छे, तेवी भारतीय सभ्यता जाणे के विसरी गई छे अने मद्य सिवाय आवी कोई पण बाबतनो आग्रह तेणे छोडी दीधो छे अने मद्य निषध पण अमुक राज्यो पूरतो मर्यादित रह्यो छे। धन, धन अने परदेशी हूंडियामण ए ज आजनी सरकारनुं रटण छे। अने आ रटणना प्रजाजीवन उपर केवां सीधां तेमज आडकतरा मोटां परिणाम आवे तेनुं आजनी विचित्र परिस्थितिमां कोने शुं कहेवुं अने ते कह्यानो शुं अर्थ आ प्रश्न सामे आवीने उभो रहे छे।

कांग्रेस सामे के भारत सरकार सामे आपणे कशुं ज कही न शकीए एवुं कांई छे ज नहि। ते सामे ज्यारे पण कांइक कहेवा जेवुं लागे त्यारे ते स्पष्टपणे कहेवानी आपणी फरज छे अने सद्भाग्ये जे कांई कहेवुं होय ते कहेवानी पुरी छूट छे। पण आ बाबतमां तीव्र लागणी धरावतां छतां जवाबदार व्यक्तिओ जे मोटा भागे मौन सेवती मालूम पडे छे। तेनुं कारण ए ज छे के पवन विपरीत दिशाए वही रह्यो छे. आपणे कांग्रेसने अने भारत सरकाने गांधीजी अने अहिंसा साथे वधारे पडती जोडीए छीए। गांधीजी शिरोमान्य छे।

अहिंसा आदरणीय छे, पण देशनो भौतिक उत्कर्ष साधवा जतां गमे तेटली स्थूळ अने मोटा पायानी हिंसानु अवलंबन लेवामां आजनी सरकारने कोई सङ्कोच नथी। आवी परिस्थितिमां बोलवु या कहेवु ते व्यर्थ अपलाप जेवु अरण्यरुदन जेवु लागे छे। अने साधारण माणस माटे मौन धारण सिवाय बीजो कोई विकल्प देखातो नथी। आम छतां पण जेना दिलमां कतल अने हिंसा सामे ऊंडी व्यथा छे तेणे आजनी हिंसाप्रचूर वृत्ति अने प्रवृत्ति सामे चालु पोकार उठावता रहेवु ए जरूरी छे। एवा श्रद्धापूर्वक के आजे नहि तो आवती काले मूक प्राणीओ वतीनो पोकार जनताना कान उपर अथडाशे अने पोताना जीववा साथे ए आखी पशुसृष्टिने पण बने तेटलु अभयदान आपवु ए पोतानी शक्य फरज बने छे, धर्म छे। आवु कर्तव्यभान अने करुणावृत्ति सामान्य लोकोना अन्तरमां जागृत थशे।

२

करुणाविचार विरुद्ध उपयुक्ततावाद

वत्सला महेता

ता. १-३-६१ ना 'प्रबुद्ध जीवन'मां प्रगट थयेल बुभुक्षितः किं न करोति पापं। ए मथालानो लेख वांचीने श्री वत्सला बहेन महेताए एक चर्चापत्र लखी मोकल्यु छे जे नीचे प्रगट करवामां आवे छेः—

"मांसमच्छीना आहारने भारत सरकार उत्तेजन आपी रही छे एम मानीने आपना एक मित्रने आघात लाग्यो छे अने तेमणे आपने पत्र लख्यो छे तेम ज तेना उपर आपे आलोचना करी छे ते वांचीने घणा वखतथी मनमां अमुक

विचारो घोळाया करे छे, ते विचारो आप समक्ष मूकुं छुं। तेनो उत्तर आप तथा अपना मित्र आपवा कृपा करशो ?

"मांसमच्छी आजे नहीं पण हजारो वर्षथी भारतना मोटा भागना लोको खाता आव्या छे। बंगाल, सींध, पंजाब वगेरे आखा प्रांतो मांसाहारी ज छे-सिवाय के ब्राह्मणो अने बंगालमां तो ब्राह्मणों पण मांसाहारी ज छे. आपना मित्रने जाणीने आश्चर्य थशे के वेदोमां दरेक यज्ञ पहेला गायना वाछरडाने कापीने तेनु मांस आरोगवानु लख्युं छे. दरेक स्मृतिमां कई जातनुं मांस कया वखते खावुं अने न खावुं ए विषे खूब ज विगतवार बधुं आप्युं छे. विशेष करीने मनुस्मृतिमां तो कये समये कयुं मांस खावुं ते पर आखुं प्रकरण छे. वेदो अने स्मृतिओनो मारो ऊंडो अभ्यास छे. तेथी मने आ विषे बरोबर माहिती छे. मात्र गुजरातीमां जैनोनी असर वधारे होवाथी गुजरात वधु शाकाहारी प्रान्त छे। पण मानो के आ वधु खोटुं छे खराब छे. तो पण मांसाहारी लोको तो शरीर टकाववा एक जरुरियात मानीने मांस खाय छे, परन्तु जैनोनो आजे वर्षोंथी मुख्य धंधो रेशम अने मोतीनो छे. तेमां शुं हिंसा नथी थती ? रेशमना जीवता कीड़ाने (रेशमनो तार आखो तूट्या वगर नीकले माटे) उकाळवामां आवे छे. आ में जाते जोयुं छे अने जाणीती वात छे के, मोती काढवा माटे ढगला ने ढगला कालु माछलीओने जीवती मारी नांखवामां आवे छे. आ बन्नेमां शुं मूंगा जीवोनी हत्या नथी ? अने रेशम अने मोती बन्ने शोखनी-वैभवनी वस्तुओ छे. एना विना श्रीमंत स्त्रीओ खुशीथी चलावी शके छे। गरीबोनो तो आ बे वैभवनी वस्तुओ लेवानी शक्ति ज नथी होती। आपणे आपणु

रेशम परदेश निकास नथी करता ? आ गोमांस निकास करतां कई रीते वधु अहिंसक छे ? आ बन्ने व्यापार तो मुख्यत्वे जैनोना हाथमां छे.

"अने वांदरा निकास करे तेमां शुं खोटुं घणा वर्षो पहेलां श्री कनैयालाल मुनशीअे कह्यु हतु के 'भारतमां कां तो कूतरा, बिलाडा, बांदरा वगेरे प्राणीओने जीवाडो के कां तो मनुष्योंने जिवाडो। प्राणीओने मनुष्यो बन्ने माटे भारतमां अनाज नथी.' तो आ लाखो रुपियाना पाकने नुकसान करता, अनाज खाई जतां वांदरांनी निकास थाय तो ज भारतनी वधती जती वस्तीने अनाज पूरूं पडशे। नहीं तो पछी आपणे ज मारी नाखवा पडशे। वळी निकास थाय छे ते वांदरा पर परदेशमां वैज्ञानिको रोज मनुष्यना हित अर्थे ज प्रयोगो करे छे। आ प्रयोगो सफल थाय छे तेनो आपणे शुं पुरेपुरो लाभ नथी उठावता ? आपणो परम प्रिय पुत्र के युवान पति के पत्नी मांदी होय अने डाक्टर नवुं कोई इंजेक्शन आपीने सफलताथी ओपरेशन करे ते ज वखते हृदय बंध पडी जतुं होय तो ते काढी ने मसाज करीने पाछु मूकी दरदीने जीवनदान आपे के हृदयमां काणुं पडेलुं होय अेवा जन्मथी ज हृदयवाला बालकोने प्लास्टीकनी नली हृदयमां ओपरेशन करी मुकीने जिवाडे के सडी गयेली कीडनीनी जगाये सफलताथी बीजी कीडनी मुके तो आपणने परम आनंद नथी थतो ? आ बधा ज प्रयोगो वांदरां पर थाय छे अने जो वांदरां पर न थाय तो शस्त्रक्रिया आटली आगल वधे ज नहि अने आपणे पोते जीवनमां आटली नचिन्त सहीसलामती न ज अनुभवीअे आपणुं प्रियजन सफल शस्त्रक्रियाथी बचे अेम होय तो ते

वधारे महत्वनु' के अेक वानरनु' जीवन ? बन्ने तो न ज बनी शके, केमके मनुष्य पर आवा प्रयोगो थाय ज नहि, हमेश कोई वस्तुने जोता पहेला महत्वनी कई बावत छे अे जोवु' जोइये.

वत्सला महेता

३

काका कालेलकर

सौथी पहेलां भारत सरकारनी नीति शी होय, आपणे सरकार पासेथी केटली अपेक्षा राखी शकीअे अे विषे थोडो स्पष्टता करु' । केमके आपणा केटलाक जैन भाईओ अने गोरक्षाना अभिमानी सनातनीओ अवारनवार कोंग्रेस सामे अने कोंग्रेस सरकार सामे ठीक ठीक राव खाता जणाय छे ।

भारत सरकारे शु' करवु' जोइये अेनी सूचना करवा करतां गांधीजीमां माननार कोंग्रेस सरकार शु' नथी करती अेनी ज तकरार मोटे भागे वाचवामां आवे छे । अे बावत मां आपणे आपणा मन साथे अेटलु' नक्की करवु जोईए के भारत सरकार नथी हिन्दु सरकार अने नथी जैन सरकार। हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई, पारसी यहूदी, आस्तिक, नास्तिक वधाना परस्पर विश्वास अने सन्तोष उपर रचायेली अे सरकार छे। अेमांथी अेकेक धर्म वंश सम्प्रदाय के जातिने आपणे काढी मुकी शकवाना नथी, अने तरछोडी शकवाना पण नथी । एक वखते आ देशमां हिन्दुओनु ज राज हतु। ते आपणे टकावी न शक्या अे वस्तु आजे गौण गणीये, पण आपणा ज लोको मुसलमान थया, इसाई

थया, ॲंग्लो इन्डियनो पण आ देशना ज लोको छे ॲ आपणें भूली शकवाना नथी। आजना मुसलमानों अने इसाईओ पोतपोताना धर्म विषे एटला ज मक्कम छे जेटला हिन्दुओ पोताना धर्म विशे छे।

केवल बहुमतीने जोरे आपणे हिन्दु विचारों गैर हिन्दुओ पर लादी शकीए नहि तेम करवा आपने इच्छीए पण नहि। सतीनो प्रथा अने अस्पृश्यता-निवारण ए बे दोषो दूर करवा माटे आपने सरकारनो मदद लीधी हती एटले के बधो कोमोने आपने पोतानो अभिप्राय आपवानी छूट आपी। बधीं कोमोनी आपने मदद लीधी ए खरूं छे। आपणे ए बन्ने सवालो मानवताना सवालो गण्या अने ए वात बराबर हती।

हिंदु समाजमां बहुपत्नीनी प्रथा हती, छतां आपणे श्रीरामचन्द्रना एक पत्नी व्रतने ज आदर्श मान्यो। तेथी अने पश्चिमनी असर तले आवीने आपणे तमाम हिंदु जाती माटे ॲकपत्नीव्रतनो नियम कर्यो। (अत्यारे मने याद नथी के केटलीक आदिवासी हिंदु जमातोनो आमां आपणे अपवाद कर्यो छे के नहि। हुं मानु छुं के अपवाद करवामां ज डहापण छे।)

अने हिमालयमां केटलीक जातिओ छे जे मान्यता अने रिवाज प्रमाणे हिंदु छे अने छतां एमनामां आजे पण द्रौपदीधर्म प्रवर्ते छे। येटले के बे चार भाइयो वच्चे एक ज पत्नी होय छे। ये लोको धीमे-धीमे ये रिवाज़ प्रत्ये अनगमो केळववा लाग्या छे अने कायदानी आर भोकया वगर तेओ बहुपतिनी प्रथा थोड़ा ज दिवसोमां छोडी देशे।

मुसलमानोमां एक साथे चार सुधी पत्नीओ राखवानी छूट छे। आपणे एमने आपणी तेम ज पश्चिमनी एकपत्नी-प्रथा नीचे आणवा मागता नथी। अेक पत्नी प्रथा आखा देशनो सार्वभौम कानून छे माटे तमारे ए मानवो जोइए एम अमुक संयोगोमां आपणे कही शकत। पण तेम करता नथी एमां ज डाहपण छे एमां ज भारतीय संस्कृतिनी सर्वसमन्वयकारी उदारता छे। जेनुं अनुकरण कोक दिवस आखी दुनिया करशे ज।

हवे पशुहत्या अने मांसाहार विषे विचारीए।

हिंदु समाजमां बहु ज थोडा लोको छे जेमने मांसाहार सामे वांधो होय। बङ्गाळ, पंजाब आदि उत्तर भारतना प्रदेशोमां ब्राह्मणो पण मांस खाय छे। क्षत्रीयोने अने शुद्रोने छूट छे ज। वैश्योमां पण शाकाहारनो सार्वत्रिक नियम नथी पश्चिम अने दक्षिण तरफना ब्रह्मणो मोटे भागे अन्नाहारी छे। (निरामिषाहारी एवो लांबो शब्द टाळीने एज मात्र व्यक्त करवा माटे गांधीजीए अन्नाहारी शब्द चलाव्यो छे ए चालशे के नहि ए जोवानुं छे।)

एटले, मांसाहारना त्याग विषे हिंदुओनी पण बहुमती मळवानी नथी। अने हिंदुस्तानमां तो आपणी प्रजा बहुधर्मी छे। आहार माटे पशुओने पालवानो अने मारवानो रिवाज आपणे गमे तेटलो घातकी गणीये, दुनियामां बधे फेलायेलो छे। पशुहत्या कानूनद्वारा टालवानो प्रयत्न करीए तो मानव समाजनो नैतिक टेको आपणे मलवानो नथी। हिंदुस्ताननी प्रजानी बहुमती पण आपणने मलवानी नथी। अने मले तोये ए वापरवामां डहापण नथी। सलामती नथी।

कारुण्यनो प्रसार करवामां आपणने कोई रोकतुं नथी

पण जेमनी वच्चे कारुण्यनी भावना आपणे फेलाववा मागीए छीए तेमना प्रत्ये द्वेष, तिरस्कार, तुच्छता अथवा हीनभाव आपणे केलवीए अथवा राखीए तो ते आपणा प्रचारने बाधक थशे अने कारुण्यनो द्रोह थशे ए वली वधारानो।

जे दिवसे परदेशी खांडनो बहिष्कार करी स्वदेशी खांडनु व्रत में लीधु ते दिवसे ज राजद्वारी दुरदेशी तरीके में निश्चय कर्यो के परदेशी खांड खानाराओने हु वगोवीश नहि।

कारुण्यनो प्रचार कायदा मारफते करवो ये तो कारुण्यनु स्वरूप अने कायदानी मर्यादा न समजवा बराबर छे ए बाटे आपणने निष्फलता ज मलवानी छे अने कारुण्यनु वातावरण वणसी जवानु छे।

"बुद्ध, महावीर अने गांधीना देशमां आवु केम चाले" एम कही आपणे आपणो उद्वेग, आपणी अकलामण अथवा आपणो पुण्यप्रकोप जाहेर करीए छीए। एमां आपणे जाणीए छीए के गांधी जी गौरक्षा पण कानूनद्वारा करावबानी विरुद्ध हता। बुद्ध भगवान पासे राज्याधिकार हतो तेनो तेमने त्याग कर्यो। राजाओ एमना शिष्यो हता। एमना तरफथी थती हिंसा पण एमणे वखोड़ी नहि। पोताना वधा ज शिष्यो मांसाहारनो त्याग करे ए जातनो उपदेश पण अेमणे कर्यो नहि। मांसाहार उपर सरकार मारफ़ते अंकुश मूकवानी वात भगवान महावीरे कयांय करी होय तो ते हु जानतो नथी। अपणा देशमां वेदकालथी मांडीने आज सुधी पशुहत्या धमधोकार चालती आवी छे। कोक वखते वधारे कोक वखते ओछी, ए वस्तुनो इन्कार न करी शकीए। जवाहरलालजी कहे छे तेम मांसाहारनो त्याग ए उच्च संस्कृति छे एम

कोई दावो करे तो आपणे ए वस्तु मंजूर राखीए। वांधो जराय न उठावीए। पण मांसाहार अने एने माटेनी पशुहत्या-पनो विरोध तो न ज कराय। विवेक पूर्वक प्रचार करवानी छूट वधाने छे।

हवे आपणे आहारनी समस्या उपर आवीए।

हमणां ज तमे छापामां एक प्रख्यात नृवंशशास्त्रीनो अभिप्राय वांच्यो हशे। ए कहे छे के एटम बोम्बना जोखम करतां पण मानव .ग्राम थती वृद्धि ए वधारे जोखम अने संकट छे। माणसजात विज्ञानमां अने कौशल्यमां सुध-रती जाय छे। परिणामे भूखमरो ओछो थयो छे, अन्ननी उत्पत्ति वधी छे। असाध्य रोगो सुसाध्य थवा लाग्या छे। आरोग्यविघातक रहेणीमां सुधारो थयो छे। परिणामे मरण-प्रमाण काबूमां आव्युं छे, माणसनी आवरदा वधी छे अने लोकसंख्या पण वधावा लागी छे।

पाकिस्तानमां तेमज भारतमां ताजी वस्तीगणत्री प्रमाणे आपणी लोकसंख्या अत्यार सुधीनुं आपणु वृद्धिनुं प्रमाण वटावी गई छे। श्री विनोबानी दलील साची छे, के ज्यां अन्न खानार एक मोढुं वधे छे। त्यां कुदरती रीते परिश्रम करी अन्न उत्पादन करनार बे हाथ पेदा थाय छे पण दुर्भाग्ये वस्ती वधे ते प्रमाणमां देशनी जमीन वधती नथी। ज्यां खेती थती नथी त्यां खेती करवा मांडीए तो आजनुं संकट काल सुधी ठेली शकाय पण अवती कालनुं पण विचार कर्ये ज छूटको।

युरोपनो पुरुषार्थ वध्यो अने लोकसंख्या वधी त्यारे ए लोकोए उत्तर अमेरिका दक्षिण अमेरिका आफ्रिकाना अमुक भागो, आस्ट्रेलिया, न्यूझिलेंड अने प्रशान्त महासागर-ना द्विपो असंख्य कबजे करी पोतानी लोकसंख्यानो अमुक

भाग त्यां मोकल्यो। ए पुरुषार्थ आपणे न करी शक्या, हवे पछी ए थाय नहि.

संतति-नियमननो इलाज कोई वखोडे, कोई स्वीकारे। ए चर्चामां अहीं आपणे न उतरीए। पण संतति-नियमन ए घोर हिंसानो मार्ग छे एटलुं तो जैन दृष्टि सहेजे समजी जाय। 'मारे जीववुं छे अने काशी जवुं छे माटे मारा पाडोशीओ ने अने समकालीनोने आ दुनियामांथी रजा आपुं ए संकलपनी प्रवृत्तिने आपणे युद्ध कहीए छीए। ए हड हडती हिंसा छे। 'मारे जीववुं छे, मोज मजा करवी छे। जीवन धोरण नीचे आणवुं नथी माटे आवती पेढीने आ दुनिया मां आवती अटकाववुं आ पण युद्ध ज छे। फ़रक एटलो ज के प्रथम युद्धमां सामो पक्ष लडी शके छे ज्यारे संतति नियमनमां सामो पक्ष असहाय होय छे भ्रुण-हत्या अने संततिनियमन वच्चे नैतिक तफावत कोई बतावे तो एनी सामे दलील करवा हुं न बेसुं। एनी वात स्वीकारुं पण खरो, अने छतां संततिनियमन पाछळ अमुक जातनी हिंसावृत्ति एनी ना न पडाय। पण अत्यारे ए विषय आपणे अहीं छोडी दईए।

देशनी जमीन मर्यादित छे। मांसाहारी लोकोए जाणवुं जोइए के जे पशुपक्षी आदिनुं मांस तेओ खाय छे ते प्राणीओ ने पण जीववा माटे अने नभवा माटे जमीन जरूरी छे ज. तेथी वस्तुस्थिति ये रही के मनुष्य अने पशु-पक्षी जेने आधारे नभे छे ते जमीन मर्यादित होवाथी अने अनाजनुं उत्पादन वधारवानी आपणी शक्ति मर्यादित होवाथी केवल अन्न आहार पर आजनी प्रजा नभि न शके। पछेडी जोइ सोड ताणवानो नियम स्वीकारीए तो दर वरसे सरकारे जाहेर

करवु रह्युं के आ वरसे अथवा आवते वरसे कंदमूळ, फल अनाज अने तेलनां बियां वधु मळीने आटलो खोराक आपणने उपलब्ध छे। आमां दूध अने इंडानो पण हिसाव उमेरी शकाय अने पछी कही शकाय के आ हिसाव प्रमाणे आटली मनुष्यवस्तिने ज नभावी शकाय। पथी वधारे प्रजा उत्पन्न न थवी जोइए।

वस्तिनी वृद्धि अने अन्ननी उत्पत्तिनो मेल बेसाडवानी दृष्टिए ऊंडो विचार करनार केटलाक ऋषिओए कह्युं के जमीन उपर आधार न राखनार खोराक पण माणस पासे छे अने ते छे मत्स्यादि जलचरोनो। ए खेती खेडवानी पण मर्यादा छे एम पश्चिमना मांसाहार-तद्विदो कहे छे। पण आपणे त्यां समुद्रमांथी माछलां वीणवानी कला पूर्णत्व सुधी पहोंची नथी। एटला माटे ज्यां अनाज ओछुं मले छे त्यारे एनी मददमां मत्स्याहारनी सगवड वधारवी जोइए, एम बीजी सरकारोनी पेठे भारत सरकार पण विचारे तो एनो वांक केम कढाय ? मनुष्यवस्ती वधारनार आपणे संतति-नियमन विषेनो प्रचार सरकार करे तो आपणने ए गमतुं नथी। आ बाबतमां सरकार अत्यार सुधी आपणा लोकमत-थी कांईक बीती हती। हवे ए बीक ओछी थइ छे, केमके राष्ट्रीय सवालोनो उकेल लाववा माटे जरूरी रचनात्मक चिंतन आपणे करता नथी, अने दलीलो पुरवार करवा माटे प्रयोग पण करता नथी। शाकाहारनो प्रचार करनार कोइ रड्या खड्या पश्चिमना विद्वाननां वचनो टांकवां उपरांत आपणे बीजो कशो पुरुषार्थ कर्यो नथी।

दाखला तरीके समान कस अने संजोगोवाला एक एकरमां वधारे ने वधारे अनाज केटलुं पकवी शकाय, एवा

ज अेक एकरमां फळ अने बीज केटलां मेळवी शकाय तेज प्रमाणे एवाज पक अनुकूल एकर ऊपर पशु आदि प्राणीओ माटे घास आदि उगाडी पशुपालन द्वारा केटलुं मांस मेलवी शकाय एनो हिसाब प्रांतप्रांतमां वर्षो सुधी कर्या करीए अने पछी मांसाहार करतां धान्याहार वधु वस्तिने खिवाड़ी सके छे अने धान्याहार करतां सूका वा लीला मेवा अने मीज उपर वधु माणसो जीवी शके छ एम जो आपणे सिद्ध करी शकीए तो एने हुं रचनात्मक अहिंसा गणुं। जैनीओ जो आदिशामां पहेल करे तो एमनो अहिंसा धर्म सजीव थयो गणाशे।

नहि तोये आ जातनी तपास अने शोधखोल बधी ज कोमोए करवानी छे। केमके ए मानवमात्र आगलनो महत्त्वनो सवाल छ।

उपयुक्तता वादनो आश्रय लई वांदराओ उपर वैज्ञानिक प्रयोगो करीने अनेक रोगो उपर दवा शोधी कढवा ए विचारनो अने प्रवृत्तिनो बचाव हुं न ज करुं। कोई पण प्राणीने मारवानो आपणने अधिकार नथी। प्राणीहत्या धर्मनी दृष्टिए पाप छे, कुदरतनी दृष्टिए गुनो छे ए विषे मारा मनमां लगीरे शंका नथी। पण मारो विश्वास बीजा उपर हुं न लादी शकुं अने ज्यां अहारने अर्थे प्राचीन कालथी आज सुधी वधे लक्षावधि जानवरोनी हत्या आपणे दरगुजर करीए छीए त्य विज्ञानना विकास माटे अने रोगोना इलाज शोधी कढवा माटे वांदराओने मारवानी प्रथा सामे आपणे निश्चित मत शी रीते आपी शकीए? आत्मरक्षा माटे आक्रमणकारी प्राणीओने मारवा सामेनो आपणो प्रचार दुनिया आजे माने के न माने, सांभलवा माटे तैयार छे।

एटले सरकारने वगोव्या वगर अने कानूननो आश्रय
लीधा वगर प्रचार द्वारा अने शुद्ध आचरणद्वारा अहिंसानो
जेटलो विस्तार करी शकाय एटलो आपणे जरुर करीए।
तेने माटे ज संस्थाओ स्थापी आपणे अहिंसक आहारनुं
अर्थशास्त्र, कृषिविज्ञान, शुद्ध आहारशास्त्र वगेरे दिशामां
प्रगति करवी जोईए। जेमनी वच्चे मांसाहार त्यागनो, पशु-
हत्यानिषेधनो अने जीव दयानो प्रचार करवा मागीए छीए
ते लोकोनो तिरस्कार न करतां एमनां हृदयो आपणे जीत-
वानां रह्यां।

एनी साथे आदर्श गौशाला केम चलावाय, अन्नोत्पत्ति
केम वधाराय अने गायादि पशुओनो मानस परनो बोजो
केम ओछो कराय एना प्रयोगो मोटा पाया पर-राष्ट्रीय
पाया पर-चलाववा जोइए।

अने जो युद्धरूपी हिंसा शोषणरूपी हिंसा अने विला-
सरूपी सूक्ष्म पण भयानक हिंसामांथी बची जवुं होय तो
आपणे संयम, सहयोग अने कौशल्यवृद्धिने जोर नवा समा-
जनी स्थापना करवी जोइए। आमां सरकारनी सीधी मदद
न ज होय। काम वध्या पछी सरकार पासेथी अनुदानो
मेलवी शकाय, पण आखो पुरुषार्थ धर्म सुधारकोए अने
समाज सुधारकोए पोतानी जवाबदारी पर चलववो जोइए।

आजनी दुनियामां कारुण्यनो प्रचार, माणस-माणसना
सम्बन्धो पूरतो ज करी शकीए तो घणुं थयुं। जीवसृष्टिनु
अद्वैत ज्यारे माणस—जातिने गले ऊतरशे त्यारे आगल
वधी शकाशे। पोतानी भावना उत्तेजित करी जाणे पुण्य-
प्रकोपनुं भूत पोताना पर सवार थयुं होय एवो डोल करी
घा मनने मनावी मोढेथी आकरां वेणो काढवां अने कोइने

कोइनी निन्दा करवी ए साचो उपाय नथी। धार्मिक विख-वाद तो उभा न ज कराय, अने गांधीजीनुं नाम पण आगल न कराय।

—o— काका कालेलकर

४

स्वामी सत्य भक्तजी

आपनो ता. २७—३ नो पत्र वखतसर मल्यो हतो, पण हुं बिहार तरफ गयो हतो, अने त्यांथी मांदो थइने आव्यो; हजी पण पूरो स्वस्थ नथी, तेथी विलम्बथी जवाब आपुं छुं अने ते पण कंइक टूंकाणथी।

१. 'करुणाविचार विरुद्ध उपयुक्ततावादनी अपेक्षाए 'करुणा-प्रधानता विरुद्ध उपयुक्तता प्रधानता' एम कहेवुं ठीक रहेशे; कारण के करुणाविचारमां उपयुक्तताने गौण तो कही शकाय, पण एने साव विसारी तो न ज शकाय ए ज रीते उपयुक्ततावादमां पण करुणाने विसारी न शकाय। गौण ज कही शकाय।

२. धर्माधर्मनो के कर्तव्याकर्तव्यनो निर्णय उपयोगिता प्रधान वनीने (मुख्यत्वे उपयोगिताने ध्यानमां राखीने) ज करवो वराबर छे। भावुकता (लागणीप्रधानपणा) ना आधारे जे निर्णयो करवामां आवे छे ते सुन्दर तो होय छे, पण शिव नथी होता; अर्थात् सरवाले ए कल्याणकारी नथी होता एटला माटे ज अंग्रेजीमां एक कहेवत प्रचलित थई गई छे के 'नरकनो मार्ग पण शुभ कामनाओथी छवायेलो पड्यो छे!" कारण के विवेक वगरनी शुभकामनाओथी जे कार्यो करवामां आवे छे ते छेवटे समाजना दुःखमां ज वधारो करे

छे। उपयोगितामां हरकत न आवे तेटले अंशे ज करुणा के भावनाने आश्रय आपी शकाय। वैदिक युगमां ज्यारे अहीं खेतीनो विकास नहोतो थयो, जंगली जानवरोनी बहुलता हती, खेतरोनुं संरक्षण करवानुं पण मुश्केल हतुं एवी स्थितिमां माणसे जो मांसभक्षण न कर्युं होत तो ए जीवी न शकत, वा तो संख्यानी दृष्टिए एनो विकास न थात (एटले के मानवज़ातनी संख्यामां वधारो थवा न पामत): आवी स्थितिमां मांसनी विरुद्ध करुणानां गीत गावानो कशो अर्थ न हतो। पछीथी भगवान पार्श्वनाथ, बुद्ध अने महाविरना युगमां जंगलो ओछा थयां, खेतरो वध्यां, जंगली जानवरो पण ओछां थई गयां, एवी स्थितिमां महावीर अने बुद्धना जेवा अहिंसावादी पयगम्बरो थया, अने एमनी वात (एमना अहिंसाना उपदेश) तरफ कान देवामां आव्या। आ रीते उपयोगिताने विसारीने के मानवोना संरक्षणने गौण करीने नरी भावुकताने आधारे कोई धर्मनी व्यवस्था टकी नथी सकती।

३. वैदिक युगमां मांसभक्षण थतुं हतुं माटे आ युगमां मांस- भक्षण करवुं निर्दोष छे एम न कही शकाय। वैदिक युगमां अन्न- उत्पादननी जेवी स्थिति हती एवी अत्यारे नथी। वळी त्यार करतां अत्यारे मानवसमाजे करुणा वगेरे संस्कारमां सारो एवो विकास कर्यो छे। तेथी वैदिक युगनी आण देवी ए बराबर नथी। ए युगमां मांसभक्षण ए उत्सर्गमार्ग (नियममार्ग) हतो अने अत्यारना युगमां ए अपवादमार्ग छे। ए युगमां मांसने अभक्ष्य कही शकाय एम न हतुं; आ युगमां एने अभक्ष्य कही शकाय एम छे। मानवताना विकासनी दृष्टिए आपणे एवी नवी दुनिया तरफ आगळ वधवुं छे के

जेमां कोई मांस नहीं खाय, अने अन्नना उत्पादन अने मानवसंख्या वच्चे एवो समन्वय थशे के जेथी मांसनी जरूर नहीं रहे पण ज्यां लगी आवी अन्नविषयक स्थिति ऊभी न थाय, त्यां सुधी वधायने माटे मांसभक्षणनो निषेध न करी शकाय। हा, वधारेमां वधारे संख्यामां माणसो मांस भक्षण करता बंध थाय, एटलुं ज कही शकाय।

४. वांदराओ द्वारा देशनी एटली बधी खाद्यसामग्रीनो नाश थई रह्यो छे के एने लीधे करोड़ो माणसोना भोजननो सवाल ऊभो थयो छे। एटला माटे मनुष्यने बचाववाने माटे एमने निर्मूल करवा बहु जरूरी छे। एवी परिस्थितिमां वांदरानी निकासनो विरोध न थवो जोइए. आ तो एक पंथ अने दो काज छे।

५. हजी देशनी अन्नविषयक स्थिति एवी नथी के जेथी माछलां वगेरेनो निषेध करी शकाय. बंगाल जेवा प्रदेशमां. घउं वगेरे पौष्टिक खोराक नहीं होवाने लीधे, विटामिन वगेरेनी दृष्टिए तेम ज खाद्यसामग्रीना परिणामनी दृष्टिए, माछलां जरूरी थई पडे छे। आ स्थितिमां आपणे सुधारो करवो जोइए। अने दरेक जग्याये एटलां पौष्टिक अन्न सुलभ करवां जोइए के माछलां वगेरेनी जरूर न रहे।

६. मोतीने माटे जे हिंसा करवामां आवे छे। ते खरी रीते बिनजरूरी छे, पाप छे। पण रेशमनी बाबतमां एम कही शकाय एम नथी; केम के देशमां कपासनी पण तंगी छे। तेथी रेशम मारफत एनी जेटली पूर्ति थाय एटलीनुं स्वागत करवुं घटे छे।

७. दुनियामांथी हिंसाने पूरेपूरी निर्मूल न करी शकाय. कुदरती रचना ज कंईक एवी छे के एमां 'जीवो जीवस्य

जीवनम्' (एक जीव बीजा जीवना आधारे के भोगे ज जीवी शके छे.) ए सिद्धांत काम करे छे। आम छतां मानवता कुदरती गुलामीने स्वीकारवामां नहीं पण एनी खामीने दूर करवामां छे तेथी हिंसाने ओछी करवी जोईए। हिंसा-अहिंसाना द्वंद्वनो विचार करती वेळाए प्राणीओनी चैतन्यमात्रानो विचार करवो जरूरी छे। वनस्पतिनी (एटले के एकेन्द्रिय जीवनी) अपेक्षाए त्रसनी (एकथी वधु इन्द्रियवाला जीवोनी अने त्रसोमां पंचेन्द्रियनी अने बधायथी वधारे मनुष्यनी रक्षाने पहेलुं स्थान आपवुं जोइए।

(आ संबंधी खूब विस्तृत अने विगतवार विवेचन में 'सत्यामृत'मां कर्युं छे;)

८. कर्तव्याकर्तव्यन निर्णयनी व्यवस्था उपयोगिताने मुख्य मानीने करवी जोइए। हा, ए व्यवस्थाना पालनमां भावुकता पण सहायक थाय छे, तेथी एनो पण उपयोग करवो जोइए। पण ए वातनुं ध्यान राखवुं जोईए के भावुकता अव्यवहारु न बनी जाय, के खोटा दाखला पेदा करवा न लागे।

— ० —

५

दलसुख मालवणिया

'प्रबुद्ध जीवन'मां मांसनो विशेष प्रचार अंगे श्री परमानंदभाईए 'बुभुक्षितः किं न करोति पाप' ए लेख लख्यो. तेनो समग्र भावे सूर ए छे के सरकारने कहेवानो कशो अर्थ नथी, पण लोकोमां करुणावृत्तिने जागृत प्रयत्न करीए तो कांइक थाय खरुं। अने तेमणे ए पण स्वीकार्युं छे के आवी विषम परिस्थितिमां ज्यां सुधी करुणा जागृत थाय नहि त्यां सुधी सरकारनी पण फरज छे के तेणे मांस माटेनी पूरी अद्यतन साधनोनी सगवड करवी आवश्यक छे,

अने वली मांसनिरोधमां कायदो कांई करी शके नहि. वली तेमणे ए पण जणाव्युं छे के आपणा देशमां मोटो भाग मांसाहारी छे. हवे आ विधानो विषे विचार करिये।

आपणी सरकार लोकसत्तात्मक छे अने लोकोए ज बुद्धिमान माणसोने-जेओ चूंटनारनी दृष्टिमां लोकहित वधारे समजे छे अने करसे-राज्यसत्ता सोंपी छे। तो आपणो ए अबाध हक्क छे ज के आपणने जे उचित लागतुं होय ते विषे तेमने वारंवार कहीए अने जो ते विषे तेओ बेदरकार रहे तो फरी तेवा नकामा माणसोने चूंटाए पण नहि। एटले मने तो लागे छे के लोको करतां सरकारने कहेवाथी जे काम वहु सरलताथी पते तेवुं छे तेने लोकोने कहेवा करतां सरकारने ज कहेवुं जोईए। जवाहरलालजीए गायना मांसने परदेश मोकलवानुं बंधकर्युं हतु ते कांई करुणा-वृत्तिथी नहि के गाय तरफ तेमनी विशेष भक्ति उभराई आवी हती तेथी नहि, पण भारतना लोकमानसने ओलखीने अने ते पण ते काले थता उग्र विरोधने जोईने। ए विरोध जरा ढीलो पड्यो अने सरकार स्थिर थई एटले प्रजाने जाण कर्या विना पाछु ए गोमांस परदेश जवुं शरू थयुं होय तेमां आपणा जेवानी मनोवृत्तिए ज वल आप्युं छे। सरकार तो विषम परिस्थितिमां जे फावे ते करी शके छे। आ मनोवृत्ति खास करीने जेओ गांधीजीनी अहिंसामां अने करुणावृत्तिमां माने छे तेमणे त्यागवी ज जोईशे अने सदैव सरकारने जागृत करवी ज जोईशे। अन्यथा आजे तो हजी गांधीजीना सीधा वारसो छे त्यारे तेमने गांधीना नामनो शरम छे, पण जो बीजा कोई राज्यकर्ता थशे तो तेमने कशोज एवी शरम नडवानी नथी। ए स्थितिमां पछी करुणावृत्ति अने अहिंसाने शो अवकाश रहेशे ? एटले आ

बाबतमां सरकारने काने सतत विरोधी सूरो प्रबलपणे अथडावा ज जोईए । तो ज तेनी जागृति टकीर हेशे। अन्यथा सरकारमां आ बाबतामां ढीलुं वलण रहे ते स्वाभाविक छे।

अहिंसा नो विकाश मानवमनमां केवल करुणावृत्तिथी थाय छे । एम पण नथी, पण कायदाथी पण थाय छे। गुजरातमां जे अहिंसानो विकाश देखाय छे तेने केवल करुणावृत्ति ज नहि कही सकाय । तेमां मध्यकालीन राजसत्ताए घणो मोटो भाग भजव्यो छे । राजाकुमारपाल जेवाए ज्यारे अमारीघोष कर्या हशे, अगर मुगल बादशाहो अकबर, जहांगीर जेवाए अमुक तिथिमां हिंसानिषेधनां फरमानो काढ्यां हशे त्यारे तेने शुं बधी प्रजाए राजी थईने वधावी लीधा हशे ? एवुं कशुं ज मानवाने कारण नथी। पण ते घोषनी पाछल दण्डशक्तिने कारणे एक बार हिंसा बन्ध थई अने त्यार पछी क्रमे करी करुणावृत्तिना जागरणथी गुजरातनां लोकोमां अहिंसावृत्ति दृढ थई। ते ज प्रमाणे प्राचीन कालमां अशोक विषे पण कही शकाय । तेणे धर्मशासनोमां मांसहारा लोको क्रमे क्रमे छोडे ते आदेश आप्यो छे अने पोते पण ओछो कर्यो छे एवी सूचना छे। तेमां तेना एटले के एक राजाना शासननी महत्ता ने कारणे जे मांसाहार ओछो थयो हशे ते शुं मात्र राज्यसत्ता विनाना पुरुषना उपदेशथी थाय एम ? आपणो प्रत्यक्ष अनुभव छे के गांधीजीए अस्पृश्यतानिवारण माटे भरखम प्रयत्न कर्यो छतां ज्यारे कायदो तेनी सहायमां आव्यो त्यारे अस्पृश्यतानिवारणने जे गति मली छे ते मात्र उपदेशथी मली थी । बीजां बधां परिबलो कायदाने सहायक बने पण कायदोनी शक्ति ए आम जनता माटे सौथी चडियाती छे अने प्रजामां जे वस्तुने स्थिर करवी होय तेमां उपदेश

करतां कायदो ज बलवान बने छे । सामाजिक सुधाराओ विषे पण कायदाथी जे थयु छे ते शु साधारण जनताना मतने आधारे थयु छे के अमुक प्रभावशाली पुरुषोनी दृढ प्रतीतिने कादानु रूप मल्ये थयु छे एटले वस्तुतः आपणने जो एम लागतु होय के करूणावृत्ति ए जीवनमां एक आवश्यक वृत्ति होवी जोईए तो पछी तदनुरूप कायदा घडावा प्रयत्न करवो ज जोईए अने सरकार मांसहारनी प्रवृत्ति ने उत्तेजन न आपे ते जोवु ज जोइए । अने आपती होय तो लोकोनां हृदयपरिवर्तननी राह जोया ना ज सरकार समक्ष विरोधना सूरो वहेता मूकवा ज जोईए ।

सरकारनी ए फ़रज तो जरूर छे के जे मांसाहार करता होय तेमना आरोग्यने नुकसान थाय एवु मांस तेमने न मळे अने ते माटे ते नियमन करे पण जो आपणे एटले के भारत अहिंसाने मार्गे आगेकूच, भले पछी ते धीमी होय पण ए ज मार्गे आगळ वधवानु होय अने नहि के हिंसाने मार्गे, तो पछी एवु तो कशु ज सरकारे न करवु जोइए, जेनु अंतिम परिणाम हिंसाना ज विकासमां परिणमे । आथी मांसाहारीओना आरोग्यना रक्षण निमित्ते जे करवु होय तेमां वांधो न होय । पण तेमना ते आहारने उत्तेजन मळे तेवु तो कशु ज करवु न ज जोईए । अहिंसाना मार्गमां मनुष्य मांसाहार छोड़े ए पण एक सोपान छे ज । तो पछी मांसनो व्यापार अने ते द्वारा कमाणी करी देशने समृद्ध करवानी वात अहिंसानो मार्गो जता देशे छोडवीज जोईए । देश समृद्ध थाय ए आवश्यक छे, पण तेथी पण वधारे आवश्यक देश संस्कारी थाय ए छे। समृद्धि लाववी सहेली छे पण संस्कार लाववा सहेला नथी । अने आ देशमां मांस न

खावाना संस्कारनो, अने ते सारो संस्कार छे, तो तेनो नाश करी आपणे समृद्धि प्राप्त करवी ए वस्तुतः देशने बरबाद करवा जेवुं ज थशे। संस्कारने लोपीने प्राप्त करेल समृद्धि समग्र प्रजाजीवनने ज भरखी लेशे ए कहेवानी आग्येज जरूर होय।

हुं ज्यारे कायदानुं समर्थन करुं छुं त्यारे में एक सिद्धान्तनी ज वात करी छे, पण तेनो एवो अर्थ तो नथी ज के सरकार एकदम कायदो करीने मांसाहार बंध करे; पण ए अर्थ तो जरूर छे के सरकार अत्यारे मांसाहारने समर्थन न आपे अने मांसाहारनी विशेष सगवडो ऊभी न करे एवो कायदो पण जरूर करी शके, जेथी परदेशमां मांसनी निकास बंध थाय। एवो कायदो पण जरूर करी शके अने कर्यो पण छे के दूधाळु जानवरनी कतल न थाय, अने क्रमे करी मांसभोजन माटे कोई पण जानवरनी कतल न थाय, एवो कायदो पण करीशके। पण आ बंधुं तो ज थाय जो आपणा देश-नी निष्ठा अहिंसामां छे अने हिंसामां नथी एवुं प्रथम नक्की थाय। ए नक्की थये ज क्रमे करी जीवनना प्रत्येक क्षेत्रमांथी हिंसानी शक्य एवी नाबूदी करवा प्रयत्न थाय। ए निष्ठाज जो न होय अने हिंसा तरफ ज देशे प्रयाण करवुं होय तो तो पछी अहिंसानी अने शांतिनी वातो आ देशे करवी छोडी देवी जोईए।

श्री परमानन्दभाई अने श्रीमती वत्सलाबहेन महेता बने एम सामान्यपणे माने छे के, भारतमां मांसाहारी वर्ग मोटो छे अने वत्सलाबहेन तो विशेषमां केटलाक आखा प्रांतना प्रांतोने मांसाहारी माने छे। आनो अर्थ जो एम होय के भारतमां निरामिषाहारी करतां मांसाहारी वधारे छे तो ते

एक मोटो भ्रम छे। यू. पी., बिहार, बंगाल वगेरेमां ब्राह्मणो पण मांस खाय छे ए साचुं छे, पण तेनो अर्थ एवो नथी के बधा ब्राह्मणो खाय छे। मात्र शैव अने तन्त्रमार्गी अने तेमां पण गण्या-गांठ्या ब्राह्मणो खाय छे अने वैष्णव ब्राह्मणो तो तेनो स्पर्श पण करता नथी, अने बंगाल वगेरेमां शैव करतां वैष्णवो वधारे छे ए कहेवानी भाग्ये ज जरूर छे। वळी आ देशमां गरीबी एवी छे के वधारे वर्गने मांस पोसातुं पण नथी अने ते कारणे पण मांसाहारी वर्ग मोटो छे ज नहि, कारण गरीब वर्ग ज भारतमां मोटो छे। गरीबीने कारणे पण जेमणे मांस छोडयुं छे तेमनामां पण ते प्रत्येनी घृणा सहज छे। हवे ते घृणाने निवारी तेमने मांस प्रत्ये प्रेरवा तेमां देशनी शी भलाई छे ?

श्री परमानन्दभाईना लेखना अनुसंधानमां श्रीमती वत्सलावहेने जे लख्युं छे तेना केटलाक चर्चास्पद मुद्दा आ छेः- (१) वेदस्मृतिमां मांसनुं समर्थन छे; (२) मांसाशी लोको शरीर टकाववानी जरूरियात मानी खाय छे, पण जैनो रेशम-मोतीनो हिंसक धंधो शा माटे करे छे ? ए कांई जरूरियात नथी। रेशमनी निकास करनारा जैनो मांसना निकासनो विरोध केम करे छे ? बन्नेमां सरखी हिंसा केम नहि ? (३) वांदरानी निकासमां खोटुं शुं छे ? ते आपणने जे नुकसान करे छे ते ओछुं करशे अने वळी तेमना ऊपर प्रयोग थवाथी मानवीना आरोग्यनुं रक्षण थाय छे-तो आपणो प्रियजन बचे ए आपणने इष्ट के वांदरो ? वांदरा करतां मनुष्यनुं जीवन कीमती छे तो तेज बचाववुं जोईए।

(१) ए साचुं छे के वेद-स्मृति वगेरेमां मांसाशननां विधानो छे, परन्तु वत्सलावहेन ए भूली जाय छे के आजनुं आपणुं जीवन एटले के कट्टर ब्राह्मणनुं जीवन पण वेद-

स्मृतिने अधारे नथी चालतुं, पण धार्मिक निबंधो जे स्मृतियोनी व्याख्यारूप बन्या छे तेने आधारे चाले छे अने तेथी ज कालवर्ज्य गणीने यज्ञनी हिंसा अने मांसाशन चुस्त ब्राह्मणोमां नाबूद थयुं छे। पाका सनातनी गणाता करपात्रीमहाराज यज्ञसंस्थानो पुनरुद्धार करवा मागे छे ए जाणीती वात छे। तेओ पण एकवार पूनाना हिंसक पशुयज्ञ जोइ ने आंचको अनुभवी पाछा फर्या। अने आ रीते तेओ पण यज्ञमां हिंसाना समर्थक नथी अने अहिंसक यज्ञो करवानुं समर्थन करे छे अने मांसाशननो पण विरोध करे छे। आवधुं वेद पछीना जमानामां भारतमां अहिंसानो संस्कार जे विकस्यो तेनुं फळ छे। एटले मांसाशनना समर्थनमां ए जूनी पुराणी स्मृतिओ टांकवी ए निरर्थक छे अने आपणे करेला विकासना कांटाने पाछो फेरववा जेवुं छे। स्वयं वेद-ब्राह्मणकाळमां ते ज शास्त्रोमां हिंसा विरुद्ध अहिंसानुं जे समर्थन थयुं छे अने उत्तरोत्तर ते वैदिक वाङ्मयमां अहिंसाविचारधारानो केवो विकास थयो छे एनो इतिहास वत्सलाबहेन तेना अभ्यासी होवानो दावो करे छे, ते न जाणे एम तो बने नहिं, पण प्रस्तुतमां हिंसानुं समर्थन करतां ते भूली जाय छे एम ज कहेवुं पडे। तेओ तो ए शास्त्रना अभ्यासी छे, पण बीजाओ "Morals in Brahmanas" ए नामनो डा. कर्णिकनो लेख जे मुम्बई युनिवर्सिटीना जर्नलना सप्टेम्बर १९५८ (आर्ट नं. ३२) मां प्रकाशित थयो छे ते वांचशे तो जणाशे के ए काळे पण अहिंसानो केटला प्रमाणमां विकास हतो। अने त्यार पछी तो अशोक अने कुमारपाळ जेवा राजाए तेना प्रचारमां जे कर्युं ते जाणितुं ज छे। एज रीते आधुनिक युगना प्रबळ वेदसमर्थक अने यज्ञसमर्थक ब्राह्मण संन्यासी दयानन्द स्वामीए हिंसाविरोधमां जे प्रचार कर्यो छे ते

जाणितो छे। आवी स्थितिमां अहिंसाने मार्गे जे सिद्धि आपणे प्राप्त करी छे ते जो त्यागवा जेवी न होय तो अने नथी ज, तो पछी वेदना-स्मृतिना मांसाशनना समर्थनने आ टाणे याद करवानो कशो अर्थ नथी।

(२) मांसाशी लोको जरूरियात मानी मांस खाता होय एटला उपरथी तेनी जरूरियात तेमना पूरती गणाय। पण आपणो देश समग्रभावे जोतां निरामिषाहारना वलणवाळो छे, तो तेणे पोताना ए वलणने पुष्टि मळे ए मार्गो अपनाववा जोईए अने नहि के जे संस्कारोनुं पोषण ते पेढीओथी करतो आव्यो छे तेने तिलांजली आपवानुं वलण स्वीकारवुं जोईए। धन्धार्थी मांस वेचे ए प्रश्नने अने देश मांसनो वेपार अपनावे ए प्रश्नने एक त्राजवे तोळाय नहिः एम तो माणस भूखनो मार्यो—वेकारीनो मार्यो चोरी करे, आपघात करे— आवां आवां अनेक कुकर्मो करे; पण तेथी कांइ समग्र देशे चोरीनुं अगर अपघातनुं वलण स्वीकारवुं जोईए एवुं नथी: पण लोको चोरी न करे आपघात न करे एवुं अर्थतन्त्र के कायदातन्त्र गोठववुं ए देशनुं काम छे। आथी ज मनुस्मृतिमां कहेवायुं छे के "प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला" तेम जो देशे अहिंसाने मार्गे आगळ वधवानुं स्वीकार्युं होय तो तेणे मांसनो वेपार तो न ज करवो जोईए ए दीवा जेवी वात छे। अर्थतन्त्र के विकास—योजनातंत्र एवुं गोठववुं जोईए के जेथी देशना सारा संस्कारो टकी रहे अने लोको सन्मार्गे टकी रहे एवी व्यवस्था उभी करवी जोईए, अने नहि के गमे ते मार्गे देशमां आवकनां साधनो उभां करवां जोईए। जो एम ज होय तो पछी आपणा देशे वैज्ञानिको द्वारा अणुबांब ज उत्पन्न करीने आपणा आसपासना देशोमां

स्मृतिने अधारे नथी चालतुं, पण धार्मिक निबंधो जे स्मृतियोनी व्याख्यारूप बन्या छे तेने आधारे चाले छे अने तेथी ज कालवर्ज्य गणीने यज्ञनी हिंसा अने मांसाशन चुस्त ब्राह्मणोमां नाबूद थयुं छे । पाका सनातनी गणाता करपात्री महाराज यज्ञसंस्थानो पुनरुद्धार करवा मागे छे ए जाणीती वात छे । तेओ पण एकवार पूनाना हिंसक पशुयज्ञ जोई ने आंचको अनुभवी पाछा फर्या । अने आ रीते तेओ पण यज्ञमां हिंसाना समर्थक नथी अने अहिंसक यज्ञो करवानुं समर्थन करे छे अने मांसाशननो पण विरोध करे छे । आवधुं वेद पछीना जमानामां भारतमां अहिंसानो संस्कार जे विकस्यो तेनुं फळ छे । एटले मांसाशनना समर्थनमां ए जूनी पुराणी स्मृतिओ टांकवी ए निरर्थक छे अने आपणे करेला विकासना कांटाने पाछो फेरववा जेवुं छे । स्वयं वेद-ब्राह्मणकाळमां ते ज शास्त्रोमां हिंसा विरुद्ध अहिंसानुं जे समर्थन थयुं छे अने उत्तरोत्तर ते वैदिक वाङ्मयमां अहिंसाविचारधारानो केवो विकास थयो छे एनो इतिहास वत्सलाबहेन तेना अभ्यासी होवानो दावो करे छे, ते न जाणे एम तो बने नहिं, पण प्रस्तुतमां हिंसानुं समर्थन करतां ते भूली जाय छे एम ज कहेवुं पड़े । तेओ तो ए शास्त्रना अभ्यासी छे, पण बीजाओ "Morals in Brahmanas" ए नामनो डा. कर्णिकनो लेख जे मुम्बई युनिवर्सिटीना जनलना सप्टेम्बर १९५८ (आर्ट नं. ३३) मां प्रकाशित थयो छे ते वांचशे तो जणाशे के ए काळे पण अहिंसानो केटला प्रमाणमां विकास हतो । अने त्यार पछी तो अशोक अने कुमारपाळ जेवा राजाए तेना प्रचारमां जे कर्युं ते जाणितुं ज छे। एज रीते आधुनिक युगना प्रबळ वेदसमर्थक अने यज्ञसमर्थक ब्राह्मण संन्यासी दयानन्द स्वामीए हिंसाविरोधमां जे प्रचार कर्यो छे ते

जाणितो छे। आवी स्थितिमां अहिंसाने मार्गे जे सिद्धि आपणे प्राप्त करी छे ते जो त्यागवा जेवी न होय तो अने नथी ज, तो पछी वेदना–स्मृतिना मांसाशनना समर्थनने आ टाणे याद करवानो कशो अर्थ नथी।

(२) मांसाशी लोको जरूरियात मानी मांस खाता होय एटला उपरथी तेनी जरूरियात तेमना पूरती गणाय। पण आपणो देश समग्रभावे जोतां निरामिषाहारना वलणवाळो छे, तो तेणे पोताना ए वलणने पुष्टि मळे ए मार्गो अपनाववा जोईए अने नहि के जे संस्कारोनुं पोषण ते पेढीओथी करतो आव्यो छे तेने तिलांजली आपवानुं वलण स्वीकारवुं जोईए। धन्धार्थी मांस वेचे ए प्रश्नने अने देश मांसनो वेपार अपनावे ए प्रश्नने एक त्राजवे तोळाय नहि: एम तो माणस भूखनो मार्यो–वेकारीनो मार्यो चोरी करे, आपघात करे— आवां आवां अनेक कुकर्मो करे; पण तेथी कांइ समग्र देशे चोरीनुं अगर अपघातनुं वलण स्वीकारवुं जोईए एवुं नथी पण लोको चोरी न करे आपघात न करे एवुं अर्थतन्त्र के कायदातन्त्र गोठववुं ए देशनुं काम छे। आथी ज मनुस्मृतिमां कहेवायुं छे के "प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला" तेम जो देशे अहिंसाने मार्गे आगळ वधवानुं स्वीकार्युं होय तो तेणे मांसनो वेपार तो न ज करवो जोईए ए दीवा जेवी वात छे। अर्थतन्त्र के विकास—योजनातंत्र एवुं गोठववुं जोईए के जेथी देशना सारा संस्कारो टकी रहे अने लोको सन्मार्गे टकी रहे एवी व्यवस्था उभी करवी जोईए, अने नहि के गमे ते मार्गे देशमां आवकनां साधनो उभां करवां जोईए। जो एम ज होय तो पछी आपणा देशे वैज्ञानिको द्वारा अणुबांब ज उत्पन्न करीने आपणा आसपासना देशोमां

वेचवा जोईए; शा माटे शांति माटेना अणुसंशोधनने महत्व आपवुं ? आपणे तो पैसानी ज जरूर छे ने ? शांति के अहिंसानी शी जरूर छे ? तात्पर्य एज के शक्ति करतां शांतिने मार्गे ज अणुशक्तिनो उपयोग स्वीकारीए छीए तो पछी मांसनो व्यापार करी देशनुं शुं हित थवानुं छे ए पण विचारवुं जोईए ।

जैनो रेशम के मोतीनो व्यापार करे छे तो तेमां केम वांधो नथी उठावता अने मांसना वेपारमां वांधो शा माटे उठावो छो अेवो प्रश्न पण वत्सलाबहेननो छे । बधा जैनो कांई सरखा नथी । मात्र जन्मे नहि पण संस्कारे पण जे खरा जैनो छे तेओ तो एनो विरोध करे ज छे अने एवा दाखला पण आपी शकाय तेम छे ज्यारे मोतीनी उत्पत्ति कई रीते थाय छे ते जाणवामां आव्युं त्यारे लाखो रुपियानो नफो छोडी देईअे वेपार बन्ध करनाराओ आ जैन कोममां नथी पाक्या एम नथी । अज्ञानने के स्वार्थने कारणे मांणस जे काम करे तेनुं समर्थन न करी शकाय । पोताने अहिंसक कहेवरावता छतां जे जैनो रेशम के मोतीनो वेपार करता होय ते खरेखर अज्ञानी के स्वार्थी छे पण तेथी तेवानुं दृष्टांत आपीने आपने मांसना वेपारनुं समर्थन न करी शकीए ए कहेवानी जरूर ज नथी । अने जैनोमां रेशम अने तेवी हिंसक चीजोनो व्यापार तो शुं पण वापर पण बन्ध करवानां आंदोलनो आधुनिक काले थयां छे तेनी वत्सलाबहेनने कदाच खबर नथी । वत्सलाबहेननी पोतानी दलील छे वांदरां करतां मनुष्यनुं महत्व वधारे छे, ए ज न्याये कोई तेमने एम पण कही शके के गायनुं मांस अने माछलीना मोतीमां के रेशमना उत्पादनमां थती हिंसा सरखी नथी । एटले जैनो मांसाशननो विरोध करे छे तेटला बळथी रेशम के मोतीनो नथी विरोध करता तो तेमां वत्सला-

वहेननी दृष्टिए कांई अनुचित न ज गणावु जोईए। आ तो एक दलील खातर दलील छे। पण वस्तुस्थिति तो ए छे के जैनोना आचार्योए अने सांख्य तेम ज शांतिदेव जेवा बौद्ध आचार्योए अहिंसानो विचार घणी ज सूक्ष्मताथी कर्यो छे अने तेमां तेमणे गृहस्थने निरवद्य धन्धो स्वीकारवा खास भलामणो करी छे अने हिंसक धंधाना निषेध उपर भार आप्यो छे। एटले ए साचु ज छे के जैनो मोतीनो व्यापार करे ते अनुचित ज गणावु जोईए। पण तेमना एक दूषणने कारणे तेओ बीजु दूषण पण स्वीकारे एम वत्सलावहेननी दलील उपरथी भास थाय छे ते विषे तो तेमणे पुनर्विचार करवो ज जोईए। जैनो रेशमनो वेपार करता होय के वापरता होय छतां मांसाशननो विरोध शा माटे न करे? एक दूषण छे एटले बीजाने पण लाववु? के जे छे तेने निवारवा प्रयत्न करवो? हु तो एम ज कहीश के जैनो रेशमनो वेपार करता होय तो ते छोडी दे तो सारु ज छे, पण जो छोडी न ज शके तो तेमणे मांसाशननु समर्थन पण ते कारणे करवु जोईए—ए आवश्यक नथी। एम करवामां तो दूषणोनी परम्परा ज जीवनमां दाखल करवी पडशे अने दूषणना निवारणने अवकाश ज नहि रहे। एटले नवा दूषणने दाखल थवा न देवानो प्रयत्न जैनो अने बीजा करता होय तो तेमां तेओ खोटु शु करे छे? दूषण तरफ घृणाभाव थये तेओ क्रमे करी रेशम के मोती पण छोडशे ज।

(३) वांदरा परदेश मोकलवानु अने तेना उपर मनुष्यहितार्थे प्रयोग करवानु समर्थन पण वत्सलावहेने कर्यु छे। आ प्रश्न गम्भीर विचारणा मागे छे अने विस्तारथी चर्चवा जेवो छे, पण अत्यारे तो बे चार वात कहेवी ज योग्य छे। प्रथम तो ए के आपणा देशनी वैद्यक परंपरानो इतिहास तपासतां एम

जणाय छे के प्राचीन ग्रन्थोमां मांस द्वारा चिकित्सा अत्यन्त प्रचलित हतो। पण कालक्रमे भारतीय जीवनमां जेम जेम अहिंसानो सूक्ष्म-सूक्ष्मतर-सूक्ष्मतम विचार थतो गयो अने जीवनमां ए अहिंसाना विचारने उतारनारा महापुरुषो पाकता गया तेम समाज अने व्यक्तिना जीवनमांथी विविध क्षेत्रे जे हिंसा प्रवर्तमान हती ते क्रमे करी ओछी थती गई छे अने परिणामे भारतमां मांसचिकित्साने बदले काष्ठौषधि जेवी निरवद्य चिकित्सानो प्रयोग शरू थयो हतो अने बृहद् विकास थयो छे अने आजे तो देशी वैद्यकमां ए ज प्रचलित छे अने मांसनो प्रयोग कोई जाणतु के करतु पण नथी ते वैद्यकना ग्रन्थों जोवाथी स्पष्ट थाय छे। पण मध्यकाळमां देशना दुर्भाग्यने कारणे जे जडतानु मोजु फरी वळ्यु तेने कारणे सर्वक्षेत्रे बारमी तेरमी शताब्दी सुधी अग्रगामी एवो भारत स्थितिपालक अने रूढिग्रस्त बनी गयो। नवो शोध, नवो विचार करवाने बदले जूनानी ज व्याख्या अने समर्थन करवा जेवी स्थितिस्थापकताने पाम्यो. अने तेनी जडतामां उमेरो कर्यो अंग्रेजो राज्ये। जेणे भारतीय जनताने विदेशी विचारोथी पराजित करी अने तेना पोतीका हीरने, नवा नवा क्षेत्रे नवु नवु करवानी तमन्नाने समाप्त करी दीधी अने मात्र अंग्रेजी भाषामांथी लावीने भणेलाओए अभणोने पीरसवा मांडयु आथी सारां परिणामो घणां आव्यां, छतां भारतीय भणेला विचारकोए पोतानी संस्कृतिनां मूळियां खोई नाख्यां अने तेथी तेओ विखूटा पडी गया। आ दैत्यमांथी टागोर के गांधी जेवाए समग्र प्रजाने जागृत करवानो मार्ग ग्रहण कर्यो पण दीर्घकालीन जड़ताने खंखेरी नाखतां हजी घणी वार लागशे। आथी ज जे देशनी कथाओमां पारेवा माटे पोतानो जान आपी देवा तैयार थनारा राजाओ वर्णवाया हता, कीडीने पण कष्ट न पहुँचे

ते अर्थे झेरी तुंबडी खाई सहर्ष मृत्युने भेटनारा अनेक महामानवो जे देशमां पाक्या हता अने जे देशमां महायान-नी भावनानो उदय थयो अने जे देशमां मोक्ष करतां पण जंतुनां कष्टोना निवारणने महत्त्व आपवमां आव्युं हतुं, तेज देशनुं प्रबुद्ध गणातो आजनो मानवी एटलो बधो स्वार्थी थयो छे के तेने मानवताना हितार्थे वांदरां के बीजां तेवां प्राणीओने मारवामां कांई अनुचित जणातुं नथी अने जैन तथा वैष्णवो पण लीवरमांथी दवा बनाववानां कारखानां चलावे छे। आ तो आपणा महामानवोनो वारसो धरा-ववाने आपणी नालायकी ज सूचवी जाय छे। आपणा स्वार्थने, आपणे कमजोरीने आपने स्वीकारीए अने पछी धवाते हैये कांईक हिंसा, करीए ए एक वात छे। पण तेवी हिंसानुं पाछु समर्थन करीए ए तो नरी स्वर्थान्धता ज छे अने संस्कृति-नो नर्यो द्रोह ज छे। तो सीधुं बीजानी जेम एम ज केम नथी कही देवातुं के मनुष्य माटे ज समग्र जड-चेतन जगतनी सृष्टि छे। तेनो उपभोग फावे तेम करी शके छे अने करवो जोईए। आ प्रमाणे कहेवातुं नथी अने छतां आवी हिंसानुं आपणे समर्थन करीए तो तो आपणे नथी आपणी संस्कृतिने वफादार के नथी विदेशी विचारने। केवल विचारनो गोटाळो ज छे।

भारत समग्र विश्वने अहिंसानो मार्ग देखाडशे एवी आशा आखुं विश्व राखी बेठुं छे ते तेना ए अहिंसाना वारसाना कारणे। जेने जीवंत कर्यो गांधीजीए। पण तेथी आ पेढीनी जे जवाबदारी छे ते बहु ज मोटी छे। जूना लोकोए जेम प्रत्येक क्षेत्रे हिंसा अहिंसानो विचार कर्यो अने जीवनमां यथाशक्य उतरवानो पण प्रयत्न कर्यो। तो आजे पण

आपणे आपणी समस्यानो उकेल ध्रुव तारक अहिंसाने सामे राखीने केम न करीए ? नानी नानी हिंसा अने विविध क्षेत्रे थती हिंसा ज छेवटे जीवनमां समग्र भावे व्याप्त थई जाय छे अने अहिंसाने स्थाने हिंसानी प्रतिष्ठा थाय छे। पण जो आपणे जागृत रहीए अने ए अहिंसाना ध्रुवताराने केन्द्रमां राखीने ज जीवननी समस्यानो उकेल लाववो छे एम एक वार दृढ निश्चय करीए-जेवी रीते के गांधीजी आ दृष्टिथी प्रेराया हता-तो ४२ करोडनी आ विराट जनता शुं न करी शके? पण तेम करवाने बदले विदेशमां जे रीते चाली रह्युं छे तेने ज अनुसरवुं होय अने तेनुं ज समर्थन करवुं होय तो पछी वांदरां तो शुं, घरडां मावापोने पण गोलीए मारीने सुखे रहेवाना मार्ग सुधी सहजभावे आपणे पहोंची जईशुं अने जो रोगीने ज समाप्त करीए तो वली आ दवा-दारुनी शोधनी पण शी जरूर ? पण आपणाथी ए बनी शकशे नहि। आपणासंस्कारो ज बलवो पोकारे छे। ए बलवाना अवाजने सांभलवानो विवेक हजी टक्यो छे। अने ए विवेकने पण बूठो बनावीने वांदरा मारवानुं ज समर्थन करवुं होय अने अहिंसाने मार्गे आमां बीजुं कशुं थई शके तेम छे ज नहि एम ज मानी लेवुं होय, तो पछी आ देशने माटे अहिंसाना नेता बनवानो आ अपूर्व अवसर छे ते एले ज जशे। एटले विचारकोने आमांथी अहिंसक मार्ग काढवानुं आह्वान करवाने बदले हिंसानुं समर्थन थाय छे ते तो आ देश माटे अने सरवाले विश्व माटे एक भयंकर ज वस्तु छे। जीवनना एक क्षेत्रमांथी हिंसा दूर कर्ये चालवानुं नथी। पण समग्र क्षेत्रथी, अरे समग्र मानवमांथी, हिंसानुं राज्य दूर करी अहिंसानुं साम्राज्य प्रवर्तावधानी हाम भीडवा आपणे तैयार रहेवुं जोईए। भ. महावीरे अने बुद्धे तथा

महाभारत-पुराण आदिमां अनेक महर्षिओए तो मानव तो शुं पण पशु पण अहिंसक भावनी तालीम पामी शके छे-ए आदर्श आ भारतमां स्थाप्यो छे। आवा अमूल्य वारसाने वेडफी नाखवाना पापमांथी आपणे ऊगरी जईए ए अत्यन्त जरूरी छे।

६
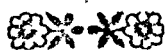
मुनि नथमलजी

जीवन अनेक सवालोथी भरेलुं छे। एमां सौथी मोटो सवाल छे भूखनो। ए प्रथमदृष्टिए शरीरने लगतो सवाल छे; मन उपर एनो पूरो प्रभाव पडे छे। भूखने शान्त करवा माटे मनुष्य आहार करे छे। खावानी सामग्री ओछी छे। खानारा वधारे छे, जनसंख्या झडपथी वधी रही छे। वधेली वसतिना सवाले साचे ज, भोजनना सवालने मुश्केल बनावी मूक्यो छे। आहारनी दृष्टिए मानवसमाज बे भागमां वहेंचायेलो छे; शाकाहारी अने मांसाहारी। शाकाहार ए जीवननी ओछामां ओछी जरूरियात छे। एना अवेजमां हजी कोई बीजो विकल्प छे नहीं। (मतलब के शाकाहारने छोडीने पण जीवी शकाय एवो कोई बीजो इलाज हजी मल्यो नथी।) ज्यारे मांसाहारनी सामे बीजो विकल्प छे शाकाहारनो। एटला माटे ज मांसाहारनी चर्चा थाय छे, अने ते अस्वाभाविक पण नथी।

मनुष्य पोताना नाना अधिकारो माटे लडे छे त्यारे सहेजे एना मनमां एवो तर्क जागे छे के शुं मनुष्य सिवायनां प्राणीओने जीववानो अधिकार नथी? शुं तेओ अशक्त छे एटला माटे आपणे ज्यारे मन थाय त्यारे एमना उपर

छरी चलावी दईए अने एमनो घात करीने आपणुं जीवन चालु राखीए ? शुं एमना जीवननुं कोई मूल्य नथी ? शुं पशुहत्या ए बलवान द्वारा निर्बल उपर थता दमननो पुरावो नथी ?——ज्यारे मानवीना अन्तरमां करुणानुं झरणुं वहेवा लागे छे त्यारे आ सवालो वधारे ज्वलन्त बनी जाय छे।

आपणे जरा पाछल दृष्टिपात करीए के मानवी मांसाहारी केम बन्यो ? क्यारे बन्यो ? शरूआतमां खेतीना अभावमां मनुष्यो मांसाहार करता हता। आजे पण क्यांक क्यांक मुख्य भोजन मांसनुं थाय छे। जेम जेम विकास थयो तेम तेम मांसाहारनी सामे बीजो विकल्प ऊभो थतो गयो; लोको शाकाहार तरफ वळता गया। मांसाहारनी शरूआत क्यारे थई ए इतिहासना सीमाडानी बहारनी वात छे; पण एम कहेवुं मुश्केल छे के मांसाहार खाद्य अन्नना अभावमां चाले छे। एना प्रचारमां स्वादवृत्ति वगेरे अनेक कारणो छे

मांसाहारनो विरोध पण घणा लांबा काळथी चाल्यो आवे छे। शरूआतमां एनो विरोध अहिंसानी दृष्टिए थयो। एटला माटे ज कहेवामां आव्युं के-मांसाहार ए नरकगतिनुं कारण छे। मनुष्य पोतानी स्वादवृत्तिने पोषवा माटे मांस खाय ए अनर्थ—हिंसा छे, संकल्पनी हिंसा छे। खेती वगेरे मनुष्यजीवननी ओछामां ओछी जरूरियात माटे थती हिंसा आरंभनी छे; ए आरंभनी हिंसानो ए त्याग न करी शके पण संकल्पनी हिंसा एणे न आचरवी जोइये। आ विरोध अहिंसानी दृष्टिनो छे। ज्यां सुधी ए दृष्टिनुं अस्तित्व रहे वानुं त्यां सुधी मांसाहार प्रत्ये एनो विरोध पण रहेवानो

पछी मांसाहारनो विरोध खाद्याखाद्यनी दृष्टिए थयो मांस माणसनुं खाद्य नथी, तेथी एणे ए न खावुं जोईए

शरूआतमां आ दृष्टिबिंदुमां सात्त्विक भावनानो अंश प्रबळ हतो, हवे शरीर-शास्त्रनी दृष्टिए एने अभक्ष्य कहेवामां आवे छे । मानव-शरीरनी रचना मांसाहारने अनुकूळ नथी; मांस मनुष्यनो खोराक नथी ।

मांसाहारनुं समर्थन करनाराओ एवी दलील करे छे के जो माणस मांस न खाय तो ए भूखथी मरी जाय । वळी, घणा लोको मांसने पौष्टिक अने तंदुरस्ती आपनारुं पण माने छे । वस्तुस्थिति एवी छे के मांसाहारनो विरोध पण थाय छे, अने एनुं समर्थन पण थाय छे । एनो विरोध करनारा ओछा छे, अेनुं समर्थन करवावाळा वधारे. सरकारनी दृष्टिअे मांसाहार कोई दोष नथी, तेथी अेने अे उत्तेजन आपे छे, अने अेने अे अन्नना सवालनो उकेल पण लेखे छे । मांसाहारने रोकवानी शक्ति अत्यारे तो सरकारमां नथी । ए तो जनताना हृदयपरिवर्तन थी ज रोकी शकाय । लोको न खाय तो सरकार एमने पराणे नहि खवरावे ।

आ समग्र चर्चानो सार ए छे के सरकार ए समाजनी प्रतिनिधि छे, राज्यसंस्थानुं साध्य समाजनी जरूरियातोने पूरी करवी ए छे अने साधन साध्यने अनुरूप ज होवानुं. अहिंसानो विचार तो ए करे छे के जेनुं साध्य आत्म-मुक्ति होय. सरकार तो अहिंसानो एटलो ज विचार करे छे, जेटलो एने माटे एनो उपयोग होय छे । सामाजिक अहिंसानो आधारस्तंभ छे उपयोगिता; अने आध्यात्मिक अहिंसा सर्व-जीव प्रत्येनी समान दृष्टिने आधारे उभी रहे छे । उपयोगिता-वादनुं सूत्र छे 'न मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किंचित्' एने आधारे ज मनुष्य पोताने माटे बाकीना विश्वनो भोग लेवाना कार्यने अकार्य नथी मानतो । अने अध्यात्मवादनुं

सूत्र छे " आय तुले पयासु " (पोताना आत्मानी जेम ज बीजाना आत्माने जुओ); एने लइने मनुष्य पोताने माटे कोई पण जीवनो भोग लेवो एने सारु कार्य नथी मानतो. आ (आध्यात्मिक) दृष्टिए हिंसा ए जीवनी अशक्ति छे। नबळाई छे; धर्म तो क्यारेय नथी।

एकना अस्तित्वने माटे बीजाना अस्तित्वनो भोग लेवामां आवे, ए वात कोई रीते स्वीकारवायोग्य नथी-आ छे आध्यात्मिक दृष्टि व्यवहारनी दृष्टि आनाथी जुदी छे। ए दृष्टि प्रमाणे वधारे उपयोगी प्राणीने माटे ओछा उपयोगी प्राणीनो भोग लेवो ए उपादेय छे।

आपणा माटे ए बहु ज़रूरी छे के कोई पण निष्कर्ष उपर पहोंचतां पहेलां आपणे एना साध्य अने साधनना स्वरूपनो निर्णय करी लेवो जोईए। अहिंसा, करुणा वगेरे शब्दोने आपणे मानीए छीए। वधाय आम छतां आपणा निष्कर्ष जुदा जुदा होय छे। अेम थवानु कारण आपणा साध्यना स्वरूपनो भेद ए ज छे। आपणे 'अहिंसा' शब्दने लईने चालीए छीए; पण एना हार्दने स्पर्शता नथी। आपणा समीक्षकोए तेम ज आपणे तो एम न मानवु जोइए के आपणी टीका करनारा अहिंसाने मानता ज नथी। आपणे तो ए दृष्टिए विचारवु जोईए के ज्यारे साध्य एक न होय त्यारे साधन जरूर जुदा जुदा होय छे। तेरापंथना के आचार्य तुलसीनी एवी मान्यता क्यारेय नथी के अहिंसा केवल निषेधात्मक धर्म छे। अमारी दृष्टिए अहिंसामां प्रवृत्तिनो निषेध नथी। निषेधनो अर्थ नर्यो निषेध थतो ज नथी। एक प्रवृत्तिना निषेधनो अर्थ छे बीजी प्रवृत्तिनु विधान, अने एक प्रवृत्तिना विधाननो अर्थ छे बीजी प्रवृत्तिनो निषेध। अहिंसामां बाह्यकेन्द्रित

प्रवृत्तिनो निषेध छे, अने आत्मकेन्द्रित प्रवृत्तिनु विधान। कोई व्यक्ति आत्मकेन्द्रित दृष्टिए मांसाहारनु समर्थन करे तो ए सर्वथा अनुपादेय छे। एने आधारे तो एमज कही शकाय के मनुष्यने माटे मांसाहार, ए सर्वथा वर्ज्य छे।

—o—

७

"सन्तबाल"

एक दृष्टिए तो आ सनातन द्वंद्व छे : (१) आदर्शोने व्हेवारमां उतारवा माटे आदर्शोने नीचे उतारवा के (२) आदर्शोने पहोंचवा माटे व्यवारने ऊंचे चढाववो। सन्त संस्कृतिए पहेलां मार्गनी सामे बण्ड करीने बीजा मार्गने पकड्यो छे। अने जाळवी राख्यो छे। ए सन्त संस्कृतिमां जैन संघनो विचार अने आचारनो मोटो फाळो छे ए विषे बे मत नथी। आजना युगने अनुरूप अर्वाचीन जैन संघना विचारो अने आचारो नथी ए फरियादमांना तथ्यने हु स्वीकारू छु। पण एने लीधे अहिंसाना आचारविचारमां जैन संघोनो फाळो न्होतो अने नथी एवु ऐकान्तिक विधान नहीं करी शकाय।

आ पछीथी वात रहे छे; (१) खोराकनी अने (२) वेपारनी। बधा मांसाहारी लोको शरीर टकाववा माटे ए खाय छे एम तो केम कही शकाय? हा! एटलु जरूर कही शकाय के टेवने कारणे अने परिस्थितिने कारणे बहु मोटो वर्ग ए खाय छे, पण गुजरातमां जैन खेडाणे जेम मोटा भागनी प्रजामां निर्मांसाहारना संस्कारो बनाव्या छे तेम देश अने दुनियामां ए थवु ज जोईए। पछी वात रही वपराशनी, दवानी अने वेपारनी बाबतमां अहिंसानी। जेओ

'अहिंसा परमो धर्मः' माने छे तेमणे जेम खोराकमांथी मांसाहारने तिलांजलि आपी तेम वपराशना पदार्थो जेम के कपडां, आभूषण वगेरेमांथी पण तिलांजलि आपवी जोइए। आ बाबतमां आजना जैन संघोमां जे थोड़ा लोको आग्रही छे, तेमनी संख्या वधवी जोईए एज रीते मृत्यु भले थाय पण जेम श्री मोरारजीभाई देसाई जेवा जैनेतर साधको हिंस्र दवा नथी ज वापरता, तेम मोटा भागना जैनोए हिंस्र दवा छोड़वी रही अने छेवटे तो (जानवर) प्राणीजन्य पदार्थोनो वेपार पण छोडवो जोइए। परंतु एक वात स्पष्ट छे के अहिंसा धर्म ए मानवमात्रनो श्रेष्ठ धर्म छे। मन, वचन अने कायाथी एनुं आराधन थवुं जोईए। कारण के मानव मानव विकासशील सर्वोत्तम प्राणी छे, एने विकसतां वार भले लागे, पण विकासने मार्गे ज एणे पोतानां विचार वाणी अने वर्तन वाळवां जोईए। एनी दलीलोनो झोक आदर्शोनी दिशामां जीवनव्यवहार गोठवाय तेवो होवो जोईए, नहीं के शरीरनी भौतिक सगवड़ो पोषवा तरफनो हवे सवाल ए रहे छे के अहिंसानी दिशामां सरकार केटलुं करी शके? अने सरकारने कहेवानो अधिकार कोनो? ए बाबतमां मारा विचारो जाणीता छे। हुं प्रथम तो संतोने अपील करुं, पछी लोक सेवकोने अने लोकोने तैयार करूं अने पछी ज सरकारने कहुं। पण एनो अर्थ ए पण नथी के सरकारने न ज कहेवुं। आजे पैसाने कारणे अथवा दरियाना प्राणीओनो जनताना हितार्थे उपयोग करवाने नामे मांसाहारने अने क्रूरतामय वेपारने छडेचोक जे उत्तेजन अपाई रह्युं छे, ते रोकावुं ज जोईए। मात्र ए रोकवानी पद्धति कई? ते विषे मारो नम्र मत अने वलण उपर मुजबनां छे।

अहिंसा उपर मन, वचन अने कायाथी थता चोमेरना आक्रमणनो ऊंडो विचार ज्यारे जैनो करशे त्यारे आ पेटा प्रश्नो करतां 'सत्ता पोते ज हिंसा छे' ए वात समजीने पायाना प्रश्नो तरफ खेंचाशे अने उपली वातोमांनुं तथ्य तेओ जरूर समजी शकशे । छेल्ला बे फकरा आ चर्चाना संदर्भमां उपयोगी नहि जणाय छतां में लख्या छे, एटला माटे के चर्चापत्र रजू करनारां बहेनने तथा आ चर्चाना रसिकोने ए परथी अहिंसानो संक्षेपमां छतां आखोय ख्याल स्पष्टपणे आवी जशे ।

—०—

८

रतिलाल मफाभाई शाह

मानवविकासने अनुरूप उपयोगितावाद जरूरी छे । एथी एनो ख्याल राखीने मानवे पोताना आचारविचारोमां परिवर्तनो पण कर्यां छे । पण जो ए मानवताना मूळमांज घा मारतो होय तो पछी मानवीजीवननो अर्थ शो ? एथी तो मानवताना विकास अर्थे युगोथी मानवजाते अहिंसा-करुणा-भूतदया तथा विश्वात्मैक्यता जेवा गुणोनो जे साधना साधी छे एनो ज उच्छेद करवा बराबर थाय ने एथी तो प्राचीन काळना पशु जीवन तरफ वळवा जेवुं बने । कारण के ज्यां उपयोगितावादने नामे केवल स्वार्थ तरफ ज दृष्टि राखवामां आवे छे त्यां एमांथी नर्क ज सरजाय । कारण के चित्त पर पडेला संस्कारो दिनप्रतिदिन प्रबळ बनतां पछी मानव मानव के पशु वच्चेनो विवेक ज करी शकतो नथी । आ दृष्टिए वेदकालमां मांसाहार हतो ए वस्तु महत्त्वनी नथी । महत्त्वनी वस्तुओ-वेदकालमांथी मांडी आजसुधी

मानवदया, अहिंसा तथा कारुण्यवृत्तिने कारणे मांसाहार छोडवा कैवो भगीरथ पुरुषार्थ खेडातो आव्यो छे ए छे। बाकी वेदकाळना लोकोना आचारविचार आजे प्रमाणभूत ठरावबामां आवे तो एथी पण विशेष प्राचीनकाळना मानवोनी नग्नता अने एकलवाया रखडु जीवननी प्रणालिने जीवननो आदर्श मानवो पडे। आपणे पोतेज एकवार धूळमां रमता, पण आजे अे आपणे पसंद करता नथी। मतलबमां के आपणे केवा हता ए महत्त्वनुं नथी, आपणे केवा बनवु जोईए ए ज महत्त्वनी वात छे।

रेशम एक काळे अहिंसक बनतुं अने आज पण बने छे छतां ए हिंसक पण छे। एवी ए काळना लोकोने जाण नहि होय जेथी एने आदरणीयुं स्थान प्राप्त थयुं हशे। पण नवसंशोधन पछी महात्मा गांधीजीए अेने हिंसक गणी त्याज्य ठराव्युं छे। आम रेशम के मोती जेमां चोख्खी हिंसाज छे, या एथी हिंसाने उत्तेजन मळे छे ए हवे सर्व संमत न गणावां जोईए। अने तेथी थोडा घणा धनिक व्यापारीओ के शोखीनोने कारणे एने धर्मनी महोर लागवी न जोईए। कारण के धर्म संशोधनने कारणे नवुं परिवर्तन आवकार दायक छे, ने अेवां परिवर्तनो पूर्वे थतां पण रह्यां छे।

जैनधर्मे अलबत्त, अहिंसाने चरम सीमातक पहोंचाडी छे, पण एम छतां अहिंसा ए केवळ जैनोनो ज इजारो छे एम मानी लेवुं ठीक नथी. बधा ज भारतीय धर्मोए दया, करुणा, विश्वात्मैक्यता अर्थात अभेदभाव या जीवमात्र प्रत्ये समभावने जे प्राधान्य आप्युं छे एना मूळमां अहिंसानी ज साधना छे, अने ए कारणे ज भारतने विश्वमां

आध्यात्मिक गुरुपद प्राप्त थयुं छे। कारण के अहिंसा ए मानवदिलमांथी उद्भवेलो स्वयंभू विचार छे। ए कोई व्यक्ति के व्यक्तिओना आचार पर निर्भर नथी।

१२ वर्ष पहेलां श्री कनैयालाल मुनशीए एक बाजु माणस (जे वखते भारतनी वस्ती ३५ करोडनी गणाती) अने बीजी बाजु कूतरां-वांदरां : ए वेमांथी एकने बचाववानो विकल्प मूक्यो हतो। आजे तेओश्री जो ए पदे होत तो शुं एक बाजु ३५ करोड अने बीजी बाजु नवा थयेला ८ करोड ए बे वच्चे पसंदगी करवानुं कहेत खरा ? एथी जे रीते आपणे ए प्रश्न हल करवा मथी रह्या छीए ए ज रीते आ प्रश्न पण हाथ धरवो जोईए।

पण ए माटे आपणे प्राणीहत्या करी खोराकनी अवेजीमां मांस-मच्छी मेळवी लेवां एना करतां तो अनाजनुं भूसुं, चोखानी कुसकी, तेलखोळ के एवां वनस्पतिनां अन्य अंगो जेवां के शाकभाजी, पान, मूळ कंद आदिनो उपयोग शोधी काढवो ए वधु हितावह नथी ? ए तत्त्वोने खोराकशास्त्रीओए वधारे कार्यक्षम, आरोग्यप्रद अने पुष्टि आपनारां मान्यां छे, ज्यारे मांसाहार ए आरोग्यप्रद छे एवुं कोईए सिद्ध कर्युं जाण्युं नथी। उलटुं युरोप अमेरिकाना सुप्रसिद्ध डाक्टरोए तो एने आरोग्यहानिकारक कह्युं छे. अने साथे जणाव्युं छे के एना वापरथी आंतरडांमां विटामीन-बी १२ उत्पन्न थवानी क्रिया अटकी पडे छे, जे तत्त्व शरीरना धारणपोषण माटे अत्यंत जरूरी छे। यूरोप अमेरिकाना घणा माणसो एथी शक्ति खोई बेसे छे, जेमने मांसाहारत्याग अने विटामीन बी १२ नां तत्त्वो आप्या पछी ज आरोग्य बक्षी शकायुं छे।

सूळ वात अे छे के मांस मानवनी होजरीने प्रतिकूळ छे । अेनी होजरीनी रचना ज एवी बनी गई छे के अे वनस्पतिने ज पचाववा जेटली कार्यक्षम रही शकी छे । अेक मुद्दो ए पण ध्यानमां लेवा जेवो छे के वनस्पतिनो एकाद भाग क्यांक रसोडामां रही गयो होय छे तो बे दिवसो पछी करमाई जाय छे पण गंधातो नथी। ज्यारे मांसनो एकाद टुकडो आखा रसोडाने दुर्गंधथी भरी दे छे, जे बतावे छे के एवी दुर्गंधयुक्त वस्तु मानवहोजरीने प्रतिकूळ बनी आरोग्य बक्षे छे।

वैज्ञानिक प्रयोगने खातर वत्सलाबहेन वांदराओनी निकासने योग्य गणे छे । पण जे रीते वांदराओने केटलाक समय सुधी रिबावी रिबावीने मारवामां आवे छे एनुं करुण चित्कार नाखतुं अने मानसिक समानता गुमावी लवरी करतुं हृदयद्रावक दृश्य जो जोवामां आव्युं होय तो पथ्थर हृदय पण एवा संशोधनने आवकारी ना शके । कारण के जेमने आपणे भौतिकवादी-जडवादी कहीए छीए। ए देशना लोकोनुं दिल पण आ दृश्य जोई पीगळी ऊठयुं हतुं अने एथी एमणे ए वखतना हाईकमिशनर श्री विजयालक्ष्मी पण्डित पासे भारत जेवा अहिंसक देश पासेथी अहिंसाना पयगम्बर महात्मा गांधीजीना नामे दयानी मागणी करी हती। जो एवा लोकोनां दिल पीगळी ऊठयां हतां तो आपणे तो ए वारसो पामेला कई रीते हिंसाने प्रमाणी शकीए ए ज समजातुं नथी ।

माणस जे कांई पण शुभ-अशुभ कर्म करे छे एनी प्रतिक्रिया एना उपर उठया वीना रहेती नथी । शुभनो पडघो शुभ रूपे अने अशुभनो अशुभ रूपे उठे ज । एथी जीवो प्रत्ये वापरेली क्रूरतानुं

परिणाम भले घडीभर आराम आपनारु नीवडतु होय तो पण परिणामे तो एनु फ़ल भयङ्कर दुःख अने वेदनारूपे उठ्या विना रहेवानु ज नथी। जो आ धर्मविचार आपणे स्वीकारीए तो हिंसक दवाओथी आपणे धूजी उठीए। पण भावना उच्च होवा छतां नवळी पडे आपणने नवलाईओ सतावी जाय छे। पवी हिंसक दवाओना वापरना अपवादो करवा पडे, लाचारी पूर्वक ए सही लेवु पडे ए एक जुदी वात छे। पण ए आपणी एक प्रकारनी निर्बळता ज छे। पण एथी निर्बळता ए सिद्धांत बनी शकतो नथी। उलटु ए क़ारणे तो आपणे एवा अहिंसक प्रयोगो शोधवा तत्पर अने जागृत बनवु जोईए।

एटलु खरूं के जीवनमां कोई वार अेवो तबक्को पण आवे के ज्यारे मानव अने मानवेतर प्राणी—अे बेमांथी एकनी पसंदगी करवानो वारो आवे त्यारे मानवेतर प्राणीना भोगे पण मानवने बचावी लेवो अे धर्म थई पडे छे। पण केवल आपणा मोजशोख अने निरंकुश इन्द्रियोना विलास अने वासनाओ पोषवा मच्छी जेवा विचारा अबोल-निर्दोष प्राणीओनो भोग लेवो ए पापनो डाग पापथी धोवा जेवु गणाय।

मांस अरुचिकर होवा छतां आजे जो के मांसाहार तरफ केटलाक युवानो एक या बीजा कारणे ढ़ळवा लाग्या छे। पण ए ज़ेम आर्थिक दृष्टिअे परवड़ी शके तेम नथी तेम आरोग्यनी दृष्टिए पण अे हानिकारक छे। ए अस्लयोगी शर्करारहित खोराक़ होवाने कारणे पेशाबना, लिवरना, सांधाना तथा हृदयना रोगो पेदा क़रे छे। उपरांत आध्या-त्मिक दृष्टिअे तो अे मानवीनी कोमल लागणीओ पर ज

असर करे छे। वांदराओ पर थयेला प्रयोगोए सिद्ध कर्युं छे के केवल मांसाहार पर राखवामां आवेला वांदराओ चीडिया, झनूनी, प्रमादी, आलसु अने व्यग्रचित्त बनी जता ज्यारे ए ज वांदराओने वनस्पति पर राख्या पछी फरी ए बधा ज चिन्हो बदलाई गयां हता अने आजुबाजुनां दृश्यो मां जीवन्त रस लेवा जेवा शांत अने समजु बन्या हता। आम आ बधी दृष्टिए विचार करता जणाय छे के जो मानवजाते फरी पशुजीवन तरफ़ न जवुं होय तो पणे मांसाहारथी दूर ज रहेवुं जोईए।

केटलाक खोराकना पोषणना अभावे अनिच्छा ए पण मांसहार तरफ वळवा लाग्या छे। केटलाकनी समझ छे के मांसहारथी शरीर पुष्ट थाय। पण ए बन्ने भ्रमणमां छे। मांसाहार करतां दूध, बदाम, कठोल वधारे पुष्टिकारक छे। पण जेमने ए न परवडे ते सक्करियां–गाजर–बटाटा–वगेरेमांथी पण पोषक तत्त्व मेळवी शके छे। पण एवाओने वली धर्म मर्यादा नडे छे। परिणामे डाक्टरो ज एमने शार्कलीवर, कोडलीवर जेवी दवाओ आपी मांसाहार तरफ वाळे छे। जैन युवानोमां आजे जे मांसाहार करवा तरफ़ वलण केळवातुं जाय छे एना मूळमां आवी वस्तुओना त्याग पण विशेष भार देवानुं परिणाम छे। परिणामे एनी प्रतिक्रियारूपे ए मांस–मच्छी, इंडां तरफ़ वलवा लाग्यो छे। आम मांसाहारनो प्रतिकार करतां आपणे आपणी भूलो पण खाळवी जोइती हती।

९

चीमनलाल चकुभाई शाह

आ विषयनी जे चर्चा "प्रबुद्ध जीवन" मां केटलाक वखतथी चाले छे ते केम शरू थई छे ते लक्षमां रखवुं जरूरी छे। भारत सरकारमां समच्छीना आहार तथा तेना व्यापार-उद्योगने उत्तेजन आपी रही छे तेथी आघात पामी एक भाईए श्रीपरमानन्द भाईने पूछयुं के पशु हिंसा तरफ़ देश जोशभेर गति करी रहेल छे तेने अटकाववा कांई ज न थाय, सरकारने कशुं कही न शकाय एवी मनोवृत्ति केम जोवामां आवे छे? जैन समाजना आगेवानो मौन केम छे? श्रीपरमानन्दभाईए जवाबमां, भूख्यो मानस शुं पाप न करे एम कही, सरकार पूरता हाथ धोई नाख्या, देश अने प्रजा पूरतुं, चोतरफ़ हिंसा विषयक उदासीनता अने लोकमानसमांथी करुणा लुप्तवत् थई रही छे ए तरफ ध्यान खेच्युं अने जेने आ विषयनुं दुःख छे एवा मौन सेवे छे, कारण के आवी विचित्र परिस्थिमां कोने शुं कहुं अने ते कह्यानो शुं अर्थ? कंई कहेवुं ते व्यर्थ अपलाप, अरण्यरुदन जेवुं थाय; छतां सरकारने कांई न कहेवाय एवुं नथी अने पोकार उठाववो के जेथी सामान्य लोकोनां अन्तरमां कर्तव्यभान अने करुणावृत्ति जाग्रत थाय।

श्रीवत्सलाबहेन आ संबधे एक चर्चापत्र मोकल्युं। तेमां वेदो अने स्मृतिओना पोताना ऊण्डा अभ्यासथी तेमने जणाव्युं के मांसाहार आ देशमां हजारो वर्षोथी लोको करता आव्या छे। जैनो रेशम अने मोतीनो धन्धो करे छे ते गो-मांस निकास करतां कई रीते वधु अहिंसक छे? तेमनी कहेवानो मतलब के जैनोने मांसाहार विषे फरियाद करवानो

कोई अधिकार नथी । वांदरानी निकासमां पमने कांई ज खोटुं जणातुं नथी, कारण के अनाज खाई जता वांदरानी निकास थाय तो ज भारतनी घघती जती वस्तिने अनाज पूरुं पड़े । वांदरा उपर प्रयोगो थाय छे ते मनुष्यहितार्थे थाय छे । तेथी आपणुं प्रिय जन सफल शस्त्रक्रियाथी बचे तेम होय तो ते वधारे महत्त्वनुं के पक वानरनुं जीवन ! "हंमेशां कोई वस्तुने जोतां पहेलां महत्त्वनी कई बाबत छे ए जोवुं जोईए ।"

आ चर्चापत्रने श्री परमानन्दभाईए अहिंसावादीओने पड़काररूप मानी छणावटभरी चर्चा-विचारणा माटे विचारकोने निमंत्रण मोकल्यां, जेमांना केटलाकना विचारो 'प्रबुद्ध जीवन' मां प्रगट थया छे । मने पण आ विषे कंईक कहेवा बहु आग्रह कर्यो छे ।

आमांथी त्रण मुद्दा उपस्थित थाय छे : (१) सरकारनी फरज शुं ? (२) प्रजानी फरज शुं ? (३) अहिंसा-हिंसाना विचारमां करुणा अने उपयुक्ताने शुं स्थान छे ? वत्सला-बहेनना शब्दोमां कहीए तो कई वस्तुने वधारे महत्त्वनी गणवी ?

आमांथी छेल्ला प्रश्नने पहेलो लउं, कारण के ते ज मूळ प्रश्न छे ।

अहिंसा-हिंसानी चर्चा अनंत थई शके, कारण के जीवन अनन्त छे । 'जीवो जीवस्य जीवनम्' ए कुदरतनो क्रम छे । हिंसामय जगतमां अहिंसक थईने रहेवुं एटले क्षणे क्षणे हिंसाना प्रसंगो आवे तेने बने तेटला टाळवा । देह छे त्यां सुधी अमुक हिंसा अनिवार्य छे, पण अहिंसक जीवन जीववानो जेनो प्रयत्न छे अने ते विषे जे सतत जाग्रत छे तेवी

व्यक्ति आवी अनिवार्य हिंसाने पण ओछामां ओछी करवानो प्रयत्न करे। अहिंसा ए धर्म छे, आत्मानो गुण छे, अध्यात्मिक विकासनुं साधन छे एवी जेने प्रतीति थई छे ते व्यक्ति पोताना मन साथे कायम एक युद्ध चलावी रहे छे। साची रीते तो अहिंसा आचरवी एटले परिग्रह ओछो करवो अने जीवनमां संयम लाववो। परिग्रह मेळववामां अने मेळवेल परिग्रह साचवी राखवामां हिंसा छे। स्वच्छन्दी अने असंयमी जीवनमां हिंसा छे। जीवननी जरूरियातो बने तेटलीओछी करवी ए अहिंसाना आचरण माटे जरूरनुं छे।

आ बधुं संपूर्ण रीते शक्य नथी एटले अहिंसाना कोयडा घणा छे। तार्किक दलीलो जेने करवी छे तेवाओ आवा कोयडाओने आगल करी अहिंसाना आचरणनी अशक्यता बतावी शके छे। अमुक संजोगोमां अने अमुक प्रसङ्गे हिंसा अनिवार्य छे अथवा हिंसा टाली शकाती नथी तेथी बीजा कोई प्रसङ्गोए हिंसा टालवानी वात पण निरर्थक छे एवी दलील थाय छे। एक ज दाखलो आपुं। विश्व वनस्पत्याहारनुं उद्घाटन करतां डा० राजेन्द्रप्रसादे वनस्पत्याहारनुं जोरपूर्वक समर्थन कर्युं। अन्तमां कोई अमेरिकन भाईए तेमने सवाल कर्यो के भारत जो वनस्पत्याहारनुं समर्थक छे तो ए दर्शाववा माटे जुदा जुदा देशनां भारतीय एलची खातांओ तरफथी योजाता सरकारी समारम्भोमां चोख्खुं वनस्पत्याहारी भोजन शा माटे पीरसवामां आवतुं नथी? जवाबमां डा. राजेन्द्रप्रसादे कह्युं के अमारी सरकार वेजीटेरीअन सरकार नथी—ते बन्ने प्रकारनो आहार करनारनी प्रतिनिधि छे। देश जेवो सरकारने योग्य होय तेवी सरकार तेने मळे छे। आपणे वेजीटेरीअन सरकार इच्छता

होईए तो आपणे ते माटे काम करवु जोईए अने जरूरी प्रचार करवो जोईए। प्रश्न पूछनारे जे कोयड़ो रजू कर्यो तेनो सरकार पूरतो कदाच आ संतोषकारक जवाब हशे। बीजो जवाब शुं आपि शके ? प्रश्न करनार एथी पण विशेष गम्भीर कोयड़ो रजू करी शकत। राष्ट्रपति तरीके पोते भोजनसमारम्भो आपे छे तेमां शा माटे मांसाहार पीरसाय छे ? राजेन्द्रबाबु जवाब आपी शके के राष्ट्रपति छुं त्यां सुधी मारी फरज छे के सरकारनी इच्छा प्रमाणे मारे वर्तवुं जोईए। कोई एम कहे के तो राष्ट्रपतिपद छोड़ी दो अथवा एम कहो के राष्ट्रपति छुं त्यां सुधी मांसाहार मारा भोजनसमारम्भमां पीरसाशे नहि अने तेम छतां सरकार आग्रह राखे तो राष्ट्रपतिपद छोड़ी देवुं। आ प्रश्ननो निर्णय राजेन्द्रबाबु ज करी शके। आवा प्रसङ्गोए केम वर्तवुं एनो निर्णय व्यक्तिए पोते ज करवानो रहे। बीजी रीते कहीए तो जीवनमां जे अनेक फरजो होय छे तेमांथी कई फरजने प्राधान्य आपवुं ते निर्णय व्यक्तिए पोते करवानो रहे छे। आमां राजेन्द्रबाबुने कोई स्वार्थ न होय अने शुद्ध सेवाभाव होय तो पोताना भोजन समारम्भोमां मांसाहार पीरसाय छे ते सहन करी लेवुं पडे, पण तेनो खेद तो होय ज अने ते टाळी शकाय तो सारु एम कहे। अहिंसाना आचरणमां विवेक अने नम्रतानी भारे जरूर छे। संभव छे के तेमने स्थाने बीजी कोई पण व्यक्ति होय तो एवो निर्णय ले के राष्ट्रपति पदजतुं होय तो भले जाय, पण आवी हिंसानो भागीदार हुं नहि थाउं। पण आ तो बे फरज वच्चे पसंदगीनो सवाल थयो। एमां स्वार्थ नथी, पण स्वार्थने खातर थती हिंसानो बचाव तो न ज थाय। अहिंसा एटले पोताना भोगे बीजानुं भलुं करवुं अथवा पोतानी खातर बीजा ने दुःख न देवुं। हिंसा एटले पोताना

स्वार्थने माटे बीजानुं बूरूं करवुं अथवा बीजाने दुःख देवुं। स्वार्थने माटे जे हिंसा अनिवार्य छे ते तो ओछामां ओछी थाय त्यारे ज अहिंसानुं आचरण सार्थक बने। अहिंसाना कोयडानो उकेल तर्किक दलीलोथी थतो ज नथी दरेक व्यक्तिए नक्की करवानुं रहे छे के जीवनमां पोते केटला प्रमाणमां हिंसा ओछी करशे अने अहिंसा वधारशे। गांधीजीए श्रीमद् राजचंद्रने पूछेल एक प्रश्न अने तेनो श्रीमदे आपेल जवाब आ वस्तु समजावे छे। ते नीचे मुजब छे :

प्रश्न : "मने सर्प करडवा आवे त्यारे मारे तेने करडवा देवो के मारी नाखवो ? तेने बीजी रीते दूर करवानी मारामां शक्ति न होय एम धारीए छीए।"

उत्तर : "सर्प तमारे करडवा देवो एवुं काम बतावतां विचारमां पडाय तेवुं छे। तथापि जो तमे देह अनित्य छे एम जाण्युं होय तो पछी आ आसारभूत देहना रक्षणार्थे जेने देहमां प्रीति रही छे एवा सर्पने तमारे मारवो केम योग्य होय ? जेणे आत्महित इच्छ्युं तेणे तो त्यां पोताना देहने जतो करवो ए ज योग्य छे। कदापि आत्महित इच्छ्युं न होय तेणे केम करवुं ? तो तेनो उत्तर एक ज अपाय के तेणे नरकादिमां परिभ्रमण करवुं। अर्थात् सर्पने मारवो एवो उपदेश क्यां करी शकीए ? अनार्य वृत्ति होय तो मारवानो उपदेश कराय। ते तो अमने तमने स्वप्ने पण न होय ए ज इच्छवा योग्य छे।"

जेम जेम अहिंसानुं आचरण वधतुं जाय तेम तेम आवा कोयडाओनो उकेल व्यक्तिने पोताने ज सूझे छे। वाछडा प्रकरणमां, वांदरा प्रकरणमां, हडकाया

प्रकरणमां, बंगाळना दुष्काळ प्रसंगे, मांसाहारी ने मांसाहार नी हिमायत करवामां, आ प्रश्ननी छणावट गांधीजीए करी छे ।

हिंसक आचरणनो बचाव उपयुक्तताने नामे थई ज न शके । उपयुक्ततानी दलील स्वार्थनी दलील छे । मारो जीव बचाववो छे. माटे वांदराने मारवा पडे तेमां कांई खोटुं नथी एमां नर्यो स्वार्थ छे । जीवनमां उपयुक्तताने लक्षमां राखवी पडे छे । सर्वथा तेनी उपेक्षा शक्य नथी, पण तेनी मर्यादा बराबर समजवी जोईए । वांदरा करतां माणसनो जीव वधारे उंचो छे, उपयोगी छे माटे वांदराने मारवामां दोष नथी एवी मान्यता अहिंसानी साची समजणनी खामी उपर रचायेली छे । खेतीवाडीनुं रक्षण करवा वांदराने मारवा पडे ए पण अहिंसानो एक कोयडो छे । वांदराने न मारवा पडे एवा उपायो योजवा बधा प्रयत्नो करवा जोईए । अनिवार्य होय तो ओछामां ओछी हिंसा करवी जोईए अने तेमां पण अंतरमां खेद होय एमां राचवुं, एनी अतिशयता करवी, ए खोटो मार्ग छे ।

करुणा अने उपयुक्तता बेनी सरखामणी ज भूलभरेली छे । करुणा-दया ए हृदयनी लागणी छे; उपयुक्तता स्वार्थनी जरूरियात छे । रघुवंशमां दिलीप-सिंह संवाद छे, त्यां आवी दलीलो जोवा मळे छे । दिलीपराजा जे गायनुं रक्षण करे छे तेने सिंह मारवा आवे छे । राजा कहे छे मने मारी नाख पण मारा गुरुनी गायने न मारीश । सिंह कहे छे के तुं होईश तो आवी हजार गायो तुं तारा गुरुने आपी शकीश । तुं राजा छे, महान छे, प्रजानो रक्षक छे । माटे गाय जेवी अल्प वस्तु माटे तारो भोग आपवा तैयार थयो छे तेथी तुं मने मूर्ख लागे छे ।

अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छन्
विचारमूढःप्रतिभासि मे त्वम् ॥

राजा कहे छे ' यशः शरीरे भव मे दयालुः ! मारा यशनो तो कांईक विचार कर ! कपोतने माटे पोतानो प्राण आपनार मेघराजानी कथा सुविदित छे । करुणा–दयाना आचरणमां गणितने आवकाश नथी । श्रीमद् राजचंद्रनी एक जयंती प्रसंगे 'दया धर्म' विषे बोलतां गांधीजीए नीचे प्रमाणे कह्युं छे :

' माणसने मारवो अने मांकड़ने मारवो–ए बेनी वच्चे पसंदगी करवी पडे एवा प्रसंग आवे त्यारे कोने मारवो ? माणसने मारीने मांकड़ने उगारवो ए धर्म होय एवो प्रसंग पण आववो शक्य छे । मांकड़ने मारीने माणसने उगारवो ए धर्म होय एवो प्रसंग पण शक्य छे । हुं तो ए बन्ने जातना प्रसंगमांथी उगरी जवानो मार्ग कहुं छुं । ते दया-धर्म छे ।'

मांकड़ने स्थाने बीजा कोई पण प्राणीनुं नाम अहीं मूकी शकायुं होत ।

उपयुक्ततानी दलीलो क्यां जईने अटके तेनो विचार करीशुं तो तेनी भयंकरता जणाई आवशे । हिंसक के निरुपयोगी पशुओनो संहार करवो अथवा मानवजीवन टकाववा मनुष्येतर प्राणीओनो वध करवो ए आवकारदायक छे एम मानीए तो हिंसक अथवा निरुपयोगी मनुष्योनो पण संहार करवो एमां खोटुं नथी एवो तर्क थई शके । सबळ निर्बळनो वध करे तेमां खोटुं नथी एम पण कहेवाय । अने आवी ज कोई 'फिलसूफी' सरमुखत्यारो, रंगभेद राखनाराओ अने बीजी प्रजाओ उपर राज करतो प्रजाओ पोताना वर्तननो बचाव करे छे ।

मांसाहार हजारो वर्षोथी भारतभरमां चाल्यो आवे छे अने दुनियामां वधे छे, माटे तेनो विरोध निरर्थक छे अथवा वस्ती वधती जाय छे अने वधाने अनाज पूरूं पडे तेम नथी माटे मांसाहार जरूरनो छे। आ बन्ने दलीलो खोटी छे। अलबत्त, जबरदस्ती अथवा बलात्कारथी कोईने मांसाहारनो त्याग करावी न शकाय। पण मांसाहारनो बचाव तो न ज थाय। भारतमां मांसाहार छे, छतां भारतनुं वलण मांसाहारना त्याग प्रत्ये रह्युं छे-खास करी हिन्दुओमां मांसाहार करनाराओ पण अमुक दिवसे मांसाहार न थाय, अमुक प्रसंगोए न थाय, विधवा थाय अथवा संन्यासी थाय तो न थाय, अमुक प्राणीओनुं मांस न खवाय, आवी मर्यादाओ स्वीकारे छे। अने मांसाहार तजवो ए धर्म छे एम माने छे। यज्ञोमां प्राणीओना भोग अपाता ते उत्तरोत्तर बंध थया छे ए तो वेद अने स्मृतिओना अभ्यासीओने पण खबर होवी जोईए। आवा हिंसक यज्ञ सामे वळवा तरीके ज जैन अने बुद्ध धर्मे अहिंसाने प्राधान्य आप्युं अने भारत वर्षे मोटे भागे ते स्वीकार्युं।

वधती जती प्रजाने पहोंची वळवा मांसाहार जरूरनो छे ए पण भूलभरेली दलील छे एवुं घणा अभ्यासीओए बताव्युं छे।

विश्व वनस्पत्याहार परिषदना मंगल प्रवचनमां डा. राजेन्द्रप्रसादे नीचे प्रमाणे कह्युं छे :

'वनस्पत्याहारनी वातमां अणुबॉंब के हाइड्रोजनबॉंबनी वात सुधी पहोंचवुं ए कोईने वधारे पडतुं लागशे। पण आप जो यथार्थ रीते विचारशो तो मालूम पडशे के जो आपणे हाईड्रोजन बॉंबथी बचवुं हशे तो आखरे वनस्पत्या

हारने स्वीकार्या विना चालशे नहि । जीवनना समग्रपणे अने परस्पर अनुसंधानमां विचार करीशुं तो व्यक्तिनो खोराक अने अन्य प्रत्येनी तेनी वर्तणूक वच्चे रहेला संबंधनुं आपणने साचुं भान थया विना नहि रहे अने एम तर्कबद्ध रीते विचार करतां–अने आमां कशुं तरंगीपणुं छे ज नहि–आपणने एवा निर्णय उपर आव्या सिवाय छूटको ज नथी के हाईड्रोजन बोंबथी बचवुं हशे तो तेनो एक ज उपाय छे के जे मानसमांथी हाइड्रोजन बोंब पेदा थयो छे ते मानसथी बचवुं अने तेवा मानसथी बचवानो एकमात्र उपाय छे सर्व जीवो माटे, सर्व आकारमां अने सर्व संयोगोमां प्रगट थती जीवनचेतना विषे आदर केळववो ते । आनुं बीजुं नाम छे वनस्पत्याहारनो समादर ।'

सुविदित हकीकत छे के श्री रामकृष्ण परमहंस मांसाहारी हता, कालीभक्त हता अने काली मन्दिरमां पशुओनो वध थतो । पण तेमनी अहिंसा उत्तरोत्तर एटली वधी के अंते फूल चूंटवामां पण तेमने दुःख थतुं । केटलाक जैनो रेशम अथवा मोतीनो वेपार करे छे, माटे मांसाहारनो विरोध करवानो तेमने कोई अधिकार नथी ए दलील पण वाजबी नथी । अलबत्त, साचो जैन जे व्यापारमां हिंसा होय ते तजे अने जैनोने न करवा जेवा घणा वेपारोनो वर्णन व्रतोमां आवे छे । पण अमुक हिंसा हुं करुं छुं माटे कोई हिंसानो विरोध हुं करी न शकुं ए बराबर नथी । अलबत्त, तेमां अभिमान होवुं न जोईए । पूरी नम्रता होवी जोईए ।

हवे सरकार अने प्रजानी फरज विषे बे शब्दो कही

आ मारी इच्छा करतां घणो वधारे लांबो थई गयेल लेख पूरो करीश ।

प्रजानी फरज स्पष्ट छे । अहिंसा ए ज धर्म छे एवी जेने प्रतीति थई छे तेवाओए अहिंसाना प्रचार माटे सतत प्रयत्नों करवा ज रह्या । पण अहिंसानी साची प्रतीति केटलाने थई छे ? अने एवी प्रतीति थई होय तेने आचरणमां मूकवानुं बळ केटलामां छे ? सामाजिक व्यवहार तरीके परंपराना रीतरिवाजो मुजब, सामान्य समजणथी, लोको स्थूळ हिंसा करता नथी । पण तेथी विशेष कांईक छे एवुं कहेवाय नहि । वर्तमान जीवनमां sanctity of life ए सिद्धांत प्रत्ये आदर जोवामां आवतो नथी । एटलुं ज नहि पण डो. राजेन्द्रबाबुए कह्युं छे तेम, 'जेम जेम आपणे सभ्यतामां प्रगति करता रह्या छीए तेम तेम कोई पण जीवनी जिंदगी माटेनो आपणो आदर उत्तरोत्तर घटतो ज गयो छे ।' सामुदायिक संहारनां शस्त्रो पेदा करीने मानवजातने विनाशने आरे लावीने मुकी छे । आवा संहारमां नथी खेद के नथी शरम, पण तेने जरूरी मानवा लाग्या छीए । जीवन धोरण ऊंचुं लाववाने नामे जीवननी जरूरियातो वधारी संयमने बीनजरूरी मानता थया छीए । समग्र जीवनदृष्टि जुदी दिशामां छे । जीवनना प्रत्येक अङ्गमां अहिंसाने स्थान आपवानो भगीरथ प्रयत्न गांधीजीए कर्यो । प्रजाजीवनमां केटले अंशे ते ऊतर्यो छे ते कहेवानी जरूर नथी । अलबत्त, आ जगतमां अथवा कोई व्यक्तिना जीवनमां हिंसा सर्वथा नाबूद थाय ए शक्य नथी, हिंसा-अहिंसा द्वंद्व सनातन छे । पण हिंसामांथी अहिंसा तरफ प्रगति करीए छीए के तेथी विपरीत दिशामां, ए विचारवानुं छे । जेम सर्वथा हिंसा नाबूद थवानी नथी

तेम अहिंसा पण सर्वथा कोई दिवस नाबूद थवानी नथी। कई समये हिंसानुं जोर वधे छे, कोई समये अहिंसानुं । व्यक्तिना जीवनमां अहिंसाने जेटलुं स्थान छे अने अवकाश छे तेटली समग्र समाजना जीवनमां न होई शके। पण समाज छेवटे व्यक्तिओनो ज बनेलो छे। समग्र प्रजाने अहिंसाना मार्गे लई जवी ए अधिकारी व्यक्तिओ करी शके। तेने माटे प्रजाने साचुं मार्गदर्शन मळे, साची जीवनदृष्टि मळे, तो ज योग्य वातावरण उत्पन्न थाय ए अरण्यरुदन लागतुं होय त्यारे पण निराश थइने बेसी न रहेवाय। कदाच एवा संजोगोमां प्रयत्ननी वधारे जरूर रहे।

सरकारमां साची दृष्टि होय तो आ दिशामां घणी प्रगति करी शके। एनो अभाव होय तो विपरीत दिशामां जाय। ए खरुं छे के जेवी प्रजा तेवी सरकार। पण ए पण खरुं के जेवी सरकार तेवी प्रजा। अहीं सरकारनो अर्थ नेताओ अने आगेवानो। कोई अशोक के कुमारपाल योग्य वातावरण सर्जी शके। आ सरकारनुं वलण आ दिशामां नथी एम खेद साथे कहेवुं पडे एमां आपणो ज दोष छे, अहिंसाना आचरणमां जे निर्भयता, त्याग अने साची जीवनदृष्टि जोईए ते प्रजामां न होय त्यां सुधी सरकारमां क्यांथी आवे अने श्रेष्ठजनोमां न होय त्यां सुधी आमप्रजामां क्यांथी आवे?

---o---

१०

डो. राजेन्द्रप्रसाद

दूर दूरथी आवेलां आप सन्नारीओ अने सद्‌गृहस्थने हुं हार्दिक आवकार आपुं छुं। वनस्पत्याहार विषे ऊंडी प्रतीति धरावता सज्जनोनो मोटो समुदाय अहीं मारी

त्रामे एकत्र थयेलो जोइने हुं आनंद अनुभवुं छुं । वनस्प त्याहारनी हीलचाल युरोपमां घणा लांबा समयथी चाले रही छे अने पोताना 'सत्यना प्रयोगो' ए नामना पुस्तकम महात्मा गांधीए जुदा जुदा दृष्टिबिंदुथी वनस्पत्याहारने उत्कृष्टता पुरवार करतां केटलाक पुस्तकोनो उल्लेख कर्य छे । छेल्ली सदीना छेल्ला दशका दरमियान पोताना विद्यार्थीजीवनना गाळामां विलायतनी वेजीटेरियन सोसायटीना पोते एक सभ्य हेवानो पण तेओ उल्लेख करे छे । आ उपरथी युरोपना जुदा जुदा देशोमां आ संस्थाना अधिवेशनो भरातां रह्यां होय एमां कशुं आश्चर्य पामवा जेवुं नथी ।

आ वेजीटेरियन कॉन्फरन्सनां आज सुधीनां अधिवेशनो अन्य देशोमां भरातां रह्यां छे । आजनुं अधिवेशन भारतमां भराई रह्युं छे अन्य देशोनी अपेक्षाए भारतनी केटलीक लाक्षणिकताओ छे जे तेनी पोतानी आगवी छे । हुं नथी धारतो के आ दुनिया उपर एवो बीजो देश होय के ज्यां आटली मोटी संख्यामां लोको वनस्पत्याहारी होय अने अनेक पेढिओथी पूरेपूरा निरामिष-आहारी होय तेम बनवानुं कारण ए छे के मांसाहार आध्यात्मिक विकासने कदाए बाधक-हानिकर्ता-गणवामां न आव्यो होय तो पण तेनी साथे मांसाहार बंधबेसत नथी एवी मान्यता अमारे त्यां सदीओथी चालती आवी छे अने अमारां धर्मशास्त्रोओ आहारसंबंधमां अनेक आचारनियमोनुं विधान कर्युं छे । मात्र सजीव प्राणीओ ज नहि पण वनस्पतिने–झाडपान, फळफूलने-पण इजा न पहोंचाडवी आ प्रकारनी अहिंसानी कल्पना उपर ए आचारनियमोनुं घडतर करवामां आव्युं छे । अमारा पुराणा जीवनविज्ञानने अने धर्मशास्त्रोए जीवननो विचार जुदा जुदा भागलाओमां नथी कर्यो, पण एक समग्र सुग्रथित वस्तुरूपे

जीवनने निहाळ्युं छे अने मानवीनी उर्ध्वलक्षी विकासने सहायक अने संवादी बने ए रीते मानवीनी जुदी जुदी प्रवृत्तिओनुं अनुसंधान कर्युं छे। आम होवाथी बीजा लोको जीवनने जे रीते विचार करतां संभलाय छे ते रीते अमारे त्यां अमारी प्रवृत्तिओ अंगे बेवड़ा धोरणो के कृत्रिम विभाजनो अस्तित्व धरावतां नथी। दाखला तरीके एवुं साधारण रीते घणे ठेकाणे संभळाय छे के माणसनो धर्म ए तेनी अंगत बाबत छे अने तेना राजकारण के जाहेर जीवन साथे तेना धर्मने कशो संबंध नथी। एवी ज रीते तेनो धर्म अने तेनी राजद्वारी चर्चा ए बे ने परस्पर भिन्न बाबतो तरीके लेखवामां आवे छे। पोते शुं खाय छे, केम रहे छे अने पोतानी बीजी खानगी बाबतोनुं केवी रीते संचालन करे छे तेने तेनी जाहेर प्रवृत्तिओ साथे कशो संबंध होतो नथी। अमे खरी रीते एम मानीए छीए के दरेक प्रवृत्तिना बीजी प्रवृत्तिओ उपर आघात–प्रत्याघात पडे ज छे अने प्रवृत्तिओने के तेनां परिणामोने आपणे जुदा पाडी शकता नथी। आ पाया उपर ज खोराकने अने स्वस्थ–अक्षुब्ध कोटिना मनना निर्माणने परस्पर संबंध छे अने खानगी के जाहेर कार्योमां, आध्यात्मिक के भौतिक प्रवृत्तिओना सफल संचालनमां आ प्रकारना स्वस्थ मननो योग आवश्यक छे एम अमारे त्यां मानवमां आवे छे।

ज्यारे हुं आ कही रह्यो छुं त्यारे कोईए एम समजवानुं नथी के अमारो देश अमारा लोको आ आदर्शो मुजब जीवी रह्या छे। जो एम होत तो अमारो देश अने अमारा लोको आजे छे ते करतां कोई जुदा ज प्रकारना होत। अने एम छतां आमांना केटलाक आदर्शो एवा छे के जेना अनुपालनना आग्रहे अमने एवी कसोटीओ अने आफ-

तेमांथी उगार्या छे के जे प्रकारनी कसोटीओ अने आफतो मांथी बीजी प्रजाओने भाग्ये ज प्रसार थवुं पड्युं होय। आ बधां तत्त्वोनुं जो आपणे पृथक्करण करीए तो में उपर जणाव्युं तेम अहिंसा जे तेना सक्रिय अने विधायक आकार मां अन्य जीवो विषे प्रेम या मैत्री छे अने जे तेना निषेधात्मक-नकारात्मक-आकारमां अन्य जीवो विषे सहिष्णुता छे -आ प्रकारनी अहिंसा ज अमारा माटे पायानुं तत्त्व बनी रहेला छे। बीजा शब्दोमां कहुं तो एक बाजुए अमे बिजानुं सक्रिय रीते भलुं करवामां मानीए छीए तो बीजी बाजुए बीजाओ पोतानी रीते जीवे, पोतानी रीते विचारे अने पोतानी रीते मुक्तपणे अन्य साथे वाणीव्यवहार करे एम अमे स्वीकारीए छीए। आ सहिष्णुता-आ उदारता-अमारा लोकोनी लाक्षणिक श्रद्धानो विषय छे, अमारी प्रकृति साथे जडायेलुं तत्त्व छे अने खरी रीते अमारी सर्व आध्यात्मिक अने तात्त्विक विचारणानी तेम ज साथे साथे जुदा जुदा धर्मोना विकासनी ते जननी बनेल छे। ज्यारे अमारे त्यां एक दार्शनिक विचारसरणीए यज्ञोमां पशुनां बलिदान उपर खूब भार मूक्यो त्यारे अहिंसा उपर तात्त्विक भार मूकता बौद्ध धर्मनो अने अहिंसाना विचारने जीवननी झीणामां झीणी विगत उपर लागु पाडवानो अने केटलीक बाबतमां आत्यन्तिक आकार सुधी लई जवानो आग्रह धरावतां जैन धर्मनो आ देशमां उदय थयो ते कोई आकस्मिक योग नहोतो, पण अमारी वैचारिक प्रक्रियाओनुं स्वाभाविक तर्कजन्य परिणाम हतुं। एवी ज रीते खीस्ती धर्मने ज्यारे तेने राजकारण साथे कशो सम्बन्ध नहोतो एवा तेना प्रारम्भना दिवसोमां अने समयान्तरे जरथोस्ती धर्मने आ देशमां आवकारपूर्ण वातावरण मल्युं अने पोतानो विकास साधवाने योग्य क्षेत्र

प्राप्त थयुं, ए पण केवळ अकस्मात नहोतो, पण उपर जणावी तेवी अमारी उदार विचारशैलीनुं ज स्वाभाविक परिणाम हतु । इस्लाम जे पोतानी आक्रमक प्रचारनीति माटे सुविख्यात हतो ते हिंदमां प्रवेश पामतां नरम बन्यो, मृदु बन्यो अने मुस्लिम विजेताओ अने शासकोना विजय करतां जो वधारे नहि तो तत्सद्दश महत्वपूर्ण इस्लामना सन्त साधुओनो विजय बन्यो, ते पण भारतनी प्राकृतिक उदात्तता अने परमसहिष्णुतानुं ज परिणाम छे । आजे अमारे त्यां एक एवी अनेक रंगोना चारु मिश्रणवाळी-रंग बेरंगी ताणावाणावाळी-संस्कृति निर्माण थई छे के जेमां अनेक तत्वोए एक असाधारण वैविध्यवाळी छतां विलक्षण एकरूपताने प्रगट करती समाजरचना उभी करवामां अद्‌भुत फाळो आप्यो छे ।

आम होवाथी निरामिष-आहार हंमेशाने माटे अमारा जीवननुं अर्ध धर्मिक एवुं सामाजिक वैशिष्ट्य बनी रहेल छे, अने नहि के आहारविषयक जुदी जुदी विचारसरणीओ के आर्थिक अनिवार्यतानुं केवळ सूचक या निदर्शक होय एवुं रूप तेणे धारण कर्यं छे । जो के आ बाबतोने लगतां परिणामो तो तेमांथी जरूर पेदा थयां छे। परिणामे एमां जरा पण आश्चर्य पामवा जेवुं नथी के अमारे त्यां एवी केटलीय ज्ञातिओ अने कोमो छे के जे पेढीओथी निरामिषआहारी छे अने जेना कोई पण सभ्ये कदी पण नाना के मोटा जानवरनुं मांसभक्षण तो शुं पण तेनो स्पर्श सुद्धा पण कर्यो होतो नथी । ज्यारे हुं आ कही रह्यो छुं त्यारे एम समजवानुं नथी के भारत समग्रपणे निरामिष-आहारी छे अथवा तो तेनी वस्तीनो मोटो भाग ते प्रकारनो छे एवो हुं दावो करुं छु । मुसलमानो, खिस्तीओ पारसीओ, शीखो अने बौद्धधर्मीओ पण सामुदायिक रीते वनस्पत्याहारी नथी एटले के जेम बीजी

क़ोमोमां छे तेम आ कोमोमां मांसाहारनो सामाजिक रीते प्रतिबंध नथी। पण बीजी दृष्टिए विचारतां, भारतनी वस्तीनो मोटो भाग वनस्पत्याहारी छे। ए अर्थमां नहि के तेओ मांस खाता नथी अथवा खाई शकता नथी, पण ए अर्थमां के तेमने मांस मळतुं नथी अथवा तो परवडतुं नथी। अमारी वस्तीनो मात्र नानोसरखो भाग ज एवो छे के चालु मांसाहारनुं सेवन करे छे। आमां पण बीजा देशो करतां अमारा देशनां शाक, कठोळ अने फलो तेमना चालु खोराकमां महत्त्वनुं प्रमाण धरावे छे।

एम पण कही शकाय के आमांनी केटलीक बाबतो विषे अमे कांईक विचित्र ख्यालो धरावीए छीए-आप तेने पूर्वग्रहो पण कही शको छो। जेओ मांस खाता होये छे तेमने पण सर्वप्रकारनुं मांस खावानी छूट होती नथी, पण अमुक पशुओनुं मांस जे खवाय अने वर्ष दरमियान अमुक दिवसोथी अने अमुक समये ते प्रकारनुं मांस खवाय या न खवाय एटलुं ज नहि, आपणे जाणीने आश्चर्य थशे के कतल करवा माटे नक्की करायेला पशुओनी अमुक रीते ज कतल कराय या न कराय-आवी अनेक मर्यादाओ अने प्रतिबन्धो मांसहार अंगे अमारे त्यां प्रवर्तता होये छे। आ रीते एवां चोक्कस पशुओ छे अने आमां कोम कोम दीठ फेरफार होये छे—के जेनुं मांस खवाय ज नहि अने तेनो त्याग करवो ज जोईए एवी मान्यता प्रवर्तती होये छे। वळी एवा केटलाक दिवसो के केटलाक प्रसंगो होये छे के ज्यारे मांस खाई न ज शकाय। अने क़तल क़रवानी पद्धति संबंधमां पण चोक्कस नियमो या प्रतिबंधो होये छे। हिंदुओ संबंधमां आ बधा प्रतिबंधो अने निषेधोनी

पाछळ माणसनी स्वादवृत्तिनी नवळाई नो स्वीकार, मांसाहारविरमणनी इष्टता अने मांसना उपयोगने जेटलो अने जेटली रीते अटकावी शकाय तेनी आवश्यकताना ख्यालो रहेला छे। आम होवाथी कशुं आश्चर्यजनक नथी के परंपरा अथवा कौटुंबिक रिवाज तरीके, अंगत मान्यता के सामुदायिक नियमन तरीके, आर्थिक कारणसर के शरीर, मन अने आत्माना आरोग्य अने विकासनी दृष्टिये निरामिष आहारनी उपयोगिताना स्वीकार तरीके, आवां अनेक कारणोसर अमारे त्यां वस्तीनो एक विपुल विभाग छे के जे बिलकुल मांसाहार करतो नथी अने तेथी पण वधारे मोटो एवो विभाग छे के जे कोई कोई वार अथवा तो अमुक ज प्रसंगे मांसाहारनी छूट ले छे। अमारा रीतरिवाजथी बीनवाकेफ एवा परदेशथी आवेला मित्रोनी जाण खातर मारे ए पण जणाववुं जोईए के साधारण रीते अमारा देशमां असे दूध अने तेमांथी बनती चीजोने बीन-वनस्पत्याहार तरीके लेखाता नथी। बीजी बाजुए इण्डांने–जेमांथी बच्चुं पैदा थवानी शक्यता ज न होय एवं इंडांओने पण–स्थितिचुस्त वर्गोमां बीनवनस्पत्याहार तरीके ज लेखवामां आवे छे।

आवा वधा ख्यालोना परिणामे हिन्दमां एक एवो समाज पेदा थयो छे के जे खोराकनी बाबतमां पण बीजा देशोथी जुदो पडे छे। ए पुराणा दिवसो के ज्यारे अहिंसा अने मनुष्यस्वभाव उपर पडती खोराकनी असर ए बे मुद्दाओ मांसाहारनिषेध संबंधमां खास भार मूकवामां आवतो हतो त्यारे ते पाछळ कोई आर्थिक ख्याल पण रहेलो हतो के केम ते विषे चोक्कसपणे कहेवानी स्थितिमां अमे नथी, पण आजनी अमारी आर्थिक परिस्थिति अमारी खानपाननी परंपरा

साथे बहु सारी रीते बंध बेसे तेवो छे. अमारी वस्ती घणी मोटी छे अने दर वर्षे ४० थी ५० लाखना प्रमाणमां जोस भेर वधती चाली छे। जमीननुं क्षेत्रफळ मर्यादित छे अने तेमां एक इंचनो पण वधारो थई शके तेम नथी। वणखेडायलो भाग खेती नीचे लावी शकाय तेम छे। पण एमां कोई शक नथी के आपणी दृष्टि पहोंची शके तेटला नजीकना भविष्यमां खेती नीचेनी जमीनमां जरा पण वधारो करवानुं शक्य रहेवानुं नथी। आ उपरथी आपणने ए विचारवानु प्राप्त थाय छे के अनाज के मांस बेमांथी शेनी वृद्धि करवानुं आर्थिक दृष्टिए वधारे योग्य छे? जे देशमां विशाळ प्रदेशो हजो पण सुलभ छे अने चराणनी जमीन पण चारे बाजुए पथरायेली पडी छे त्यां मांसमेळववा माटे पशुओनो उछेर जरूर सारा प्रमाणमां करी शकाय। "आ संबंधमां सामान्य रीते ए प्रकारनी गणतरी छे के एक माणसने जरूरी खोराक पूरो पाड़वा माटे पश्चिमना धोरण मुजब २॥ एकर जमीन आवश्यक लेखाय छे। जो लोको वनस्पत्याहारी होय तो १॥ एकर जमीन पुरती थई रहे एवो अंदाज विचारवामां आवे छे। आ तफावतनुं कारण ए छे के मांसाहारना हेतुथी उछेरवामां अने चराववामां आवतां जानवरोने जेटली जमीन जोईए तेना ९ थी १५ मा भागनी जमीन माणसना आहार माटे जरूरी एवां अनाज, शाक, अने फ़ळोना आकारमां एटलुं ज पोषणद्रव्य मेळववा माटे पूरती थई पडे।" आ विषयनो अभ्यास करतां अमेरिकावासी श्री रीचार्ड बी. ग्रेग आ प्रकारना निर्णय उपर आव्या हता, तो पछी ए तो एक भारे सुखद सुयोग छे के आजे देशना घणा भागोमां जमीन उपरनुं जे दबाण अनुभवाई रह्युं छे ते दबाण अमारा-जो के मर्यादित स्वरू-

पना छतां ठीक ठीक व्यापक एवा–वनस्पत्याहारने लीधे सारा प्रमाणमां हळवुं बने छे।

मांसाहार करतां वनस्पत्याहार वधारे सारी कोटिनां स्त्री–पुरुषो करी शके छे एवो दावो वनस्पत्याहारी करी शके तेम नथी। माणसनी गुणवत्तानो आंक काढवा संबंधमां भिन्न भिन्न प्रकारनां धोरणो होई शके छे, अने अमुक धोरणे मापतां मांसाहारीओ वनस्पत्याहारीओ करतां वधारे सारा पुरवार थाय एम पण बने; अने बीजा धोरणथी मापतां दाखला तरीके सहनशीलतानी बाबतमां मांसाहारीओ करतां वनस्पत्याहारीओ वधारे सारा मालूम पडवानो संभव छे।

पण आ बधी बाबतो बाजुए राखीए तो पण एक पायानो मुद्दो आपणी सामे आवीने ऊभो रहे छे के जे छेल्ला थोडा सैकाओ दरमियान ' सभ्यतानो इतिहास जे रीते विकास पाम्यो छे तेना तेम ज आधुनिक संयोगोना संदर्भमां, खूब प्रस्तुत बन्यो छे। एमां कोई शंकाने स्थान होई न ज शके के अहिंसा अथवा तो ' जीवो अने जीववा दो ' ए प्रकारनी जीवनपद्धति ए ज मात्र एवी पद्धति छे के, जे आपणी आजनी उपाधिओ अने घणीखरी समस्याओनो उकेल लावी शके तेम छे। उपर में जणाव्युं ते मुजब अहिंसा तेना विधायक रूपमां पोतानो जातनो, पोतानी सुखसगवडनो, अने पोतानी आकांक्षाओनो बीजानी खातर भोग आपवो एवो अर्थ सूचवे छे। तेनो विकल्प छे पोतानी इच्छाओ अने आकांक्षाओ पूरी करवा माटे बीजाओनो उपयोग करवो ते। एक या बीजी रीते सदीओथी माणस पोता विषे एम विचारतो आव्यो छे के सर्व जाणीता जीवोमां पोते सौथी वधारे उत्कृष्ट अने सौथी वधारे आगळ वधेलो जीव छे अने

तेथी बीजा बधा जीवो माणसनी इच्छाने आधीन रहीने वर्ते अने तेने बधी रीते संतोषे ए ज साचुं अने व्याजवी छे। आ ज नीति अथवा सिद्धांतनो आधार लइने आपणी स्वाद वृत्तिने तृप्त करवा माटे अथवा तो पेट भरवा माटे अथवा तो आपणां शरीरने शोभाववा माटे अथवा रमतगमतमां बने छे तेम आपणां मननुं रंजन करवा माटे कशा पण संकोच सिवाय आपणे पशुओनी कतल करीए छीए।

ए दिवसो के ज्यारे आपणे ओछा सभ्य लेखाता हता अने ज्यारे माणस मात्र शिकारी हतो ते दिवसोमां ते खोराक माटे बीजां पशुओनो शिकार करीने अन्य जंगली जानवर माफक जीवतो हतो। तेनी स्वादवृत्ति अने इच्छाओ बहु मर्यादित होईने आजनो वधारे सभ्य मानवी पोतानी रुचिने तृप्त करवा माटे जेटली हिंसा करे छे तेटली हिंसा ते वखतनो मानवी करतो नहोतो। ए दिवसोमां जो के तेनो निर्वाह पशुओ उपर थतो हतो एम छतां पण आजे जे घणा मोटा पाया उपर चाली रह्युं छे ते मुजब कतल करवा माटे पशुओने ते उछेरतो नहोतो। माणसनो खोराक अने बीजी जरूरियातोने पूरी पाडवाना हेतुथी आजे हजारो अने लाखो जानवरो कतल करवा माटे उछेरवामां अने हृष्ट पुष्ट करवामां आवे छे। औषधविज्ञान पण जुदी जुदी रीते पार विनानां पशुओने कापवा अने रिबाववा माटे जवाबदार छे, अने तेथी जेम जेम आपणे सभ्यतामां प्रगति करता रह्या छीए तेम तेम कोइ पण जीवनी जिंदगी माटेनो आपणो आदर उत्तरोत्तर घटतो ज गयो छे। एनो अर्थ ए थयो के जो माणस अन्य पशु करतां चडियातो होइने पोताना हेतु माटे तेनुं शोषण करी शके छे अने तेनो जीव पण लई शके छे तो ते पछीनुं बीजुं स्वाभाविक पगलुं ए होवानुं के वधारे

बळवान मानवीने के प्रजाने वधारे नबळा मानवी, जाति के प्रजानुं शोषण करवामां अथवा तो तेने नाबूद करवामां जरा पण अनौचित्य के अघटित नहि लागे। आजे आ ज बाबत एक वस्तुस्थिति रूपे नीपजी रही छे अने एकना भोगे बीजानुं जीवनधोरण ऊंचे लाववुं जरूरी छे एवा ख्याल उपर एक देशना लोकोनी अन्य देशना लोकना हाथे चाली रहेली शोषण प्रक्रियाना मूळमां पण आ ज मनोदशा काम करी रही छे।

हजु थोड़ा समय पहेलां–लड़ाई दरमियान अने बंने पक्षना सैनिको वच्चे मानवजीवननो कारण विना नाश करवा सामे प्रतिबंधो हता पण ते ख्याल हवे जूनवाणी बनी गयो छे अने आजे माणसना हाथमां आवेलां सामुदायिक संहारना शस्त्रोना परिणामे आखी मानवजात विनाशना आरे ऊभी छे। वनस्पत्याहारनी वातमांथी अणुबॉंब के हाइड्रोजन बॉंबनी वात सुधी पहोंचवुं ए कोइने वधारे पडतुं लागशे, पण आप जो यथार्थ रीते विचारशो तो मालूम पडशे के जो आपणे हाइड्रोजन बॉंबथी बचवुं हशे तो आखरे वनस्पत्याहारने स्वीकार्या सिवाय चालशे नहि। जीवननो समग्रपणे अने परस्पर अनुसंधानमां विचार करीशुं तो व्यक्तिनो खोराक अने अन्य प्रत्येनी तेनी वर्तणूक वच्चे रहेला संबंधनुं आपणने लाब्धुं भान थया विना नहि रहे अने एम तर्कबद्ध रीते विचार करतां–अने आमां कशुं तरंगीपणुं छे ज नहि–आपणने एवा निर्णय उपर आव्या सिवाय छूटको ज नथी के हाइड्रोजन बांबथी बचवुं होय तो तेनो एक ज उपाय छे के जे मानसमांथी हाइड्रोजन बांब पेदा थयो छे ते मानसथी बचवुं अने तेवा मानसथी बचवान एकमात्र

उपाय छे सर्व जीवो माटे, सर्व आकारमां अने सर्व संयोगमां प्रगट थती जीवनचेतना विषे आदर केळववो ते । आनुं बीजुं नाम छे वनस्पत्याहारनो समादर ।

हुं आशा राखुं छुं के आ देशना वातावरणमां करवामां आवनार आपनी विचारणा सफलताने प्राप्त करशे अने भारत पण जे आजे पाश्चात्य प्रजाए स्वीकारेला मार्ग पाछळ आंख मींचीने दोडी रह्युं छे ते क्षणभर ऊभुं रहेशे अने पोतानी राजनीतिना गर्भमां रहेलां (अनर्थलक्षी) सूचनो अने आखरनां परिणामोनो फरीथी ताजेतर विचार करशे ।

—o—

११

प्राणलाल कालिदास

सर्वमान्य वात छे के, हिंसाधर्म रूप अने अहिंसाधर्म रूप आ लोक सदाकाळ प्रवर्ते छे, अने अहिंसाधर्ममां माननाराओनी संख्या हमेशां घणा ज अल्प प्रमाणमां होय छे । ते पण लोकस्वभाव ज छे । मांसाहार, निरमांसाहाररूप जगत पण सदा प्रवर्ते छे । ते पण स्वभावगत प्रवर्ते छे । पशु-पक्षीओमां पण अमुक पक्षीओ निरमांसाहारी छे, ज्यारे अमुक पक्षीओ मांसाहारी छे। पशुओमां पण गाय, भेंस, बकरी आदि अमुक प्राणीओ निरमांसाहारी छे के जेने अन्नचारानी अवश्य पड़े छे; ज्यारे वाघ, सिंह, दीपड़ा आदि जंगलनां प्राणीओ स्वभावगत मांसाहारी छे, अने सदा घासचाराथी पर होय छे । आ उपरथी नक्की थाय छे के, मांसाहार करवो के न करवो ते भावो स्वभावगत जगतमां प्रवर्ते छे, अने तेथी

नुं शास्त्र बनी शकतुं नथी। तेथी ज जैन आगमोए आ बाबतमां चोखवटवाळी भाषानो प्रयोग न करतां उपदेशरूप रचना करी छे अने जगतना जीवोने संबोधी उपदेश कर्यो छे के "जगतना जीवो! तमे जीवहिंसाथी दूर थई जाओ। केमके जेम तमने सुख प्रिय छे, तेम सर्व जीवोने पण सुख प्रिय छे।"

आवो शुद्ध सनातन उपदेशरूप धर्म भगवान महावीरनो छे, परन्तु भगवान महावीरनो धर्म आदेशरूप कदी प्रवर्ततो नथी. अने होय ज नहि, केमके आदेशथी कर्मनो सिद्धांत जोखमाई जाय।

जैन धर्मनी संपूर्ण अहिंसक दृष्टि आगम प्ररूपक तीर्थंकर देवोनी अने केवळज्ञानीओनी होय छे। तेनाथी ऊतरती कक्षानी दृष्टि, संसारत्यागी साधुओमां प्रवर्ते छे, ज्यारे संसारी जीवोनी भोगदृष्टि होईने ओछेवत्ते अंशे हिंसाथी उत्पन्न थयेला पदार्थोनो तेओने फरजियात उपयोग करवो पडे छे।

त्यागदृष्टि सिवायनुं तमाम जगत तरतम भेदे हिंसा-धर्म साथे सदा संकळायेलुं छे, तेथी अेकांत दृष्टिए ते तत्त्वनो विचार निरर्थक छे। माटे जैन-दर्शनना आगेवान कर्मचारीओए एकांत दृष्टिवाळा सूत्रोने प्रचारकार्य रूपे स्थान आपतां पहेलां खूब शोचवुं जोईए। समस्त संसार सद्द्वैताभावे प्रवर्ते छे। माटे अनेकान्तदृष्टि न चूकवा आ लेखना लेखक अने साहित्यकारोनो आग्रह छे।

उपरोक्त श्रेणीरूप स्वभावगत लोक होवा छतां गर्विष्ठ मनुष्य हिंसा-अहिंसा बाबतमां पोतानो पक्ष खेंची, कलमथी पोताना पक्षने सिद्ध करवा कोशिश करे छे। जगतनो

सामान्य वर्ग तो भूल करे, तेओ लोकस्वभाव छे । प
नीतिसूत्रमां आनकारो भूल करे, ते लोकमां भयनु वातावर
उत्पन्न करी लोकने दुःखी करी मूके छे । नीति सूत्रम
प्रधान्य राज्यनीतिनु छे । राज्यनीति अज्ञान, मायावी
नीतिसूत्रनी घातक नीवडे, तो आखु क्षेत्र पायमालीना पं
पडी जाय ।

भूतकाळनी हजारो लाखो वर्षनी राज्यनीतिना सूत्र
धारोए क्षत्रिय धर्ममां शिकार आदि तत्वो मानेलां अ
रसलोलुपतामां मांसाहार मानेलो, पण तेमान्यता मनुष्यनु
शरीर टकाववा माटे कदी मानेली नहि । अेटलु ज न
पण, निरमांसाहारी महाजनने ऊंच गणी राज्यमां मा
आपवामां मानेलु । अेटलेके निरमांसाहारने राज्यनीतिज्ञ पुरु
षोअे ऊंचकोटिना तत्त्व तरीके स्वीकारेलु, आवु महाजन
तत्त्व भारतमां छेला राजाशाहीना अंत सुधी सूर्यना प्रका
रूपे तप्यु, परन्तु काळ प्रभावे तेर वर्ष पहेलांनी सने १९४
नी पंदरमी अगस्टनी अमावास्याना मध्य काळरात्रीए भार
तमां लोक-शासननो जन्म थयो अने राज्यनीतिनी लगाम
संपूर्ण जडवादीओना हाथमां जई पडी, अने राज्यनीतिथी
अज्ञान भारतनी प्रजा उपर लोकशासनना नामे, असुक काय
दाओ घडी, समस्त भारतनी संस्कृतिने भयमां मूकी दीधी ।
यंत्रयुगना मोहमां फसी खेतीप्राधान्य देशनु परिवर्तन करी
नाख्युं, एटले के यंत्रयुगने प्राधान्य आपी खेतीना प्रश्नने
गौण बनावी दीधो, अने ते कारणे समस्त भारतमां घोर
हिंसा प्रवर्तावी । अहिंसाधर्मनु अने जीवदयारूप महाजननु
अपमान कर्यु । राज्यधर्म सर्वधर्ममान्यतानु रक्षण करवानो
सिद्धांत तोडी पाडी नीतिसूत्रनुं खून कर्यु । मनचल्ली

मायावी राज्यनीतिथी स्वतन्त्रताना नामे भारतनी प्रजाना हाथपगमां अदृश्य गुलामीनी वेडी पहेरावी । "मनुष्ये मांसाहार करवो ज जोईए" आ भाषा निरमांसाहार लोको माटे असह्य छे । केमके तेमां जुलमगारपणानुं तत्त्व छे, तेथी आ बाबतमां भारतमां उहापोह जागतां अनेक लेखो जाहेरात रूपे प्रगट थाय छे ते पैकीनो एक लेख ता.१६-२-'६१ना 'प्रबुद्ध जीवन' पत्रमां मारा वांचवामां आव्यो । ए लेख बहेन वत्सला महेतानो छे । लेख उपरथी जनाय छे के आ बहेनने अनेकांतवादरूप जगतनी कांई खबर के गंध पण देखाती नथी, परन्तु वर्तमान युगनी केळवणीए ते बहेननुं मानस बदली नाख्युं छे । लेखिका बहेन पोतानो लेख चेलेंज रूप प्रगट करे छे, तेनी भूलो तरफ नजर करता में आ लेख लख्यो छे ।

बहेन वत्सलानी दलील ए छे के, मांसाहार मनुष्यो शरीर टकाववा माटे करे छे । ते दलील तद्दन जगतने गेररस्ते दोरनारी छे । केमके अनादिकाळथी मनुष्यनुं जीवन अन्न-आहारथी टके छे तेवी मान्यता सर्व धर्मोए स्वीकारेली छे । जीवन टकाववा माटे मांसाहार तो सिंह, वाघ, दीपडा आदि जंगलनां प्राणीओ करे छे के जेनो स्वभाव ज मांसाहार छे । अन्नचारानी जरूरियात, जे प्राणीओना मांसनो मनुष्य आहार करे छे ते प्राणीओने ज पड छे । तेथी सिद्ध थाय छे के अन्नचारानी खेती ज मनुष्य अने पशुओनां जीवन टकाववा माटे प्रधानपणे सदा प्रवर्ते छे । अन्न न होय तो केवळ मांसाहारथी मनुष्यनुं जीवन कदी टकी शके नहीं; अने ते ज कारणे निरमांसाहारी प्रजा, पशु प्राणीओनी दया तरफ दृष्टि करवा जगतनां मनुष्योने उपदेशरूपे आग्रह करे छे ।

मोतीनो अगर रेशमनो धंधो, तेमां हिंसा समायेलं छे, ते दलील पण न्यायसूत्रने संपूर्णपणे स्पर्शी सके तेवं नथी; केमके हिंसा करनारा, हिंसा करी अनेक पदार्थो आ जगतमां उत्पन्न करे छे। ते दृष्टिए जोईए तो आखुं जगत सदा हिंसामय प्रवर्ते छे। छतां न्यायने खातर आ तत्त्वने भेददृष्टिथी जोवानी परम आवश्यकता छे। व्यापार करनार व्यापारीनी दृष्टिमां घातकीपणु नथी। पण अर्थना कारणे फरजियात व्यापारी कर्म करवुं पड़े छे, ज्यारे मोती माछलीना पेटमांथी काढ़नार, अने रेशमना-कीड़ा मारी रेशम उत्पन्न करनारनी दृष्टिमां संपूर्ण क्रूरताना भावो होय त्यारे ज ते कर्म करी शकाय छे। कदाच मोती अगर रेशमनु मेळवुं बंध थाय तो खात्रीपूर्वकनी वात छे के दयाधर्म रूपे चाल्यो आवतो वर्ग धंधा माटे मच्छीमार, के कीड मारनार कदी बनवानो नथी; सिवाय के अपवाद नीकळे।

मोतीना व्यपारीओनी तेम ज रेशमना व्यापारीओनं उच्चता निरमांसाहारमां ज छे, ते तो स्वीकरवुं ज जोईए त्यारे साथो-साथ अेम पण स्वीकारवुं टोईए के कर्मजन व्यापार महाहिंसाथी उत्पन्न थयेला पदार्थोनो छे अने साथे साथ स्वीकारवुं जोईअे के सीधी रीतथी थती हिंसा अ आडकतरी रीतथी थती हिंसा व्यापार रूपे थाय छे, बन्ने वच्चे घणुं अंतर छे।

अन्न ऊगे छे तेमां जगतना वांदरा आदि अनेक प्राणीओनो हिस्सो छे, पवी सीठी दृष्टिनी खानदानीभरेली मान्यत जगतमां चालती आवेली छे। तेमां पण खास भारतम छेला अंग्रेज राज्य-अमल सुधी आ विषयमां कदी पण उहा पोह जाग्यो नहोतो, पण यंत्रयुगने अपनाववा माटे घोर

हिंसाने जन्म आपवा कुटिल कङ्गाल राज्यद्वारी बुद्धिप अन-र्थकारी भाषानो प्रयोग करी गरीब पशुप्राणीओनां जीव-नने भयभीत स्थितिमां मूकी दीधां छे ।

आ स्थितिनुं परिणाम हवे कुदरत सर्जन करशे त्यारे सत्यासत्य समजाशे ।

साचो शाश्वत सिद्धांत ए छे के, सुख आपीने सुख लेवाय पण दुःख आपीने सुख लेवा इच्छनाराओ, कोई क्रूर दुनियामां वसे छे ।

क्रूर दृष्टिनुं परिणाम आवी गयुं छे एम भारतना बुद्धि चाळाओ जोई रह्या छे । दुःखमां भारत गरकाव थई रह्युं छे । हाथकङ्कणने आरसीनी जरूर नथी ।

वांदरा मारी इन्जेक्शनो उत्पन्न थाय छे, तेनो प्रयोग मोटे भागे श्रमंतो पोतानुं विषयसुख टकाववा माटे करे छे; नहि के, जिंदगी टकाववा । स्त्रीओना लालचुओ विषयरूप अग्निमां सळगी रहेला क्षुद्र बुद्धिवाळा मनुष्यो, विषयभोग सेववा खातर ज एवां इंजेक्शनोनो प्रयोग, पोताना शरीरमां करावे छे । कदाच वांदरा मारी उत्पन्न थयेलां इन्जेक्शनोथी कोई एकलदोकल मनुष्य बची जतो होय, तेनी सामे यांत्रिक युगना परिणामरूप घोर विनाश तरफ नजर न करतां कहेवुं के, मनुष्यनी जिन्दगी बचती होय तो वांदरानी जिंद-गीनी तेनी सामे शुं किंमत छे? आ सुत्रमां भारोभार निर्दयताना भावो भरेला छे । मनुष्यनी दयाना नामे अना-चार सेवाई रह्यो छे, अने मनुष्यनी दयानो डोळ बतावनार यंत्रयुगना उपासक बन्या छे ते सिद्ध करे छे के, तेओनां हृदयमांथी दयाए-मनुष्यनी दयाए पण देशवटो लीधो छे ।

यंत्रयुगथी थता हजारो-लाखो-मनुष्योना करुणाजनक

अकस्मातो मारा उपरोक्त सिद्धांतने सिद्ध करे छे । साथो-साथ नक्की वात छे के, यंत्रयुग माणसो अने पशुप्राणीओना हाथ-पगने नकामा बनावी दई गुलामीनी बेडीमां जकडे छे अने यंत्रयुगना काळमां कारखानां-वाळाओ जालीमपणु करी धारण अत्याचारो सेवे छे । ते स्थिति भारतमां चालु थई गई छे । छतां मनुष्यनी दयना ओठा हेठळ यंत्रयुगने समर्थन आपवा वत्सला बहेननी कोशिश, केवळ ते बहेननी अेकांत दृष्टि सिद्ध करे छे ।

हालना घोर विज्ञानना मोहमां फसी यंत्रयुगना उपासक बनेला मोटा गणाता मनुष्यो मोटेभागे, करुणाजनक मृत्युथी मरे छे । मरती वखते तेवाओनी शान खोवाई जाय छे अगरतो हार्ट फेलथी मरी जाय छे । दाक्तरो तेने जिवाडवा अनेक इंजेकशनोनो प्रयोग करी अवाचक स्थितिथी उत्पन्न थयेला दुःखमां वृद्धि करे छे । अपवाद सिवाय देह छोडती वखते आ लोकमां नर्कना दुःखनु सर्जन करे छे अने परलोक माननारनी दृष्टिए घोर नर्कना मुखमां तेमना आत्मा प्रवेश करे छे ।

ज्यारे अहिंसक दृष्टिना उपासक ऋषि-मुनिओ, तेम ज ऊंची कोटिना संसारीओ मरती वखते समाधिमरण-हसते चहेरे मरणने भेटे छे । साचो सुखी ते के जे एवा मरणे देह छोडे ।

भोग त्यां संसार अने त्याग त्यां अहिंसानो मार्ग-आ सूत्रनो ख्याल वत्सला बहेनने नथी तेथी अनेकांतनी दृष्टिए तत्त्व विचारवा ते बहेनने आ लेखकनी नम्र विनंति छे ।

१२

वत्सला महेता

में लेख लख्यो हतो ते चर्चारूपे ता १६—३ ६१ ना 'प्रवुद्ध जीवन'मां छपायो अने अनेक जणे ते चर्चामां भाग लीधो। बधाना उत्तरो काळजी पूर्वक वांच्या पछी मारो छेल्लो उत्तर चर्चाने अंते आपी दउं।

मारा नम्र मत प्रमाणे मारी दलीलोनो श्रीकाकासाहेब कालेलकर सिवाय कोई ए बरोबर उत्तर आप्यो नथी। पहेलुं तो ए ज के हुं मांसाहारनो बचाव करती ज नथी। हुं तो मात्र एटलुं ज कहुं छु के वधती जती वस्तीने अनाज पूरुं नहि ज पडे अने तेथी मनुष्यने मांसाहार करवो ज पडशे। परंतु मारो उत्तर आपुं ते पहेला वाचकने विनन्ति करुं छुं के काकासाहेबना लेखमांथी में नीचे टांकेला फकरा ध्यानपुर्वक वांचे। एमना जेवा विद्वाननी दलीलो तो सबळ ज होय।

(१) आपणी सरकार हिंदु सरकार नथी ज। एक वखते आ देशमां हिंदुओनुं ज राज्य हतुं ते आपणे टकावी न शक्या।"

(२) "हिंदु समाजमां बहु ज थोडा लोको छे जेमने मांसाहार सामे वांधो होय। बङ्गाल, पञ्जाब आदि उत्तर भारतना प्रदेशोमां ब्राह्मणो पण मांस खाय छे क्षत्रिओ अने शूद्रोने छूट छे ज। वैश्योमां पण शाकाहारनो सार्वत्रिक नियम नथी। एटले मांसाहारना त्याग विषे हिंदुओनी पण बहुमती मळवानी नथी ... अने मळे तोये ए वापरवामां डहापण नथी, सलामती नथी।"

(३) "गांधीजी गौरक्षा पण कानूनद्वारा करवानी विरुद्ध हता।"

(४) "बुद्धे पोताना बधा ज शिष्यो मांसाहारनो त्याग करे ए जातनो उपदेश कर्यो नहि।"

(५) "आपणा देशमां वेदकाळथी मांडीने आज सुधी पशुहत्या धमधोकार चालती आवी छे।"

(६) "मांसाहार अने एने माटेनी पशुहत्या, एनो विरोध तो न ज कराय। विवेकपूर्वक प्रचार करवानी छूट बधाने छे।"

(७) "एक प्रख्यात नृवंशशास्त्रीनो अभिप्राय एम छे के एटम बांबना जोखम करतां पण मानवसंख्यामां थती वृद्धि ए वधारे मोटुं जोखम अने संकट छे।"

(८) "मनुष्य अने पशुपक्षी जेने अधारे नभे छे ते जमीन मर्यादित होवाथी अने अनाजनुं उत्पादन वधारवानी आपणी शक्ति मर्यादित होवाथी केवळ अनाज पर आपणी प्रजा नभी न शके।"

(९) "केटलाक ऋषिओए मत्स्याहार करवानुं कह्युं छे।"

(१०) "ज्यां अनाज ओछुं मळे छे त्यां एनी मददमां मत्स्याहारनी सगवड वधारवी जोईए एम बीजी सरकारनी पेठे भारत सरकार पण विचारे तो एनो वांक केम कढाय ?"

(११) 'राष्ट्रीय सवालोनो उकेल लाववा माटे रचनात्मक चिंतन आपणे करता नथी अने शाकाहारनो प्रचार करनार कोई रडयाखडया विद्वानोनां वचनो टांकवा उपरांत आपणे बीजो कशो पुरुषार्थ कर्यो नथी।

(१२) "आजनी दुनियामां कारुण्यनो प्रचार माणस माणसना सम्बन्धो पूरतो ज करी शकीए तो घणुं थयुं।"

आ छे विद्वान श्री काकासाहेब कालेलकरनां वचनो ।

शुं हिंसा आहारमां ज आवी जाय छे ? आचारमां नहि ? आपणे माणस माणसना सम्बन्धोमां पण कारुण्य दाखवीए छीए ?

आजे मुंबई जेवां मोटां शहेरोमां सेंकडो लोको भूखे मरे छे । उकरडामांथी अनाजना दाणा विणतां गरीबो ठेकठेकाणे नजरे पडे छे । छतां आपणे लग्नसमये, जनोई-समये, श्राद्धसमये हजारो रुपिया खरचीने मोंघां जमण नथी आपता ? आमां सेंकडो रुपियाना अनाजनो बगाड थाय छे। गरीब देशमां पण चडसा-चडसीने लईने बब्बे मीठाईने त्रण त्रण फरसाण पीरसाय छे । जेम वस्तुओ वधारे तेम बगाड पण वधारे. अने आपणी अमूल्य परदेशी मूडी खरचीने आयात करेलुं अनाज केटलुं बगडे छे ? अनाज पूरतुं नथी ज. तो जेम जमणवार अने बगाड वधारे तेम वधारे गरीबोना मोंमांथी आपणे अनाज, दूध वगेरे झूटवी लइए. छीए मनुष्य मनुष्यने भूखे मारे ए आचारनी हिंसा कहेवाय ।

आपणी अहिंसक संस्कृति छे पण आपणे जोरशोरथी कहीए छीए। आपणी संस्कृति अहिंसक छे ? वर्षोथी मातानां मन्दिरोमां निर्दोष पाडा तथा बकरांओनो वध थाय छे। आ कोना लाभार्थे ? काली मातानी मूर्ति जुओ तो तेना पग नीचे लोहो नीगळतुं पाडानुं डोकुं अने क्वचित पाडानी आंखमां आंसु होय छे। आ अहिंसक संस्कृति छे। कलकत्ताना कालीमाताना मन्दिरमां दररोज बाधामानतानां अने प्रणालिका मुजबनां केटलांये पाडाबकरांनो भोग लेवामां आवे छे। माता शुं आपणी पासे निर्दोष प्राणीओनो भोग मागे छे। निर्दोष गणाता पृथ्वीना कोई पण देशमां आवी अमानुषी प्रथा चालु नथी तेम ज युरोप-आमेरिकामां कोई धर्ममां अत्यारे

एवी मान्यता नथी के रोज पाडा-बकरांनो वध थाय तो ज माता आपणा पर प्रसन्न थाय। एक खोटा वहेम अने अंधश्रद्धा पर धर्मने नामे आ धतींग चाले छे। बे एक वर्ष पर अमे जयपुर गयां अने त्यांना आंबेरना महेलमां मातानां दर्शन करवा गया तो जोयुं के जयपुरना महाराजा तरफथी त्यां रोज एक बकरानो माताने भोग धरवाय छे। ते समये अमारी नजर सामे बकराने लाकडानी पाट पर मूकीने चीसो पाडता ए निर्दोष प्राणीने गळे छरी फेरवीने तेने कापी थाळीमां मूकी माताने धरवामां आव्युं हतुं। में पृथ्वीनो प्रवास कर्यो छे पण आवी अमानुषी प्रथा कोई पण सुधरेला गणाता मांसाहारी देशमां पण नथी जोई। अलबत्त, आ मांस तो पूजारीओ ज खाई जाय छे। आ पूजारीओ पवित्र ब्राह्मणो गणाता होवा छतां सो टका मांसाहारी होय छे ते सहेज। हुं जैनभाईओने पूछुं छुं के आ अमानुषी हत्यानो केम विरोध नथी करता? मात्र एना पर धर्मनो सिक्को लागेलो छे एटले ज? आ निरर्थक हिंसा आचारनी हिंसा ज कहेवाय।

आपणो इतिहास जुओ, रजपूतोनी कारमी तरवारोथी थतो संहार जुओ. आपणो हिन्दु धर्म जुओ क्यांए आपणने बीजा देशो करतां वधारे अहिंसा जणाय छे? आपणे त्यां शुं युद्धो बीजा देशो करतां ओछां थयां छे? आपणे त्यां राजाओ शुं युद्धोमां ओछो संहार करता? महाभारत अने रामायणना समयथी युद्धो थतां आव्या छे। लाखोनो संहार थतो आव्यो छे। महाभारतमां काका-दादाना दीकराओ पण संपीने राज न करी शक्या अने लोहीनी नदीओ वही, तो रामायणमां एक स्त्री खातर युद्ध थयुं ते लाखोनो संहार

थयो। सिद्धराज सोलंकी जेवा गुजरातना महान राजाए पण मात्र राणकदेवीना मोहने लईने जुनागढने बार वर्ष घेरो घाल्यो ने हजारो सैनिको मृत्यु पाम्या। राज्य खातर, सत्ता खातर। स्त्री खातर, अनेक युद्धो राजपूतो लड्या छे अने अनेकनो संहार कर्यो छे एक कुमारपाळे मांसाहार नहि कर्यो होय, पण हजारो वर्षोथी राजपूतो ने राजाओ मांसाहार करता आव्या छे अने करे छे। मनना आनन्द खातर राजाओ निर्दोष प्राणीओनो शिकार करता आव्य छे ने मृगया रमवा गया वगर राजाने चाले ज नहि। ससलां, हरण, शियाळ, जेवां निर्दोष प्राणीओना मनोरञ्जन माटे सदीओथी शिकार थतो आव्यो छे।

ज्यारे कोई देशमां प्रचलित नहोती त्यारे भारतमां आजथी दोढसो वर्ष पर ज सतीनी भयंकर प्रथा प्रचलित हती। धर्मने नामे, शास्त्रोना नामे, पतिनी स्वर्गप्राप्तिने नामे, हजारो स्त्रीओने जीवती पतिनी चितामां हडसेली देवमां आवती। हजारो लाचार कन्याओना मूंगा शाप भारतना समाजे वहोर्या छे। आ भयानक प्रथा एटली बधी तो हद वटावी गई हती के अंग्रेज सरकारने कायदाथी बंध करवी पडी। ते ज समये भारतमां पुत्रप्राप्तिने अर्थे गंगाकिनारे कोईनी अथवा पोतानी सगी पुत्रीने मारीने भोग धरावबानो प्रथा हती। वाचक आ नहि माने, पण आ हकीकत छे। अने अंग्रेज सरकार ते समये पोतानुं साम्राज्य स्थापवा आतुर होवाथी जनतानो कोप वहोरवा बिलकुल तैयार न हती। छतां आ प्रथा पण सतीनो प्रथानो पेठे एटली तो हद वटावी गई हती के अंग्रेज सरकारने १८७१ मां कायदाथी ते बंध करवी पडी। आम

नथी आपणी संस्कृति सामाजिक दृष्टिए अहिंसक, नथी धार्मिक दृष्टिए अहिंसक ।

माणस माणस प्रत्ये आजे पण हिंसक छे । आजे वेपारी वर्ग दवानां काळां बजार करे छे । दवामां खोटी दवाओ भेळवीने वेचे छे । गरीब माणस मृत्युपथारीए पडेलो होय अने दवा काळा बजारमांथी पैसा न होवाथी न लई शके अने मृत्यु पामे अथवा तेने बदले सस्ती दवा ले अने ते भेळसेळवाळी बनावटी नीकळे अने तेनी हानिथी ते माणस मृत्यु पामे । तो बन्ने दाखलामां हुं प्राणीहिंसाथी पण वधारे हिंसा गणुं अने ते हिंसानो दोष तो ते वेपारी-ओने ज माथे पडशे ।

श्री मालवणिया, सरकार आपणुं सांभळेनहि तो "एवा नकामा माणसोने फरी चूंटीए पण नहि" एम कहे छे । तो हवे लोकशाही अने आपणी लोकसत्तात्मक सरकार एटले शुं ते जोईए । लोकशाहीमां प्रगति हंमेशा धीमी ज होय केमके एक नहि पण अनेक अभिप्रायोने मान आप-वानुं छे । अनेक धर्मो, संप्रदायो, पंथो, ज्ञातिओ पेटाज्ञा-तिओ कोमो, सामाजिक मंडळो अने सामाजिक जूथोने खुश राखवानां छे । सरकार गमे तेवो लोकहितनो कायदो करे तो पण कोईक सामाजिक के धार्मिक जूथ तो अवश्य एवुं नीकळी आवशे के जे एनो विरोध करशे । एवे वखते गमे तेवी बुद्धिमान सरकार पण मूंचवाई जशे । आजे दारूब-न्धीनो कायदो लोकहितार्थं छे एम कोई कहेशे तो तेने जाणीने आश्चर्य थशे के आखी कोमोनी कोमो अने समाजना अमुक आखा वर्गो एवा छे के आ कायदा माटे सरकारनी सतत विरुद्ध बोले छे । आजे फरजियात केळवणी अने

बाळलग्न-प्रतिबन्धना कायदा छे, पण गामडामां उघाडे छोगे आ बन्ने कायदानो भङ्ग थई रह्यो छे। त्यां लाखो छोकरां भण्या वगर रखडे छे अने दर वर्षे हजारोनी संख्यामां बाळलग्नो थाय छे। आ बन्ने कायदानो भंग करनार वर्ग आ लोकहितना कायदा करवा माटे खुल्लेखुल्लुं सरकार विरुद्ध बोलशे। एटले लोकशाहीमां बधा ज धर्मो, संप्रदायो, ज्ञातिओ वगेरेने मान्य होय एवो एक पण कायदो के ठराव सरकार पसार नहि करी शके। एटले श्री मालवणिया सरकारमां "नकामा माणसो" कोने कहे छे तेनी ए पोताना व्यक्तिगत अभिप्राय प्रमाणे व्याख्या आपी शकशे, पण ते कांई समस्त भारतनो अभिप्राय नथी। दारूनिषेध अने फरजियात केळवणी तेम ज बाळलग्न-प्रतिबन्धना कायदा पसार करनारी सरकार लाखो माणसोने "नकामी अने काढी नाखवा जेवी सरकार" लागे छे तेनुं शुं ?

आजे तुर्कस्तान युरोपनो एक महान देश छे। प्रगतिमान छे। भणतरमां सो टका छे। कमाल आतातुर्क जेवा महान सरमुखत्यारने लईने आटलो आगळ आव्यो छे। ए वात चोक्स छे के आतातुर्क न होत तो गीधनी पेठे टांपीने बेठेलां युरोपनां बळवान राज्यो क्यारनां तुर्कस्तानने गळी गयां होत। आजे। तुर्कस्तान आतातुर्कनेपूजे छे। पण ए जीवतो हतो त्यारे ? थोडा माणसोना अपवाद सिवाय समस्त देश एनी विरुद्ध हतो, केम के एणे धार्मिक अने सामाजिक क्रान्ति आणवानी हाम भीडी हती। एना समयना रूढिचुस्त अने पछात तुर्कस्तानमां ए लोकोने फरजियात शालाओमां धकेलतो हतो ! एणे तुर्की भाषा माटे अंग्रेजी लिपि फरजियात दाखल करी हती। स्त्रीओनो

जुरखो फरजियात कढावीने तेमने समाजमां आगळ कर्
हती । फरजियात पणे जनतामांथी वहेम, अंधश्रद्धा अने
धर्मने नामे चालतां धतींग बंध कर्यां हतां । आजे तुर्कस्तान
एक मगरूर थवा जेवो देश छे पण ते समये आतातुर्कनो
जान लेवानी पण एने धमकीओ अपाई हती । तो जन-
ताना हित माटे शुं सारुं छे ए कोण नक्की करे ? जनता?
सरकार ? जनतामां पण कयो वर्ग ? ते विषे पण वे मत
होय छे । कोई कहेशे के बहुमति कोमो, तो कोई कहेशे के
लघुमति कोमो । आथी कोई पण देशनो धार्मिक, सामा-
जिक अने आर्थिक प्रगति आणवी होय तो एक वार
सरकार चूंटवी जोईए । अने पछी चूंटेली सरकारना
थोडाघणा कायदा तो मान्य राख्ये ज छूटको-गमे के न गमे ।

श्री. मालवणियाने जाणीने आश्चर्य थशे के बङ्गालमां
ब्राह्मणो मांस खाय छे, एटलुं ज नहि पण सौभाग्यवती
स्त्रीने रोज माछली खावी ज पडे छे—भावती होय के न
भावती होय तो पण । अने ए कहे छे तेम बंगाळ वगेरे
प्रान्तोना ब्राह्मणो पण गण्यागांठ्या ज खाता होय एम मानी
लईए तोपण ब्राह्मणो कांई कोई प्रान्तनो मोटो वर्ग नथी ।
ब्राह्मणो बधे ज लगभग मांसाहार करे छे अने आजे पण
भारतनी पंसी टका वस्ती मांसाहारी ज छे । (जोओ श्री.
काकासाहेबनां उपर टांकेलां वाक्यो ।)

जैनोमां कोईक जुज एवा हशे के जेमणे मोती ने रेशममां
थती काळु माछली अने कीडानी हिंसा माटे लाखोना
धन्धा छोडी दीधा हशे, पण मोटा भागना वेपारीओए हिंसा
खातर आ धंधा छोड्या नथी अने मोटा भागना वेपारीओ
हजी पण आ धंधामांथी लाखोनी कमाणी करे छे अने

ा हिंसा मांसाहार करतां वधारे हिंसा छे। केमके आ
न्ने मोजशोख अने निरंकुश इन्द्रियोना वैभवनी वस्तुओ छे।
ा वगर श्रीमंत स्त्रीओ खुशीथी चलावी शके छे। वळी
नो अहिंसा परम धर्म छे एने ओछी हिंसा शुं ने वधारे
हिंसा शुं ? हिंसा एटले हिंसा ज। जे धर्मीओ जंतुओनी
हिंसा न थाय माटे पाणी उकाळीने पीए के लीलोतरी
सूकवीने खाय के मीठुं शेकीने खाय तेमने माटे रेशम अने
मोती जेवा पैसो वधारवाना व्यवसायोमांथी थती हिंसा
घोर हिंसा ज गणाय।

वांदरा पर प्रयोगो न थवा जोईए एम माननारे कोई पण
हिसाबे पोताना के पोतानां कुटुंबीजनो पर कोईपण प्रकारनी
शस्त्रक्रिया न कराववी जोईए, केमके आ शस्त्रक्रिया वांदरा
पर सफळ थाय तो ज मनुष्य पर अजमावाय छे। एक
पेनिसिलिननुं के धनुर्वानुं ईंजेक्शन लेवाथी पण शरीरमां
लाखो जंतुओ मरी जाय छे। तो ईंजेक्शनो, प्राणीओनां
लोही ने लीवर जेमां आवतां होय एवी दवाओ ने टोनिको
अहिंसके न ज लेवां जोईए। तेम छतां पोताना के पोताना
स्वजनना जीवननो प्रश्न आवे छे त्यारे वांदरा परना प्रयो-
गोनो प्रखर विरोध करनार अहिंसावादी पण शस्त्रक्रिया
करवा के कराववा तत्पर थई जाय छे। तो तेमणे एटलुं
याद राखवुं घटे के आ बधी ज शस्त्रक्रिया प्राणीओ पर
सफळ थया पछी ज मनुष्य पर अजमावाय छे। सीधी
मनुष्य पर डाक्टर अजमावे तो कोई पण मनुष्य ए जोखम
खेडवाने तैयार छे ? नहि ज।

कीडी अने जंतुना कष्टने निवारण आपनार जैन मुनि-
आने में मुम्बईनी जाणीती एक गुजराती इस्पिताळमां शस्त्र-

क्रिया करावता जोया छे । शस्त्रक्रियमां जन्तुविनाशक दवाना वाटलेवाटला वपराय छे । आ दवाथी शुं लाखो जन्तुओनो संहार नथी थतो ? अने सेंकड़ो इंजेक्शनो शस्त्रक्रिया पहेलां अने पछी लेवाथी बीजां केटला लाख जन्तुओ मरी जांय छे, तेनो कोईए अंदाज काढ्यो छे ? जैन मुनिओने आ बधुं स्वीकार्य छे ।

पृथ्वी परना कोई पण सुधरेला मांसाहारी देशमां पण कोई घरडां माबापने गोळीए मारतुं नथी । दलीलमां अर्थहीन दलीलो केटली हदे पहोंचे छे तेनुं श्री. मालवणियानी आ दलील उदाहरण छे । ज्यारे आजथी दोढ़सो वर्ष पर सतीनी प्रथा बंध करवानुं समाजसुधारको कहेता त्यारे लोको कहेता, "स्त्रीने जो पती पाछळ बळी मरवानुं फ़रजियात नहि होय तो बधो स्त्रीओ पोताना वरोने झेर आपीने मारी नाखशे अने पछी फरी परणशे । " एना जेवी ज अर्थहीन आ दलील छे ।

श्री. मालवणियाए मारी दलीलना उत्तररूपे एम कहे छे के, "जूनी पुराणी संस्कृतिओ टांकवी ए निरर्थक छे । केमके 'आपणुं जीवन एटले के कट्टर ब्राह्मणनुं जीवन पण वेदस्मृतिने आधारे नथो चालतुं" अने 'ए जूनी पुराणी स्मृतिओ टांकवी ए निरर्थक छे अने आपणे करेला विकासना कांटाने पाछो फेरववा जेवुं छे ।' त्यारे लेखने अंते ए पोते "महाभारत-पुराण आदिना अनेक महर्षिओने" केम टांके छे ? आपणी ते लापशी ने पराई ते कुसको !

आपणे आपणी संस्कृति बाबतमां गौरवथी कहीए छीए त्यारे आपणे एम कहीए छीए के पृथ्वीभर पर आ एक ज संस्कृति एवी छे के जे वेदकाळना समयथी अखण्ड अतूट

चाली आवी छे । वेदकाळ विषे आपणे मगरूर छीए । कोईपण उच्च संस्कृतिनुं उदाहरण टांकवुं होय तो आपणे वेदकाळनो संस्कृतिनुं उदाहरण टांकीए छीए । हजी पण ब्राह्मणो संध्या करे छे त्यारे वेदना श्लोको बोले छे । हजी पण कोई लग्न थाय त्यारे आपणे गौरवपूर्वक छापामां पण जाहेर करीए छीए के "शुद्ध वैदिक मंत्रोच्चारथी अने विधिथी आ लग्न थयुं ।" तो पछी मांसाहार माटे में वेद टांक्यो त्यारे बधा ज केम वैदिक संस्कृतिथी आजनी संस्कृति छूटी पाड़ी नाखे छे ? अने श्री रतिभाई मफाभाई शाह वगेरे तेथी पहेलानी जंगली दशाने पण आदर्श मानवी जोईए वगेरे शा माटे लखे छे ? आजे आपणे वैदिक संस्कृतिने लगभग दरेक बाबतमां आदर्श संस्कृति मानीओ छीए हुं वेदना समयना मांसाहारने बिलकुल आदर्श नथी गणती मात्र एटलुं ज कहुं छुं के भारत कोई पण काळे एक देश तरीके शाकाहारी देश हतो ज नहि । वेदना समयथी हिंदुओ मांसाहार करता आव्या छे ।

आजे आपणे केवा बनवुं जोईए ते सवाल जरूर महत्त्वनो छे, परन्तु श्री. रतिलाल मफाभाई शाह भूली जाय छे के आजे पण आपणे दुर्भाग्ये "आपणी प्राचीन संस्कृतिनुं' पूंछडुं पकडीने बेठा छीए अने 'आपणी प्राचीन संस्कृति' एटले बीजी कोई नहि पण "वैदिक संस्कृति ।"

वांदरा परना प्रयोगोमां ए वांदराने क्लोरोफोर्म सूंघाडीने तेमनी अमुक ग्रंथिओ काढी नाखवामां आवे छे ते कदाच श्री शाहने खबर नहि होय ।

श्री रतिलाल मफाभाई शाह ज्यारे 'मोजशोक अने निरंकुश इन्द्रियोनो विलास अने वासनाओ पोषवा मच्छी

जेवा निर्दोष प्राणीनो भोग लेवो " एम कहे छे त्यारे ए भूली जाय छे के मोती माटे जीवती मारवामां आवती काळु माछली पण निर्दोष अबोल प्राणी ज छे अने ते 'मोजशोक अने निरंकुश इन्द्रियोना विलास " माटे ज मारवामां आवे छे । माटे अहिंसावादीओए रेशम अने मोती पहेरवां बंध करवां जोईए । तो ज वेपारीओ आ बे शोखनी वस्तुओनो वेपार करता बन्ध थाय अने तो ज कोशेटाना कीडा अने काळु माछलीनी क्रूर हत्या अटके ।

मारी दलीलोनो श्री. काकासाहेब सिवाय कोईए बराबर उत्तर आप्यो नथी" उपयुक्ततावाद स्वार्थ छे, अहिंसा उत्तम धर्म छे । " वगेरे अनेक आदर्श वाक्योथी तो हुं पण पानांनां पानां भरी शकुं, परन्तु व्यवहारमां आ चर्चामां भाग लेनारामांथी भाग्ये ज कोई एवा हशे के जे अहिंसा खातर पोतानो रेशम या मोतीनो वेपार छोडी दे के हिंसाने उत्तेजन न मळे माटे रेशम के मोती न पहेरे के लीवर, लोही, वगेरेनां बनेला दवा-ईंजेकशनो मांदगीमां न वापरे के वांदरांने भोगे सफळ थयेली शस्त्रक्रिया पोते के पोतानां प्रियजनो मरी जतां होय तो पण न करावे। व्यवहारमां हिंसा मात्र अहारमां ज नथी आवी जती । में उपर उदाहरणो आप्यां छे तेमां आजनो शाकाहारी मानवी पण रोजबरोज अनेक सीधां के आडकतरां हिंसक आचरणो करे छे । बीजुं ए हिंसा मात्र गाय के कूतरां, के वान्दरा के, मांकड जेवां प्राणीओने ज बचाववाथी थाय छे ए मान्यता ज भूलभरेली छे। उपरनां उदाहरणो परथी जणाशे के माणस प्राणी प्रत्ये दया दाखवे छे त्यारे माणसने ज भूखे मरवा दे छे ।

श्री चीमनलाल चकुभाई शाह कहे छे। मांसाहारीओ पण

अमुक दिवसे मांस नथी खाता अने आवी मर्यादाओ स्वीकारीने मांसाहार तजवो ए धर्म छे एम माने छे। 'आ दलील स्वीकारीए तो पछी आपणा कोई पण हिन्दु व्रतने दिवसे स्रीओ घउं, चोखा, वाजरी वगेरे रोज खवातां अनाज नथी खाती। घणा जैनो चोमासाना चार महिना लीलोतरी नथी खाता। तो पछी एनो अर्थ एम ज थयो के रोज खवातुं अनाज अने लीलोतरी तजवां ए धर्म छे अने बने तो दरेक जणे घउं, चोखा, वाजरी लीलां शाकनो हमेश माटे त्याग करवो।

"जैन अने बुद्ध धर्मे अहिंसाने प्राधान्य आप्युं छे" ए बरोबर छे, पण आजे बौद्ध धर्म पाळनारा जापान, चीन मलाया, बर्मा इन्डोनेशिया, सिलोन वगेरे कोई पण देशो शाकाहारी नथी, बल्के बौद्ध धर्मीओ मांसाहारी छे। माटे बौद्ध धर्मने तो आधुनिक शाकाहारीनी चर्चाओमांथी बाकात ज राखवो पडशे।

मारुं एम कहेवुं छे ज नहि के जैनो रेशम मोतीनो धंधो करे छे। माटे मांसाहारनो विरोध न करी शके। हुं मात्र एटलुं ज कहुं छुं के मांसाहारमां जेटली हिंसा छे एटली ज काळु माछली अने रेशमना कीडाने जीवता मारवामां छे। पण तेनो कोई जैन भाईओ केम विरोध नथी करता?

१३
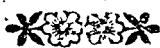
उपसंहार

परमानन्द कापडीया

'प्रबुद्ध जीवन' ना ता. १-२ ६१ ना अंकमां 'बुभुक्षितः किं न करोति पापं?' ए मथाळा नीचे प्रगट थयेला लेखमां मांसाहारने उत्तेजन आपवाना अने परदेशी हुंडियामण वधारे ने

वधारे मेळववाना आशयथी-प्रेरायेली, पशुओनी मोटा पाया उपर कतल थई शके अने तेना मांसनी तेम ज मच्छीनी मोटा प्रमाणमां परदेशोमां निकास थई शके ए प्रकारनी भारत सरकारनी आयोजन नीतिनी में टीका करी हती अने आर्थिक भींसना दबाण नीच आपणी सरकार जड पदार्थों अने पशुओ वच्चे कशो विवेक करवा मागती नथी ए प्रकारनो ते लेखमां आपणी सरकार उपर में आक्षेप कर्यो हतो. आ लेख वांचीने श्री वत्सलाबहेने मारी उपर एक चर्चापत्र मोकल्युं हतुं अने तेमां मांस-मच्छी आजे नहीं पण हजारो वर्षोथी भारतना मोटा भागना लोको खाता आव्या छे अने आजे पण देशनो घणो मोटो भाग मांसाहारी छे, अने आ मांसाहारनो विरोध करता जैनो मोती तथा रेशमनो वेपार करे छे अने ते पण एटलोज हिंसक छे; वळी सरकार वांदरानी निकास करे छे तेमां शुं खोटुं करे छे ? कारण के तेना उपर वैज्ञानिक संशोधनो थईने लोकोने मरता बचाववाना अनेके उपायो अने इंजेकशनो शोधाय छे अने तेथी वांदरा अने माणस वच्चे आपणे माणसने ज पसंदगी आपवी जोइए— आवी मतलबना केटलाक विचारो तेमणे रजू कर्या हता । आ तेमनुं चर्चापत्र करुणा सामे उपयुक्ततानुं जे सनातन द्वन्द्व मानवीना जीवनमां चाली रह्युं छे तेनुं ज सूचन करे छे एम समजीने 'करुणाविचार विरुद्ध उपयुक्ततावाद' ए मथाला नीचे ता. १६-३-'६१ना अंकमां में श्री. वत्सलाबहेननुं प्रस्तुत चर्चापत्र प्रगट कर्युं हतुं अने आ विवादास्पद प्रश्नमां रस धरावता अने ते उपर चालु चिंतन करता केटलाक मित्रोने तेमज 'प्रबुद्ध जीवन' ना वाचकोने पोताना विचारो लखी मोकलवा में निमंत्रण आप्युं हतुं । आ निमंत्रणने मान आपीने पूज्य काकासाहेब

कालेलकर, स्वामी सत्यभक्त, श्री दलसुखभाई मालवणिया, मुनि श्री नथमलजी, मुनि श्री सन्तबालजी, श्री रतिलाल मफाभाई शाह, श्री चीमनलाल चकुभाई शाह, श्री प्राणलाल कालीदास, श्री भंवरमल सिंघी, श्री अप्पासाहेब पटवर्धन, श्री गौरीशंकर भट्ट तथा श्री लवणप्रसाद शाह—आटला मित्रोए मानवीजीवनी आ जटिल समस्यानो उकेल शोधवा मथता लेखो अथवा तो चर्चापत्रो मारी उपर लखी मोकल्या हतां । आ सर्व लेखो या चर्चापत्रो मे मासनी पहेली तारीखना 'प्रबुद्ध जीवन "थी आज सुधीना अंकोमां अनुक्रमे प्रगट करवामां आव्यां छे । आ उपरांत १९५७नी सालमां मुंबई खाते भरायली विश्व वनस्पत्याहार कांग्रेसनुं उद्घाटन करतां भारतना राष्ट्रपतिए करेलुं प्रवचन निरामिषाहारना प्रश्न उपर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पाडतुं होईने ता. १-८-६१ना 'प्रबुद्ध जीवन" मां प्रगट करवामां आव्युं हतुं । आ बधा लेखो अने चर्चापत्रो प्रगट थया बाद श्री वत्सलाबहेने पोतानो एक छेवटनो जवाब लखी मोकलवा इच्छा दर्शावी अने ते मुजब मलेलो जवाब पण छेल्ला ता १६-९-६१ना प्रबुद्ध जीवनमां प्रगट करवामां आवेल छे ।

हवे आ आखी चर्चाने समेटी लेतां उपसंहार रूपे चर्चा दरमियान उपस्थित थयेला हिंसा—अहिंसाने लगता अनेक मुद्दाओने आवरी लेती समालोचना करवानुं मारा भागे आवे छे । आ जवाबदारी घणी विकट अने मारी बुद्धिनी आकरी कसोटी करे तेवी लागे छे । एम छतां जेनो प्रारंभ कर्यो तेनी योग्य पूर्णाहुति मारे करवीज रही । आ शरू करुं ते पहेलां मारा निमंत्रणने मान आपीने जे मित्रोए लेखो अथवा चर्चापत्रो लखी मोकल्यां तेमनो अने तेमां श्री दलसुखभाई मालवणिया तथा श्री चीमनलाल चकुभाई शाह के जेमणे

आ विषय उपर पोताना चित्तने केन्द्रित करीने खरेखर उद्बोधक एवी अलोचना लखी मोकली ते माटे ते बन्ने मित्रोनो मारे खास आभार मानवो जोइए। श्री. वत्सलाबहेनुं चर्चापत्र आ आखी चर्चा अने विचारविनिमयनुं निमित्त बन्युं ते माटे तेमना विषे पण मारे आभारसूचक उल्लेख करवो जोईए। तेमना छेवटना जवाबमां में प्रस्तुत विषय उपर तात्त्विक अने सारासार विवेक दाखवती आलोचनानी अपेक्षा राखी हती। तेना बदले तेमां आगलनी वातोनुं पुनरावर्तन अने आगलनी हकीकतोनुं पुनःरटण जोईने मने तेम ज प्रस्तुत चर्चामां रस धरावता केटलाक मित्रोने खूब निराशा ऊपजी छे। तेमां चर्चवामां अवेला मुद्दाओनो जवाब आगल उपर आपवामां आवशे।

प्रस्तुत चर्चाए ऊभा करेला मुद्दाओ उपर आवुं ते पहेलां आ विषय अंगे मारा चिन्तननी जे तात्त्विक भूमिका छे ते प्रथम रजू करुं तो, उपस्थित करवामां आवेला मुद्दाओनो जवाब आपवानुं कार्य वधारे सरल थशे। तेथी मानवीजीवनमां अहिंसानो विचार केम उद्भव्यो अने तेनो विकास पाश्चात्य देशोमां तेम ज आपणे त्यां केवी रीते थयो तेनो आपणे सौथी प्रथम विचार करीए।

अहिंसाविषयक विचारणानी भूमिका

जीवसृष्टिमां निम्नकोटिनां जन्तुओथी मांडीने पंचेन्द्रिय पशु सुधीना जीवो अने मानवी वच्चे मोटो फरक ए छे के मानवीने विचारकुशल एवुं विकसित मन प्राप्त थयुं छे, अन्यना सुखदुःखने समजवा-कल्पवानी तेनामां कल्पनाशक्ति रहेली छे, सारासार विवेक करती तर्कशक्ति-बुद्धिमत्ता तेनामां छे। अने अन्यने सुखी जोईने प्रसन्न थाय अने दुःखी

जोईने द्रवीभूत बने एवुं संवेदनशील हृदय तेने प्राप्त थयुं छे। आने लीधे मानवीमां ए समजण सहज छे के पोताने सुख गमे छे तेवीज रीते अन्य मानवीने सुख गमे छे। पोताने दुःख गमतुं नथी, तेवी ज अन्य मानवीने दुःख गमतुं नथी. पोते इच्छे छे के अन्य मानवी पोता साथे एवी रीते वर्ते छे के जेथी पोताना सुखमां बाधा न आवे अने पोताने तेनाथी कोई दुःख उत्पन्न न थाय। आ विचारणा साथे तेनी बुद्धि तेने कहे छे के जे रीते अन्य मानवी पोता साथे वर्ते एम पोते ईच्छी रह्यो छे ते मुजब पोते पण अन्यनी साथे वर्तवुं घटे छे। बीजी रीते कहीए तो अन्य पोताने अनुकूल होय एम वर्ते अने प्रतिकूल होय एम न वर्ते एवी अपेक्षा अन्य प्रत्ये पोने अनुकूल वर्ताव करवो जोईए अने प्रतिकूल वर्ताव थई न शके एम सहजपणे सूचवे छे। वली समाज साथेनो चालु अनुभव तेने शीखवे छे के समाजमां सामञ्जस्य केलववुं होय तो एक मानवीए अन्य कोई मानवीने पोताना स्वार्थनी खातर पोताना लाभनी खातर कोई पण प्रकारनी ईजा पहोंचाडवी न जोईए, कोईनी प्राणहानि करवी न जोईए कोईने मानसिक कलेश पैदा थाय एम वर्तवुं न जोईए। आ उपरथी सहज फलित थाय छे के आवी समजण उपर जो मानवीमानवी वच्चेनो, भिन्नभिन्न समाजो वच्चेनो, जुदां जुदां राष्ट्रो वच्चेनो संबंध निर्माण थाय, केलवाय तो कोईनो कोई साथे संघर्ष पैदा न थाय, सर्व कोई एकमेक साथे संपी जंपीने रहे। एम थाय तो सर्वत्र शांति स्थपाय अने प्रेमनुं साम्राज्य पेदा थाय। आ छे अहिंसाना सिद्धान्तना पायामां रहेली विचारणा।

आ विचारणा ज्यां ज्यां मानवीसमाज अस्तित्वमां आव्यो छे त्यां त्यां पेदा थई छे, विकसित थई छे अने ते

विचारणाने केन्द्रमां राखीने मानवीसमाज आगल वधतो रह्यो छे । आ विचारणानो पश्चिमना देशोमां पण विकास थयो छे अने भारत जेवा पौर्वात्य देशोमां पण थयो छे । पश्चिममां अहिंसानो विचारणाने खिस्ती धर्मनी मान्यता मांथी चालना मली छे । भारतमां जेमां वैदिक, बौद्ध अने जैन धर्मनो समावेश थाय छे । एवा हिंदु धर्ममांथी चालना मली छे । एकमांथी जेने आपणे पाश्चात्य संस्कृतिना नामथी ओलखीए छीए तेनो विकास थयो छे । अन्यमांथी भारतीय संस्कृतिनो विकास थयो छे । ए बे विचारधारा जे रीते जुदी पडे छे ते रीते त्यां वसती प्रजाना समग्र जीवसृष्टि साथेना व्यवहारमां अने ते प्रत्येना अभिगममां चोक्कस तफावत पड्यो छे ।

हुं नानो हतो अने अंग्रेजी अभ्यासनो में प्रारंभ कर्यो त्यारे अमने शीखववामां आवती अंग्रेजी प्राइमरमां के एवा ज कोई अन्य पाठ्यपुस्तकमां एक वाक्य आवतुं हतुं ते वाक्य हतुं 'Cow has no soul' 'गायमां आत्मा नथी, आ वाक्य मारी समजमां आवतुं नहोतुं, कारण के मारो उछेर ए प्रकारनी मान्यतामां थयो हतो के सर्व सजीव प्राणीमां मानवी जेवो ज आत्मा छे अने तेथी 'गायमां आत्मा नथी. ए वाक्य कशा पण अर्थ विनानुं लागतुं हतुं ।

पण आगळ जातां आ दुनियानी उत्पत्ति अने रचना अंगे खिस्ती धर्मनी मान्यतानी खबर पडी त्यारे उपरना वाक्यनो अर्थ समजायो । खिस्ती धर्म मुजब ईश्वरे पहेलां आचराचर सृष्टि पेदा नो करी अने पछी मानवीने पैदा कर्यो अने तेमां पोतानी पवित्र चेतनाने अंश दाखल कर्यो । आ रीते मानवी ए ईश्वरनुं खास सर्जन — Special creation लेखायुं अने ए उपरथी एम फलित करवामां आव्युं के आ पृथ्वी उपरनी सर्व संपत्ति,

चराचर जीवसृष्टि —आ बधुं ईश्वरनुं जे विशिष्ट सर्जन छे ते मानवीना उपयोग माटे छे। मानवी तेनो स्वामी छे अने पृथ्वी तेनी मिलकत छे। एमां रहेला जीवोमां कोई आत्मा जेवुं तत्त्व नथी अने जड द्रव्य माफक ज तेनो उपयोग तथा उपभोग थई शके छे। समयना वहेवा साथे ख्रिस्ती धर्मनी आ मान्यता विषे जनतानी श्रद्धा डगमगवा लागी सुप्रसिद्ध विज्ञानशास्त्री डार्वीने पशुओनी भिन्नभिन्न कोटिओ अने तेमांथी उत्क्रान्त थयेला मानव प्राणीनी कोटि अंगे उत्क्रान्तिवादनो नवो सिद्धान्त जगत आगळ रजू करीने सृष्टिनो उद्भव अने रचना अंगेनी ख्रिस्ती धर्मनी मान्यताने खोटी पाडी, उथलावी नाखी। आम छतां पण मानवीथी इतर जीवी पशुसृष्टिने उपभोग अने उपयोगनुं साधन मानती एवी जे मूळ दृष्टि हती ते त्यांनी प्रजामां कायम रही। आ लेखना आरंभमां जे अहिंसानी विचारणमां रजू करवामां आवी छे ते विचारणा ख्रिस्ती धर्मना Ten Commandments मां स्पष्टपणे जोवामां आवे छे अने पछी पण ए दश आज्ञाओ द्वारा सुचवायेला नैतिक धोरण उपर ज मानवीना सामाजिक आचार-व्यवहारनुं पश्चिमना देशोमां घडतर थतुं रह्युं छे, पण ए बधु एटले के 'दान, दया, सेवा, विश्वबंधुत्व, प्रेम, उदारता, अहिंसा, शील वगेर ख्यालो मानवसमाज पूरता सीमित रह्या छे। पशुओ विषे दया, अनुकंपानां दृष्टांतो त्यांना जीवनमां छूटां-छवायां मळे छे। पण सामान्यतः पशुओने उपभोग तथा उपभोगना साधन तरीके ज लेखवामां आव्यां छे।

भारतीय दृष्टि अने तत्फलित विचारधारा आथी जुदी पडे छे। जेवो फरक पाश्चात्य संस्कृतिमुजब पशुसृष्टि अने मानवसृष्टि वच्चे कल्पवामां आव्यो छे तेवा कोई फरकने भारतीय दर्शनमां स्थान नथी। जेवो आत्मा मानवीना शरीरमां

वास करी रह्यो छे तेवो ज आत्मा गाय, भेंस, कीडी मंकोडीना शरीरमां वास करी रह्यो छे। आ हिंदु धर्म पायानी मान्यता रही छे। आम बनवानुं एक विशेष कार छे। कर्मनो सिद्धांत अने कर्म मुजब एक योनिमांथी अ योनिमां संक्रमण अने भवभ्रमण – आ मान्यता हिंदु मानस कंई काळथी सींचाती रही छे।

ए कारणे कर्मवशात् पोताने आजे जे मानवदेह मल छे ते गतभवमां के आगमी भवमां कोई पशुनो देह पण होई श छे। आवी कल्पनानो तेना चित्त उपर संस्कार जडायेलो हो छे। आना परिणामे खिस्तीओ अने पाश्चात्यो मानवी अ पशुने जेम केवळ अलग गणता आव्या छे अने पशुओ प्रत तेमनो वर्ताव केवळ उपयोग अने उपभोगनो रह्यो छे तेवं पायानो कोई भेदभाव मानवी अने पशु वच्चे हिन्दु मानस अने भारतना विचारघडतरमां आ हिन्दु मानसनुं ज प्रभुत्व आज सुधी कायम रहेलुं होई ने हिन्दुमानसने भारतीय मानस तरीके ओळखावीए तो आ भारतीय मानसे कदी चिन्तव्यो नथी। समयान्तरे भारतना क्षेत्र उपर जैन धर्म अने बौध धर्मनो उदय थयो अने ते साथे सजीव सृष्टिनुं क्षेत्र मानवी तथा पशुसृष्टिथी आगळ लंबाई ने वनस्पति सुधी अने तेथी पण आगळ जई ने पृथ्वी, जळ, तेज तथा वायु सुधी लंबायुं अने आ बधा जीवोमां विकसित के अविकसित दशामां आत्मतत्त्व रहेलुं छे एवी मान्यतानो प्रचार तेम ज स्वीकार थयो अने तेना परिणामे अहिंसानुं—करुणानुं—अनुकंपानुं क्षेत्र पण मानवी अने पशुसृष्टिने वटावीने झीणामां झीणा जीवजन्तु सुधी अने त्यांथी आगळ चाली ने वनस्पति सुधी विस्तृत बन्युं। आजना हिन्दुनो–भारतीयनो–खानपानो व्यवहार गमे ते होय, पण तेनी भावना जीवमात्रनुं

भलुं चिन्तववानी रही छे। तेनी करुणा भूतमात्रने आवरी ले छे।

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति।

'सर्व भूतप्राणीने जे पोतासमान जुए छे ते ज साचुं जुए छे।' आ सूत्र तेना समग्र चिन्तनने वरेलुं छे। तेनी प्रार्थना-ज्यारे पण ते प्रार्थना करे छे त्यारे-नीचे प्रमाणे होय छे :

सर्वेत्रसुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः॥
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

आवो ज बीजो प्रार्थनाश्लोक छे :

सत्त्वेषु मैत्रि, गुणिषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापटत्वम्।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ
सदा ममास्तु विदधातु देव॥

खामेमि सव्व जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई॥

ए प्रकारनी जैन उक्ति बहु जाणीती छे।

आवो ज एक सुप्रसिद्ध श्लोक एक जैन स्तोत्रमां जोवामां आवे छे :

शिवमस्तु सर्वजगतः
परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु नाशं,
सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकाः॥

आ शुभ भावना मात्र मानवसमाज पूरती नहि पण समस्त भूतगणने कल्पनामां समावीने चिन्तववामां आवी छे

ज्यारे पाश्चात्य दृष्टि आपणे उपर जोयुं तेम मात्र मानव-समाज पूरती ज सीमीत रही छे। आ तफावतनुं परिणाम पशुसृष्टि साथेना ते ते समाजना व्यवहारमां जुदुं जुदुं आव्युं छे। युरोप आदि पाश्चात्य देशोए पशुसृष्टि साथे केवळ उपयुक्ततानी दृष्टिए व्यवहार कर्यो छे। आ उपयुक्तता खानपानने लगती होई शके छे। वैदकीय होई शके छे, चालु वपराशनी चीजोने लगती होई शके छे, व्यापारने लगती होई शके छे, तेम ज मनोरंजनने लगती होई शके छे। आवा कोई पण हेतु खातर ए प्रजाए उपयोगी जानवरने पाळ्यां छे, अने ए ज हेतु ध्यानमां लईने पशुओने अपार ईजा पहो-चाडी छे, तेम ज तेमनो अमाप वध पण कर्यो छे। अने एम करतां तेणे कशो आंचको अनुभव्यो नथी। आम करवुं ए तेमनी उपरना पोताना अधिकारनी बाबत छे। एम समजीने आवो प्रक्रियाने तेणे तद्दन व्याजबी लेखी छे।

भारतमां पण पशुसृष्टि साथे उपयुक्ततानी दृष्टिए कदी कशो व्यवहार करवामां आव्यो नथी एम कदी कही न ज शकाय। आवडो मोटो देश, भिन्न भिन्न प्रकृति अने वल-णवाळा लोको, वळी प्रजामांना केटलाक वर्गो मांसाहारी, पाशव प्रकृतिथी प्रेरित थवो प्रजानो घणो मोटो समुदाय, वळी धर्मना नामे यज्ञमां तेम ज देवीओ समक्ष कंई कंई स्थळे चालती पशुओनां बलिदान आपवानी प्रथा, मानवी-समाजनी केटलीये जरूरियातो माटे पशुओनो एक या बीजी रीते थतो निष्ठुर उपयोग—आ बधाना कारणे भारतमां पण पशुओनो पारविनानो वध थतो रह्यो छे। अने तेमना उपर भातभातनो त्रास गुजरतो रह्यो छे। एम छतां सर्व जीवो साथे आत्मोपम्यनी भावनानां बीज भारतीय मानसमां पडेलां होईने पशु साथेना तेना व्यवहारमां जेम उपयुक्ततानी

वृत्ति जोवामां आवे छे। तेमज तेमां करुणाना-अनुकम्पाना एवा अंशो जेवामां आवे छे के जे अन्य देशोमां भाग्ये ज नजरे पडे छे। दा. त. निरामिषाहारनी देशव्यापी परंपरा। एक काळे आपणा देशमां अन्य देशो माफक सर्वत्र मांसाहार व्यापेलो हतो। समयान्तरे खेतीनी शोध थई अने अनाजनां वावेतर देशभरमां थवा लाग्यां। परिणामे मांसाहारमांथी अन्नाहार तरफ लोको ढळवा लाग्या। साथे साथे मानवीमां अने पशुमां एकसरखो जीव छे. अेक ज आत्मतत्व छे. तेनामां आपणा जेवी चेतना छे, सुखदुःखनुं संवेदन छे, तो तेमने आपणा आहारनो विषय केम बनावाय ? आ प्रश्न देशना चिन्तको समक्ष रजू थयो मानवीमानसमां रहेली करुणावृत्ति पशुसृष्टि तरफ अभिमुख बनी, सतेज थई। मांसना विकल्पमां मळतां अनाज, कठोल, फळ, शाक वडे जीवननिर्वाह शा माटे न करवो ? आवी एक प्रबल विचारधारा शरू थई। देशना इतिहासनी रंग-भूमि उपर जैन धर्म अने बौद्ध धर्मनुं आगमन थयुं। ते बन्नेए दयानी-करुणानी भावनाने उत्तेजन आप्युं। जैनधर्मे निरामिषाहार उपर खूब भार मूक्यो। वैदिक विचारसरणी उपर आ बन्ने धर्मनो खूब प्रभाव पड्यो अने तेना अनुयायीओमां पण निरामिषाहारनो प्रचार थतो चाल्यो।

आ ज दृष्टि लईने केटलाक एथी पण आगळ चाल्या अने पोताना चालु जीवनने बने तेटलुं अहिंसक एटले के हिंसामुक्त बनाववुं ए प्रकारनी जीवनसाधना तरफ तेओ ढळ्या। तेओ निरामिषाहारी तो हता ज पण एटलाथी तेमने सन्तोष न थयो। तेओ वनस्पतिने पण सजीव मानता हता। तेथी तेनो पण सर्वथा नहि तो शक्य तेटलो त्याग करवा लाग्या। खानपानमां अहिंसानी दृष्टिए संयम

तपश्चर्या, उपवास आ बधी प्रक्रियाओए तेमना जीवनमां महत्त्वनु स्थान प्राप्त कर्यु ।

आ उपरान्त भारतीय जीवनमां गोरक्षा पांजरापोल, पारेवाने चण, कूतराने रोटला, कीडी माटे कीडीयारुं पूरवु, सर्पने पण दूध पावु, आवी अनेक प्रवृत्तियो आजे ज्यां त्यां जेवामां आवे छे। ते भारतीय मानसमां रहेली पशुओ प्रत्येनी समभावनी करुणानी द्योतक छे। आ बधु ध्यानमां लेतां भारतीय जीवन उपर अहिंसाना तत्त्वनी अने तेना परिणाम रूप पशुदया अने निरामिषाहारनी अत्यन्त घेरी छाप पडेली छे। ए हकीकतनो ईन्कार थई शके तेम नथी । अने आ रीते भारतीय संस्कृति अन्य देशोनी संस्कृतिथी जुदी पडे छे, अने तेने अहिंसक एवा सार्थक विशेषणथी तारववा आवे छे।

आम ज्यारे भारतीय संस्कृतिने 'अहिंसक' शब्दथी हुं बिरदावु छुं त्यारे वत्सलाबहेन ते सामे पडकार करे छे। अने पोताना जवाबमां भारतनो इतिहास केवी रीते हिंसक प्रथाथी खरडायेलो छे अने केव युद्धो वडे कलङ्कित थतो रह्यो छे तेनी केटलीक विगतो रजू करे छे अने देवी सामे आपतां निर्दोष पशुओनां बलिदानो, सती थवानो रिवाज, दीकरीने दूध पीती करवानी प्रथा, आवा केटलाक दृष्टान्तो आगळ धरे छे। अने आवी दुष्टता तो बीजा कोई पण देशना जीवनमां जोवाजाणवा मळती नथी। एम जोरशोरथी जणावे छे। आम भारतने हिंसानी पण परा कोटिए पहोंचेलो वर्णववामां श्री वत्सलाबहेन राचे छे । आनी सामे हवसीयो सामे पश्चिमना देशोए गुजारेला कल्पनामां न आवे एवा अत्याचारो, धर्मना नामे अनेक माणसोने जीवता बाळी मूक्यानी घटनाओ, त्यांना इतिहासमां उत्तरोत्तर वधारे भयानक अने खूनरेंजीथी भरेलां पार विनानां युद्ध रजू करी शकाय तेम छे। आभां

कोण चडियातु अने कोण उतरतु ए कहेवु मूश्केल छे। भारतना भागला पड्या त्यारे आपणा भारतवासीओए जे पाशवतानु दर्शन कराव्युं हतु, स्त्रीओ उपर अत्याचारोनी जे अनेक घटनाओ बनी हती तेनी जोड कदाच अन्यत्र नहि मळे। तो बीजी बाजुए एटम बम्बथी हीरोशिमा अने नागासाकीमां वसती प्रजानी जे मोटा प्रमाणमां सामुदायिक कतल करवामां आवी छे ते तो हजु अद्वितीय ज रही छे। आम अन्यत्र तेम ज अहीं अनेक युद्धकांडो रचाया छे अने समये समये धर्मना नामेस माजना नामे पार विनाना अत्याचारो थया छे। आमां भारत कोई अपवाद नथी। पण आ बधुं होवा छतां भारतमां बुद्ध, महावीर, गांधी जेवा जे कोटिना महापुरुषो पाक्या छे, अहीं जे अहिंसा मूलक विचारसरणी उत्तरोत्तर विकसती रही छे, अहिंसानी जे सुदीर्घ उपासना चालती आवी छे, तेना फलस्वरूप निरामिषाहार पूर्वकनो जीवनपद्धतिनो जे व्यापक प्रचार अने सामुदायिक स्वीकार थतो रह्यो छे, अहिंसाने केन्द्रमां राखीने जीवनसाधना करनारा अनेक श्रमणसंघो निर्माण थया छे, मांस तो शुं पण नाना जीवजन्तुनी विराधना न थाय, वनस्पतिना जीवने पण न दुभावाय एवी जागृतिपूर्वकना जीवनव्रतने वरेला अनेक मुनिपुंगवो समये समये अहीं विचरता रह्या छे, पशुओना जीवने बचाववा माटे पोताना जीवनने होडमां मूकनारा अनेक महानुभावो पाक्या छे—भारतनो आ विशेषता अन्य कोई पण देशना इतिहासमां ते सामाजिक जीवनमां जोवा मळे तेम छे ज नहि। वत्सलाबहेनने देशमां अने समाजना जीवनमां बधे हिंसा, हिंसा अने हिंसा ज देखाय छे, पण आ भीषण अरण्यमां अनेक मीठी वीरडीओ समान अहिंसानो न नानीमोटी निर्झरणीओ वही रही छे अने तेमांथी भारतनी

प्रजा जे संजीवन अमृतनुं पान करी रही छे. तेनी श्री वत्सलाबहेनने झांखी सरखी पण थती नथी। उपर जणावी तेवी विशेषतावाळी भारतीय संस्कृतिने अन्य देशोनी संस्कृतिथी तारववी होय तो ते मात्र 'अहिंसक, विशेषणथी ज तारवी शकाय तेम छे।

आ छे भारतने अनुलक्षीने रजू करवा धारेली अहिंसा विषयक विचारभूमिका।

वैज्ञानिक अने वैद्कीय संशोधन अंगे थती हिंसानो पण कंईक आवी रीते विचार करवो घटे छे। अहिंसा तरफ मोढुं राखवुं अने चोतरफ हिंसाथी वींटळायेला रहेवुं-आवी आपणी आजनी कोई विचित्र-परस्परविरोधी-परिस्थिति छे। मानवसमुदाय वच्चे आपणे बेठा छीए अने तेने अनुलक्षीने तरेहतरेहनी हिंसा आचरवामां आवे छे। व्यक्तिगत कारणे आपणे शक्य होय तो एक पण जीवनी प्राणहानि न करीये, पण सामुदायिक जीवनमां आ शक्य नथी।

आ समुदायलक्षी हिंसा नीचे जणाव्या मुजब त्रण प्रकारमां वहेंची शकाय :—

पहेलो प्रकार अनिवार्य हिंसानो; ज्यां जनसमुदायनां सुख अने स्वास्थ्य तथा कल्याण अर्थे अमुक हिंसा थती होय। दा. त. खेतीने नुकसान करतां जीवजन्तु अने कीडाओनो नाश कर्या सिवाय चालेज नहि। मेलेरियाना उपद्रवथी जे प्रदेशमां वसता लोको खूब हेरान थता होय ते प्रदेशने आजनां वैज्ञानिक साधनो वडे मच्छरोथी मुक्त करवो ज रह्यो। चित्तो, वाघ, सिंह केएना जेवां हिंसक प्राणीओथी त्रासेला गामलोकोने ए प्राणीओनो नाश करीने बचाववा ज रह्या। आवी हिंसा थती जोतां अथवा अधिकारवशात् तेवी जवाबदारी पोतानां माथे आवतां अहिंसानो उपासक

ऊंडुं दुःख अनुभवे ए स्वाभाविक छे। एम छतां आवी हिंसा तेणे कर्तव्यनी दृष्टिए करवी, कराववी या अनुमत करवी ज रही।

बीजो प्रकार सहेतुक हिंसानो आपणे निरामिषाहारी होईए, एम छतां आपणी साथे एक ज शहेरमां वसता बीजा केटलाक लोको मांसाहारी होय तो अने मांसाहार माटे तेमनो आग्रह होय तो, तेमना माटे पशुओनी कतल अनिवार्य बने छे। आवी रीते कतल थती जाणीने आपणुं दिल जरूर तीव्र व्यथा अनुभवे छे' आम छतां ज्यां सुधी मांसाहारीओनां दिलनुं परिवर्तन न थाय त्यां सुधी आ पशुहत्याने आपणे नभाववी ज रही। आवो ज रीते वैज्ञानिक संशोधन पशुहिंसा साथे अनिवार्यपणे जोड़ायेलुं छे। आने लगतुं शिक्षण पण आवी हिंसानी मदद सिवाय अधूरुं लागे छे। आनी साथे मानवजातना स्वास्थ्यनो प्रश्न पण संकळायेलो छे। वळी आना लाभो पण कोई जता करवा मागतुं नथी। दुनियामां आ एक एवी परिस्थिति सरजाणी छे के जे पेदा करवामां आपणा सर्वनो सीधो के आडकतरो साथ छे अने जेथी मुक्त रहेवुं आपणा माटे शक्य नथी. आ परिस्थितिमां वैज्ञानिक संशोधनो साथे वांदरा वगेरे प्राणीओनी हिंसाने पण, अत्यन्त दुखाता दुखभाता मने आपणे नभाववी ज रही काकासाहेबना शब्दोमां 'दरगुजर करवी' रही. अने आ विचारणा बरोबर होय तो परदेशी हुंडियामण उपार्जन अर्थे नहि पण केवळ वैज्ञानिक संशोधन माटे जरूरी होय एटली ज अने सरकारी नियंत्रणपूर्वकनो वांदरानी निकास करवामां आवे तो तेनो विरोध आजनी वास्तविकता साथे सुसंगत नथी एटलुं आपणे कबूल करवुं ज रह्युं। केवळ हुंडियामणना उपार्जन अर्थे करवामां आवती वांदरा के अन्य प्राणीओनी निकासनो

प्रश्न आगळ उपर चर्चाई गयो छे अने तेथी तेनुं अहीं पुनरावर्तन करवानी जरूर नथी।

आ संबंधमां काका साहेबनुं वक्तव्य दिशासूचक छे। तेमणे पोताना लेखमां जणाव्युं छे केः—

"उपयुक्ततावादनो आश्रय लईने वांदराओ उपर वैज्ञानिक प्रयोगो करीने अनेक रोगो उपर दवा शोधी काढवी ए विचारनो अने प्रवृत्तिनो बचाव हुं न ज करुं। कोई पण प्राणीने मारवानो आपणने हक्क नथी। प्राणीहत्या धर्मनी दृष्टिए पाप छे। कुदरतनी दृष्टिए गुनो छे ए विषे मारा मनमां लगीरे शंका नथी। पण मारो विचार हुं बीजा उपर लादी न शकुं, अने ज्यां आहारने अर्थे प्राचीन काळथी आज सुधी वर्षे लक्षावधि जानवरोनी हत्या आपणे दरगुजर करीए छीए त्यां, विज्ञानना विकास माटे अने रोगोनो इलाज शोधवा माटे वांदराओने मारवानी प्रथा सामे आपणे निश्चित मत शी रीते आपी शकीए ?",

मारा मननुं वलण अने मारा मननी मूझवण पण आ प्रकारनी छे।

त्रीजो प्रकार बिनजरूरी मनस्वी हिंसानो :—

ज्यां प्राणीओ उपर, उपर जणावेल एक या बीजा कारणसर नहि पण केवळ मनस्वीपणे अथवा तो मारवाना आनंद खातर हिंसा थती होय अथवा प्राणीओ उपर घातकीपणुं गुजारवामां आवतुं होय दा. त. शिकार अर्थे अथवा तो मनोरंजन अर्थे थती पशुहिंसा – आवी हिंसा अहीं सूचित छे। आने जैन परिभाषामां 'अनर्थदंड' शब्दथी वर्णववामां आवे छे। अनर्थदण्ड एटले कारण विना कोई पण जीवने दंड आपवो। धर्मना नामे पशुओनां

बलिदान आपवामां आवे छे ते एक रीते सहेतुक होइने तेनो बीजा प्रकारमां समावेश थई सके, पण ते केवळ अज्ञान अने अंधश्रद्धाथी प्रेरित होईने अने ते पाछळ मानवीना कोई उपयोग के उपभोगनो हेतु न होवाथी आवी हिंसानो आ त्रीजा प्रकारमां समावेश करवो वधारे योग्य लागे छे। आवी स्वच्छन्दप्रेरित अथवा तो अज्ञान के अन्धश्रद्धाप्रेरित हिंसानो सतत विरोध थवो घटे छे अने तेनो सर्वत्र अटकायत थवी घटे छे।

आम समाजना सुख, स्वास्थ्य खातर अनिवार्य एवी निम्न कोटिना जीवोनी हिंसा विषे अनुकूळभाव अथवा अविरोधभाव, मांसाहार तथा वैज्ञानिक संशोधन अर्थे थती हिंसा भारे अनर्थपूर्ण होवा छतां जेनो जड विशाळ मानवसमाजमां घणी ऊंडो अने अति व्यापक छे अने जेनो लोकोनी अमुक जरूरियात अथवा तो सुखस्वास्थ्य साथे संबंध कल्पायेलो छे एवी हिंसा विषे, ज्यां सुधी लोकमानसमां मोटो पलटो न आवे त्यां सुधी, दरगुजर भाव अने जेनी पाछळ केवळ क्रूरता अने निष्ठुरता रहेली छे एवी हिंसापछी ते मनोरंजन अर्थे होय के धर्मना नामे प्रचलित होय-ते सामे प्रतिकूळ भाव-विरोधभाव-आ रीते समुदायलक्षी व्यापक हिंसा संबंधे जनसमुदाय वच्चे रहेता-विचारता अहिंसालक्षी मानवीए विवेक चिन्तववो रह्यो अने तदनुसार पोतानुं वर्तन अने व्यवहार नक्की करवा रह्या।

वैद्यकीय संशोधन अंगे आजे पश्चिमना देशोमां चाली रहेली पशुहिंसा संबंधमां श्री दलसुखभाई मालवणिया पोताना लेखमां जणावे छे के "आपणा देशनी वैद्यक परंपरानो इतिहास तपासतां एम जणाय छे के प्राचीन ग्रन्थोमां मांसद्वारा चिकित्सा अत्यंत प्रचलित हतो। पण काळक्रमे

भारतीय जीवनमां जेम जेम अहिंसानो सूक्ष्म-सूक्ष्मतर-सूक्ष्मतम विचार थतो गयो अने जीवनमां ए अहिंसाना विचारने उतारनारा महापुरुषो पाकता गया तेम समाज अने व्यक्तिना जीवनमांथी विविध क्षेत्रे जे हिंसा प्रवर्तमान हती ते क्रमे करी ओछी थती गई अने परिणामे मांसचिकित्साने बदले काष्ठौषधि जेवी निरवद्य चिकित्सानो प्रयोग शरू थयो हतो अने बृहद् विकास थयो हतो अने थयो छे, अने आजे तो देशी वैद्यकमां ए ज प्रचलित छे अने मांसनो प्रयोग कोई जाणतुं के करतुं जाणमां नथी ते वैद्यकना ग्रन्थो जोवाथी स्पष्ट थाय छे।"

प्राचीन काळमां मांस द्वारा थती चिकित्सा केवा प्रकारनी हती तेनी मने कशी खबर नथी। आ संबंधमां तेमणे उपरना फकरामां रजू करेली विचारसरणी आपणा भारत पूरती बरोबर होय एम लागे छे, पण पश्चिमना देशोमां मांस अने वनस्पति वच्चे आवो कोई भेद कदी विचारायो नथी। आपणा देशमां मुसलमानोना आगमन पछी आयुर्वेद साथे प्रचलित बनेली युनानी पद्धतिमां पण आवो कोई भेद जळवायो ज नथी। पश्चिमना देशोमां पशुओनी अने प्राणीओनी हिंसा द्वारा जीवसृष्टिने लगतुं विज्ञान आपणी कल्पनामां न आवे एटलुं आगळ वधी गयुं छे अने तेमांथी अति महत्त्वनुं एवुं जन्तुशास्त्र पेदा थयुं छे अने ते बन्ने द्वारा मानवी स्वास्थ्य साधक अनेक शोधो थई छे अने ते अंगे आपणी सूझ अने समजणमां पण खूब वधारो थयो छे अने आ प्रकारनुं संशोधन अने शिक्षण आपणा देशमां चोतरफ फेलाई रह्युं छे। मांसाहारी सामे निरमिषाहारनो विकल्प जेम रजु करी शकाय छे तेम अद्यतन वैद्यकीय संशोधन माटे पशुहिंसा सिवाय आज वैज्ञानिकोने बीजो विकल्प देखातो नथी। ए जाणीने आश्चर्य थशे के आयुर्वेदनां औषधोनुं संशोधन पण

हवे पशुओ उपरना प्रयोगो द्वारा करवामां आवे छे।, एम. एससी. थयेला एक जैन विद्यार्थीने हुं जाणुं छुं। ते पी. एच. डी माटे एक महानिबंध-थीसीस तैयार करी रहेल छे। ते माटे तेणे अमुक आयुर्वेदिक औषधो (दा. त. अरडूसी) ना संशोधननो विषय पसन्द कर्यो छे। आ संशोधन तेना जणाववा मुजब, जीवता कूतराओ उपरना प्रयोगो द्वारा ते करी रहेल छे। आवी स्थिति प्रवर्ते छे त्यां, वैज्ञानिक प्रयोगो माटे ज्यां सुधी अहिंसक विकल्प क्षितिज उपर ज न देखाये त्यां सुधी, अद्यतन वैज्ञानिक तेम ज वैद्यकीय संशोधन आजे चालती घोर हिंसाना पातकथी मुक्त थई शकवानुं नथी। आजनी आ वास्तविकताने आपणे यथास्वरूपे समजी लेवानी जरूर छे। आ अंगे आजे जे कांई हिंसा चाली रही छे तेने अहिंसाधर्मना नामे जोरशोरथी वखोडी नाखवाथी ते हिंसा अटकवानी नथी।

आम आपणे आहार तेम ज वैद्यकीय संशोधन, शिक्षण अने उपचार अंगे थती अनर्गळ पशुहत्यानो, आजनी वास्तविक परिस्थितिने ध्यानमां लईने विचार कर्यो, चर्चा करी, पण ते उपरथी एम कोई न समजे के आ बधी हिंसा कुदरतना स्वाभाविक क्रममां छे अने तेना कोई प्रतिकूळ प्रत्याघात आपणा जीवन उपर पडता नथी। उलटुं आ रीते स्वास्थ्य खरीदनार मानवीसमाज तेनुं बहु मोटुं मूल्य चूकवी रह्यो छे। हिंसा करवाथी हिंसक वृत्ति केळवाय छे अने ते वृत्ति मात्र पशुसृष्टि पूरती सीमित रहेती नथी, पण मानवसमाज अंदर अंदर पण ते वृत्तिनो भोग थई पडे छे। जो एक बाजुए आहार, विज्ञान अने वैद्यकना नामे पशु-प्राणीओने चीभडां माफक चीरवामां आवे छे तो बीजी बाजुए मानवसमाजमां हिंसानां पहेलां कदी नहि सांभळेलां एवां तांडवो

स्थळे स्थळे निर्माण थतां जोवा तेम ज सांभळवामां आवे छे। आजनो मानवी प्राकृतिक समधारण गुमावतो जाय छे। निर्घृण, असहिष्णु, केवळ स्वलक्षी, घातकी बनी रह्यो छे, अने आजना युद्धमां पहेलां कदी नहि जाणेली के जोयेली एवी मोटा पायानी खुवारी अने जंगलीपणुं जोवामां आवे छे। जोतजोतामां एक या बीजा कारणे, एक या बीजा स्थले नानी नानी बाबतोमां संघर्षो पेदा थाय छे अने मानव-समुदाय एकाएक मगज गुमावे छे, तोफाने चढे छे अने परिणामे जानमालनो पुष्कळ खुवारी थवा पामे छे। जो आजनो मानवसमाज एक बाजुए आहार निमित्ते, संशोधन निमित्ते वैद्यकीय उपचार निमित्ते बे लगाम बनीने पशुप्राणोनी अनर्गळ हिंसा करी रह्यो छे, ते प्रत्ये दया, करुणा के अनुकंपानी लागणीने साव बुठ्ठी बनावीने बेठो छे अने एम करीने पोताना सुखमां सगवडमां, स्वास्थ्यमां तेणे केटलो बधो वधारो कर्यो छे ए विचारे मनमां मलकाई रह्यो छे, तो बीजी बाजुए आखा मानवसमाजनुं निकंदन नीकळी जाय एवी शक्यता अणुबोंबना आकारमां तेणे पनोते ज ऊभी करी छे। आ ज विचारने राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबुए ता. १-८-६१ ना प्रबुद्ध जीवन' मां प्रगट करवामां आवेल तेमना व्याख्यानमां वनस्पत्याहारना समर्थनने अनुलक्षीने बहु वेधक रीते रजू कर्यो छे। ते व्याख्यान दरमियान तेओ जणावे छे के :—

"माणसनो खोराक अने बीजी जरूरियातोने पूरी पाडवाना हेतुथी आजे हजारो अने लाखो जानवरो कतल करवा माटे उछेरवामां अने हृष्टपुष्ट करवामां आवे छे। वैद्यकीय विज्ञान पण जुदी जुदी रीते पार विनानां पशुओने कापवा अने रिबाववा माटे जवाबदार छे, अने तेथी जेम जेम आपणे सभ्यतामां प्रगति करता रह्या छीए तेम तेम कोई पण

जीवनी जिंदगी माटेनो आपणो आदर घटतो ज गयो छे।
पनो अर्थ ए थयो के जो माणस अन्य पशुओ करतां चडि-
यातो होई ने पोतना हेतु माटे तेनुं शोषण करी शके छे
अने तेनो जीव पण लई शके छे तो ते पछीनुं स्वाभाविक
पगलुं ए होवानुं के वधारे बळवान मानवीने के प्रजाने
वधारे नबळा मानवी, जाति के प्रजानुं शोषण करवामां अथवा
तो तेने नाबूद करवामां जरा पण अनौचित्य के अघटितपणुं
नहि लागे। आजे आ ज वस्तुस्थिति नीपजी रहे छे अने
एकना भोगे बीजानुं जीवनधोरण ऊंचे लाववुं जरूरी छे
एवा ख्याल उपर एक देशना लोकोनी अन्य देशना लोकोना
हाथे चाली रहेली शोषण-प्रक्रियाना मूळमां पण आ ज
मनोदशा काम करी रही छे।

"हजु थोडा समय पहेलां लडाई दरमियान अने बन्ने
पक्षना सैनिको वच्चे मानवजीवननो कारण विना नाश करवा
सामे प्रतिबंधो हता, पण ते ख्याल हवे जूनवाणी बनी गयो
छे। अने आजे माणसना हाथमां आवेलां सामुदायिक
संहारनां शस्त्रोना परिणामे आखी मानवजात विनाशना
आरे ऊभी छे। वनस्पत्याहारनी वातमांथी अणुबांब के
हाइड्रोजननी वात सुधी पहोंचवुं ए कोई ने वधारे पडतुं
लागशे। पण आप जो यथार्थ रीते विचारशो तो आपणे
हाइड्रोजन बांबथी बचवुं हशे तो आखरे वनस्पत्याहारने
स्वीकार्या विना चालशे नहि। जीवनने समग्रपणे अने पर-
स्परना संदर्भमां विचार करीशुं तो व्यक्तिनो खोराक अने
अन्य प्रत्येनी वर्तणूक वच्चे रहेला संबंधनुं आपणने
साचुं भान थया विना नहि रहे अने एम तर्कबद्ध रीते
विचार करतां-अने आमां कशुं तरंगीपणुं छे ज नहि-आ-
पणने एवा निर्णय उपर आव्या सिवाय छूटको ज नथी के

हाइड्रोजन बोंबथी बचवुं होय तो तेनो एक ज उपाय छे के जे मानसमांथी हाइड्रोजन बोंब पेदा थयो छे ते मानसथी बचवुं अने तेवा मानसथी बचवानो अेकमात्र उपाय छे सर्व जीवो माटे, सर्व आकारमां अने सर्व संयोगमां प्रगट थती जीवनचेतना प्रत्ये आदर केळववो ते, आनुं बीजुं नाम छे वनस्पत्याहारनो समादर।"

आ विचार जेटलो मांसाहारने लागु पडे छे तेटलो ज वैज्ञानिक संशोधनना नामे थती प्राणीहिंसाने लागु पडे छे। आजनो मानवी अनेक जीवोना भोगे असाध्य रोगोमांथी बचवा, आयुष्यनी सरेरास मुदत लंबाववा, आरोग्य प्राप्त करवा नीकळ्यो छे अने जरूर ते असाध्य रोगोथी बची रह्यो छे, तेना आयुष्यनी सरेराश मर्यादा वधी रही छे अने तेनुं आरोग्य वृद्धिंगत थतु रह्युं छे, पण साथे साथे तेनामां रहेलो मानव हणातो जाय छे, करुणा अने अनुकंपानी कोमळ लागणीओ छूंदाती जाय छे, अल्प शक्तिवाळां मानवीमांथी असाधारण शक्तिवाळो मानवी पेदा थई रह्यो छे अने आज सुधी ते अन्यने हणीने पोते आगळ वधी रह्यो हतो; आजे हवे पोते पोतानी जातनुं निकंदन काढवा उद्यत थयो छे। तेने आरोग्य मळ्युं, मरतां मरतां बच्यो, आयुष्य वध्युं, पण तेना जीवनमांथी शांति, स्वस्थता, प्रसन्नतातो, एटलुं ज नहि पण परस्पर कुणापणाना भावनो लोप थई रह्यो छे।

आ दुस्थितिमांथी तेणे ऊगरवुं होय तो, आ विषमय चक्रमांथी तेणे बहार नीकेळवुं होय तो, तेणे पोताना व्यक्तिगत तेम ज सामुदायिक जीवनमांथी लुप्त थयेली अहिंसानी पुनः प्रतिष्ठा करवी पडशे, समग्र जीवन विषे समादर केळववो पडशे, येन केन प्रकारेण शारीरिक सुख अने

स्वास्थ्यना उपायो अधिकाधिक करवानी तृष्णा उपर अंकुश मूकवो पडशे । 'आ रीते प्राप्त थतुं सुख के स्वास्थ्य अमने नथी खपतुं ।' आवो व्यक्तिगत तेम ज सामुदायिक निर्धार करवो पडशे अने ते निर्णयने अमली बनाववा माटे तत्काळ देखता लाभो जतो करवा पडशे । आजनी मनोदशामां आ शक्य न होय ए जुदी वात छे । टूंकाणमां केवळ उपयुक्तता उपर आधारित जीवनने करुणाविचार वडे परिमार्जित, प्रभावित करवुं पडशे, नियंत्रित करवुं पडशे ।

आ रीते विचारतां, जो के आजनी दुनियानो झोक उपयुक्तता तरफ छे अने भारत पण पोतानी संस्कृतिमां रहेला सर्व जीवसमभावना बुनियादी अंगनी सर्वथा उपेक्षा करीने उपयुक्तता तरफ ढळतुं जाय छे, अने अन्य जीवन मूल्योनी अवगणना करीने केवळ भौतिक उत्कर्षनी साधना उपर पोतानुं लक्ष अने ताकात केन्द्रित करी रहेल छे । एम छतां पण, आजना व्यापक विसंवादथी शीर्णविशीर्ण बनेली दुनियानो भाग अहिंसानो छे, करुणानो छे, अनुकंपानो छे, तेनो तरणोपाय अहिंसा छे । केवळ उपयुक्ततानो राह माणसजातने राक्षस बनावशे । उपयुक्तताना आ घातक परिणाममाथी बचवुं होय तो माणस जाते अहिंसाभिमुख बनवुं पडशे । उपयुक्ततानी वृत्तिने करुणाविचारथी संयमित-नियंत्रित बनाववी पडशे । आम करवा माटे, ज्यारे दुनिया उपयुक्तताविचारथी प्रेरित बनीने दोडी रही छे त्यारे दृष्टिसंपन्न मानवीए अहिंसाना विचारने मन, वाणी अने कर्मनी ताकात द्वारा जीवननी सर्व प्रक्रियामां शक्य तेटलो मूर्तिमन्त करवानो रहेशे ।

करुणाविचार विरुद्ध उपयुक्ततावादना संदर्भमां एक एवी विचारणा रजू करवामां आवे छे के, करुणाविचारने

मानवसृष्टि पूरतो सीमित करवो अने ते नीचेनी सृष्टि साथे उपयुक्तताना धोरणे व्यवहार करवो। बे सृष्टि वच्चे आवी भेदरेखा सूचवती विचारणा बराबर नथी, व्यवहारु नथी। कारण के करुणाविचारने के उपयुक्तापूर्वकना व्यवहारने आम सीमित करवानुं शक्य नथी, इष्ट पण नथी। करुणानुं क्षेत्र सतत विस्तरतुं रहे अने जीवसृष्टिना अंतिम छेडाने स्पर्शवानो प्रयत्न करे तो ज मानवी मानवी साथेना व्यवहारमां साची, संगीन अने समग्रव्यापी करुणानो उदय संभवे छे। जे करुणा मानवी अने पशु वच्चे भेद करीने एकने अपनाववानो अने अन्यने इन्कारवानो प्रयत्न करे ते करुणा मानवी मानवी वच्चे पण भेद कर्या विना रहे ज नहि अने परिणामे करुणाना स्थाने उपयुक्ततानी दृष्टि ज आवीने ऊभी रहे। बीजी बाजुए जे उपयुक्ततानी वृत्तिने मात्र मानवीथी निम्न कोटिना बधा जीवो साथेना व्यवहारमां लागु पाडवानी वात करे ते आखरे अने कसोटीना समये मानवी साथेना व्यवहारमां पण उपयुक्ततानु धोरण लागु पाड्या विना रहेवानो नहि अने जे निष्ठुरतानी पशुसृष्टि सामेना व्यवहारमां हिमायत करे छे ते ज निष्ठुरता ते कटोकटीना वखते मानवी प्रत्ये पण दाखववाना।

आपणे ए समजी लेवुं जोईए, के उपयुक्तताविचार प्राकृतिक छे। करुणा प्रकृतिथी ऊँचे ऊठवानो मानवीनो प्रयत्न छे। पशुमात्र उपयुक्ततानी दृष्टिथी वर्ते छे, विच[illegible] छे। मानवीने संवेदनशील हृदय मळेलुं [illegible] अन्य आत्मौपम्य भावथी ते विचार करी सके [illegible] तेना दिलमां निम्न कोटिनाना जीवो मा[illegible] थाय छे। उपयुक्तताना विचारथी मा[illegible]

शकतो नथी कारण के तेनो चालु व्यवहार ए भूमिका उपर घडायलो होय छे। पण "उपयुक्तताना खयालथी प्रेराईने हुं बने त्यां सुधी एवी रीते न वर्तुं के जेथी अन्य कोई जीवने दुःख थाय, पीडा उपजे के तेनी प्राणहानि थाय" -आम विवेक करीने वर्तवुं अने एम वर्तवा जतां अनिवार्य एवी जे हिंसा थाय ते विषे अन्तस्ताप अनुभववो अने सविशेष जागृत रही प्रयत्न करवो-एमाज मानवीजीवननी तेने प्राप्त थयेली सद्असद् विचारणानी चरितार्थता रहेली छे।

गया मार्च मासनी पहेली तारीखना 'प्रबुद्ध जीवनमां बुंभुक्षितः किं न करोति पापं' ए मथाळा नीचे प्रगट थयेल मारो एक लेख अने ते पछीना अंकमां प्रगट थयेलुं-ते लेखने ध्यानमां लईने लखायलुं श्री वत्सला बहेननुं चर्चा-पत्र-आ भूमिकाऊ पर मे मासनी पहेली तारीखथी सप्टे-म्बरनी पहेली तारीख सुधीना प्रबुद्ध जीवनना अंकोमां प्रगट थयेल भिन्न भिन्न व्यक्तिओना लेखो या चर्चापत्रो, पछीना अंकमां प्रसिद्ध थयेलो श्री वत्सलाबहेननो जवाब अने ऑक्टो-बर मासनी पहेली तारीखथी आज सुधीना अंकोमां प्रगट थई रहेलो आ उपसंहार-आ रीते आ लांबी चर्चानो आजे अन्त आवे छे। आ लांबो उपसंहार कटके कटके लखायेलो होईने, तेमां कोई कोई ठेकाणे पुनरुक्तिथवा पामी छे। ते माटे प्रबुद्ध जीवनना वाचकोनी मारे क्षमा मागवी रही. आ आखी चर्चा अने उपसंहारमात्र पशुसृष्टिने ध्यानमां राखीने करवामां आवेल छे। माणस साथेना व्यवहारनी अहिंसा-दृष्टिपूर्वकनी आलोचनाने आ चर्चामां स्थान आपवामां आव्युं नथी। प्रस्तुत उपसंहारमां आगळना लेखो तथा चर्चापत्रोमां रजू करवामां आवेला मुख्य मुख्य मुद्दाओने आवरी लेवानो अने ते अंगेनुं मारुं चिन्तन रजू करवानो में प्रयत्न कर्यो

मानवसृष्टि पूरतो सीमित करवो अने ते नीचेनी सृष्टि साथे उपयुक्तताना धोरणे व्यवहार करवो । बे सृष्टि वच्चे आवी भेदरेखा सूचवती विचारणा बराबर नथी, व्यवहारु नथी । कारण के करुणाविचारने के उपयुक्ततापूर्वकना व्यवहारने आम सीमित करवानुं शक्य नथी, इष्ट पण नथी । करुणानुं क्षेत्र सतत विस्तरतुं रहे अने जीवसृष्टिना अंतिम छेडाने स्पर्शवानो प्रयत्न करे तो ज मानवी मानवी साथेना व्यवहारमां साची, संगीन अने समग्रव्यापी करुणानो उदय संभवे छे । जे करुणा मानवी अने पशु वच्चे भेद करीने एकने अपनाववानो अने अन्यने इन्कारवानो प्रयत्न करे ते करुणा मानवी मानवी वच्चे पण भेद कर्या विना रहे ज नहि अने परिणामे करुणाना स्थाने उपयुक्ततानी दृष्टि ज आवीने ऊभी रहे । बीजी बाजुए जे उपयुक्ततानो वृत्तिने मात्र मानवीथी निम्न कोटिना बधा जीवो साथेना व्यवहारमां लागु पाडवानी वात करे ते आखरे अने कसोटीना समये मानवी साथेना व्यवहारमां पण उपयुक्ततानु धोरण लागु पाड्या विना रहेवानो नहि अने जे निष्ठुरतानी पशुसृष्टि सामेना व्यवहारमां हिमायत करे छे ते ज निष्ठुरता ते कटोकटीना वखते मानवी प्रत्ये पण दाखववाना ।

आपणे ए समजी लेवुं जोईए, के उपयुक्तताविचार प्राकृतिक छे । करुणा प्रकृतिथी ऊँचे ऊठवानो मानवीनो प्रयत्न छे । पशुमात्र उपयुक्ततानी दृष्टिथी वर्ते छे, विचरे छे । मानवीने संवेदनशील हृदय मलेलुं होईने अन्यनो आत्मौपम्य भावथी ते विचार करी सके छे अने परिणामे तेना दिलमां निम्न कोटिनाना जीवो माटे करुणानो उदय थाय छे । उपयुक्तताना विचारथी मानवी कदी मुक्त थई

शकतो नथी कारण के तेनो चालु व्यवहार ए भूमिका उपर घडायलो होय छे । पण "उपयुक्तताना खयालथी प्रेराईने हुं बने त्यां सुधी एवी रीते न वर्तु के जेथी अन्य कोई जीवने दुःख थाय, पीडा उपजे के तेनी प्राणहानि थाय" -आम विवेक करीने वर्तवु अने एम वर्तवा जतां अनिवार्य एवी जे हिंसा थाय ते विषे अन्तस्ताप अनुभववो अने सविशेष जागृत रही प्रयत्न करवो-एमाज मानवीजीवननी तेने प्राप्त थयेली सद्असद् विचारणानी चरितार्थता रहेली छे।

गया मार्च मासनी पहेली तारीखना 'प्रबुद्ध जीवनमां बुभुक्षितः किं न करोति पाप' ए मथाळा नीचे प्रगट थयेल मारो एक लेख अने ते पछीना अंकमां प्रगट थयेलुं-ते लेखने ध्यानमां लईने लखायलुं श्री वत्सला बहेननुं चर्चापत्र-आ भूमिकाऊ पर मे मासनी पहेली तारीखथी सप्टेम्बरनी पहेली तारीख सुधीना प्रबुद्ध जीवनना अंकोमां प्रगट थयेल भिन्न भिन्न व्यक्तिओना लेखो या चर्चापत्रो, पछीना अंकमां प्रसिद्ध थयेलो श्री वत्सलाबहेननो जवाब अने ऑक्टोबर मासनी पहेली तारीखथी आज सुधीना अंकोमां प्रगट थई रहेलो आ उपसंहार-आ रीते आ लांबी चर्चानो आजे अन्त आवे छे । आ लांबो उपसंहार कटके कटके लखायेलो होईने, तेमां कोई कोई ठेकाणे पुनरुक्तिथवा पामी छे । ते माटे प्रबुद्ध जीवनना वाचकोनी मारे क्षमा मागवी रही. आ आखी चर्चा अने उपसंहारमात्र पशुसृष्टिने ध्यानमां राखीने करवामां आवेल छे । माणस साथेना व्यवहारनी अहिंसादृष्टिपूर्वकनी आलोचनाने आ चर्चामां स्थान आपवामां आव्युं नथी । प्रस्तुत उपसंहारमां आगळना लेखो तथा चर्चापत्रोमां रजू करवामां आवेला मुख्य मुख्य मुद्दाओने आवरी लेवानो अने ते अंगेनुं मारुं चिन्तन रजू करवानो में प्रयत्न कर्यो

छे। ते पाछळ कोई खंडनमंडननी दृष्टि रही नथी। निरुपण बने तेटलुं स्पष्ट अने विशद बने एवो में आग्रह सेव्यो छे अने एम छतां चर्चास्पद विषय अत्यंत कठिन होईने कोई कोई ठेकाणे अस्पष्टता रही जवानो पूरो संभव छे। आ अति जटिल प्रश्न अंगे ऊँडाणथी विचारवानी श्री वत्सलाबहेनना चर्चापत्रे मने तक आपी ते माटे तेमना विषे हुँ आभारनी लागणी अनुभवुं छुं, अने आ अति गंभीर अने जीवनने अनेक दिशाएथी स्पर्शता विषयनी जोईए एटली मर्मग्राही छणावट हुँ करी शक्यो नथी एवा असंतोष साथे आ उपसंहार पूरो करुं छुं अने आ चर्चापत्र समाप्त करुँ छुं।

अहिंसानी तात्त्विक विचारणा बीजो एक मुद्दो आपणी सामे उपस्थित करे छे। आपणे जोयुं के आपणे एवी विचित्र जीवनपरिस्थितिमां गोठवाया छीए के आपणी भावना अहिंसाने जीवनमां मूर्तरूप आपवानी छे, पण जीवन कोईने कोई हिंसक प्रतिक्रिया उपर आधारित छे। आ उपरथी आपणने एम विचारवानी तेमज स्वीकारवानी फरज पडी के अहिंसक जीवन एटले जीवननिर्वाह माटे जरूरी एवी अल्पतम हिंसा उपर आधारित जीवन. पण प्रश्न ए थाय छे के, आ जीवननिर्वाह माटे अल्पतम हिंसा कोने कहेवी? तेनुं माप केवीरीते काढवुं? अल्पमत अने अनल्पतम हिंसा वच्चे कई रेखा दोरवी? आमां विचारके विचारके मतभेद पडवानो कोई एम कहेशे के मांसाहार मत्स्याहारनी तो कोई प्रश्न ज नथी, पण वनस्पतिमां पण अल्प जीवोवाळी अने अनल्प जीवोवाळी वनस्पति वच्चे पण जे भेद रहेलो छे ते ध्यानमां लईने एकनो स्वीकार करवो अने अन्यनो त्याग करवो. आ रीते जीवननिर्वाहने अल्पतम हिंसा उपर आधारित करवुं अन्य कहेशे के जीव तो वनस्पतिमांये छे अने पशुओमां पण छे,

मारा माटे मत्स्याहार तेम ज मांसाहार जरूरी छे तो तेमां मानवीसमाज माटे जे पशुओ उपयोगी होय तेने छोडीने अन्य पशुओनां मांसनो—अने मत्स्यनो तो आहार सिवाय बीजो उपयोग ज नथी। तेथी तेनो जरूर जेटलो उपभोग ए मारा माटे अल्पतम हिंसानुं माप छे, भक्ष्याभक्ष्य अंगेनुं एक धोरण छे। आ बेमां कोण साचुं अने कोण खोटुं ?

अवी ज रीते अहिंसानी विचारणामां आपणे एम विचार्युं के मानवी सर्वोत्कृष्ट प्राणी छे। तेना प्राणनी रक्षा अन्य जीवोनी रक्षा करतां वधारे महत्त्व धरावे छे। मानवीने बचाववा खातर, तेनी रक्षा करवा खातर, ज्यारे परस्पर बे हिंसक प्रतिक्रियाओ आपणी सामे आवीने ऊभी रहे त्यारे आपणा वर्तननो झोक मानवीने बचाववा-रक्षवा तरफ होवो जोईए। आम आपणे मानवीने मुख्यता आपी अने ते खातर निम्नकोटिना जीवनी हिंसा करवी पडे तो तेने व्याजबी गणीने आपणे स्वीकारी। हवे आजे जे वैद्यकीय अने वैज्ञानिक संशोधनना नामे पशु—प्राणीओनी पार विनानी हिंसा चाली रही छे, शारीरिक ताकात जाळ-ववा माटे इंडां, मच्छी अने मांसनो उपयोग करवानुं कहेवामां आवे छे तेमां पण मानवीनां सुख, स्वास्थ्य अने कल्याणनो ज विचार होवानो दावो करवामां आवे छे। आम अहिंसाने सिद्धांतमां स्वीकारवा छतां विचारके विचारके मतभेद पडवानो आनो निकाल शी रीते करवो ?

वस्तुस्थिति एम छे के अहिंसा ए बुद्धिनो, तर्कनो के दलीलबाजीनो विषय नथी. ए विषय छे अन्तःसंवेदननो, दिलना ऊण्डाणमां ऊगेलीकरुणानो। जेना दिलमां अन्य जीवोनां सुख दुःख विषे सम्वेदन ऊभु थयुं छे, करुणा जागृत थई छे तेने तेना भिन्न भिन्न संयोगो अने संस्कारो मुजब आवा

प्रश्नो उकेल सूझी ज रहेवानो छे अने ते उकेल पाछळ तेना संयोगो तथा संस्कार अनुसार अल्पतम हिंसानी अने मानवीकल्याण अंगे जरूरी विवेकनी चोकस सूझ होवानी ज छे। जेना दिलमां करुणानो उदय नथी' जेनी बुद्धिमां 'जीवो अने जीववा दो, ए प्रकारनो विवेक ऊभो थयो नथी तेना माटे आ अहिंसा-अहिंसानी चर्चानो कोई अर्थ नथी। ते उपयुक्ततावाद तरफ ढळवानो छे अने 'भारी जात पहेलां अने बीजुं बधुं पछी एवा धोरणने आखरे स्वीकारने चालवानो छे, अने ते अहिंसावादी पोताने कहेवरावतो हशे तो पण तेनो अहिंसावाद उपयुक्तताने आवीन रहीने रचावानो छे।

हवे आपणे श्री वत्सलाबहेननां लखाणोमांना बाकी रहेला एक पछी एक मुद्दाओ उपर आवीए। ता. १-५-६१ ना प्रबुद्ध जीवनमां प्रगट थयेला काकासाहेब कालेलकरना लेखमांथी पोताना विचारोनुं समर्थन करतां केटलांक वाक्यो श्री वत्सलाबहेने उद्धृत कर्यां छे। काकासाहेब अहिंसाना ज नहि पण निरामिषाहारना प्रमुख समर्थक छे ए सर्वत्र सुविदित छे आम छतां एमना लेखना प्रथम वाचने ए लेखनो झोक तेमनां पूर्वमन्तव्यो विषे संदेह पेदा करतो अने कांईक विपरीत दिशा तरफ ढळतो मने लागेलो अने तेथी में ए लेख वांचीने ठीकठीक आश्चर्य अनुभवेलुं, अने तेथी श्री वत्सलाबहेने तेमना लेखनो आवो उपयोग कर्यो तेथी मने कशी नवाई लागेली नहि।

पण वत्सलाबहेननो जवाब मळया बाद काकासाहेबनो लेख पुनः वांची जतां मालूम पड्युं छे के मारा मन उपर पडेलो पहेलांनी छाप बरोबर नथी, अने वत्सलाबहेने आगळपाछळनो संदर्भ तोडीने पोताना जवाबमां काकासाहेबनां

जे वाक्यो अवतरित कर्यां छे ते उपरथी कोई पण वांच-
नारना मनमां एवी ज छाप पडे के काकासाहेब निरामिषा-
हार के जीवदयाना पक्षकार नथी—बल्के विरोधी छे। आवी
छाप काकासाहेबने अन्याय करनारी छे. काकासाहेब पोताना
लेखना छेवटना भागमां स्पष्टपणे जणावे छे के "उपयुक्तता-
वादनो आश्रय लईने वांदराओ उपर वैज्ञानिक प्रयोग करीने
अनेक रोगो उपर दवा शोधी काढवी ए विचारनो अने
प्रवृत्तिनो बचाव हुं न ज करुं। कोई पण प्राणीने मारवानो
आपणने अधिकार नथी। प्राणीहत्या धर्मनी दृष्टिए पाप छे,
[illegible]दरतनी दृष्टिए गुनो छे ए विषे मारा मनमां लगीरे
[illegible]ंका—नथी।

वळी आगळ चालतां तेओ जणावे छे के "सरकारने
[illegible]गोव्या वगर अने कानूननो आश्रय लीधा वगर प्रचार
[illegible]ारा अने शुद्ध आचारणद्वारा अहिंसानो जेटलो विस्तार
[illegible]री शकाय एटलो आपने जरूर करीए, तेने माटे संस्थाओ
[illegible]थापी आपणे अहिंसक अर्थशास्त्र वगेरे कृषिविज्ञान, शुद्ध
[illegible]आहारशास्त्र वगेरे दिशामां प्रगति करवी जोईए। जेमना
[illegible]च्चे मांसाहार-त्यागनो, पशुहत्यानिषेधनो अने जीवदयानो
[illegible]चार करवा मागीए छीए ते लोकोनो तिरस्कार न करतां
[illegible]मना हृदयो आपणे जीतवां रह्यां।

'अने जो युद्धरूपी हिंसा अने शोषणरूपी हिंसा अने
विलासरूपी सूक्ष्म पण भयानक हिंसामांथी बची जवुं होय
तो आपणे संयम, सहयोग अने कौशल्यवृद्धिने जोरे नवा
समाजनी स्थापना करवी जोईए। आमां सरकारनी सीधी
मदद न ज होय। काम वध्या पछी सरकार पासेथी अनुदानो
मेळवी शकाय, पण ए आखो पुरुषार्थ धर्मसुधारको अने
समाजसुधारक ए पोतानी जवाबदारी पर चलाववो जोईए।

" आजनी दुनियामां कारुण्यनो प्रचार माणस माणसना संबंधो पूरतो ज करी शकीए तो घणुं थयुं " (आ वाक्यने एकलुं आपणी सामे आगळ धरीने वत्सलाबहेने एम सूचववा प्रयत्न कर्यो छे के काकासाहेब करुणाप्रचारने मात्र मानवसमाज पूरतो सीमित राखवा चाहे छे. पण वस्तुतः एम नथी. काकासाहेबनी विचारणामां जीवसृष्टि साथेना अद्वैतविचारने स्थान छे ज ए प्रमाणे सूचवतां पछीनां वाक्यो नीचे प्रमाणे छे.) "जीवसृष्टि अद्वैत ज्यारे माणस जातिने गळे उतरशे त्यारे आगळ वधी शकशे. पोतानी भावना उत्तेजित करी जाणे पुण्यप्रकोपनुं भूत पोताना पर सवार थयुं होय एवो डोळ करी अथवा मनने मनावी मोढेथी आकरां वेणो काढवां अने कोईने कोईनी निन्दा करवी ए साचो उपाय नथी. धार्मिक विवाद तो उभो न ज कराय अने गांधीजीनुं नाम पण आगळ न कराय । "

काकासाहेबना आ विवेचनमां अहिंसा के करुणाना व्यापक अने एम छतां सूक्ष्म विचार साथे विरोधी होय जेवो एक पण उद्गार नथी अने तेथी वत्सलाबहेननो जवाब जेमां प्रगट थयो छे ते ता १६-९-६१ ना प्रबुद्ध जीवननो अंक वांचीने आश्चर्य दाखवता तरत ज लखायेला मारी उपरना ता. १८-९-६१ ना पत्रमां काकासाहेब जणावे छे के "प्रबुद्ध जीवनना ताजा अंकमां वत्सलाबहेननो जवाब वांच्यो. एमने अन्याय न थाय एटला माटे तमे ते संपूर्ण छाप्यो' पण बीजाओने पण अन्याय न थाय ए जोवानुं तमारुं कर्त्तव्य हतुं । वत्सलाबहेने मारा लेखनी खूब कदर करी छे खरी' पण मारां बार वचनो भेगां करवाथी एवी छाप पडे छे के अहिंसा के जीवदया विषे कशुं करवा जेवुं नथी एवो मारो अभिप्राय छे । मारो मूळ लेख वांचे तेने आवी गेरसमज

થવા સંભવ નથી. જીવદયા અને પ્રાણીહત્યાના નિવારણમાં રૂઢિવાદી જૈનોની પ્રવૃત્તિ પાછળ વિચાર કે યોજના નથી., ચિન્તન જરાય નથી. તે એક રૂઢિ થઈ છે એમ મને લાગે જ છે। પણ એમને રચનાત્મક માર્ગ બતાવવો જોઈએ। સદિચ્છા કાર્યકારી સત્પ્રવૃત્તિમાં પરિણમવી જોઈએ। હમણાં જ હું પાર્લામેન્ટમાં બોલ્યો તેમાં કહ્યું કે ફાંસીની સજા અને ધર્મના નામે થતી પશુહત્યા એ બે આપણ જમાનામાં બન્ધ થવાં જ જોઈએ। તમે તમારો સંપાદકીય લેખ લખીને પૂર્ણાહુતિ કરવાના છો તેમાં બધાને ન્યાય આપો અને વત્સલાબહેનને પૂછો કે અહિંસા અને પ્રાણીરક્ષા માટે શું અને કેટલું કરી શકાય તે સૂચવે।' પ્રસ્તુત ચર્ચાની આ લેખ સાથે હવે પૂર્ણાહુતિ જ કરવા ઈચ્છું છું। એમ છતાં વત્સલાબહેનના પ્રથમ છપાયેલ ચર્ચાપત્રમાં અને અન્તિમ જવાબમાં જે વિગતો રજૂ કરવામાં આવી તે સમગ્રપણે ધ્યાનમાં લેતાં, તેમને ઉદ્દેશીને કાકાસાહેબે કરેલા પ્રશ્નને થોડોક વિસ્તારીને હું આ રીતે પૂછવા માગું છુ કે, 'તેમની વિચારસરણીમાં અહિંસાને તેમ જ પ્રાણિરક્ષાને કોઈ સ્થાન છે ખરું? અને હોય તો તેનું સ્વરૂપ શું છે? અને તે દિશાએ શું અને કેટલું કરી શકાય તેમ છે?', ચર્ચાની પૂર્ણાહુતિ થવા છતાં આ બાબતમાં જો વત્સલાબહેન કંઈ લખી મોકલશે તો તેને ચર્ચા-પ્રતિચર્ચાનું રૂપ નહિ આપતાં તેમનું લખાણ જેવું આવશે તેવું પ્રબુદ્ધ જીવનમાં પ્રગટ કરવામાં આવશે।

હવે આગળ ચાલીએ. શ્રી વત્સલાબહેન પોતાના જવાબમાં કલકત્તાની કાલી માતા સમક્ષ અને અન્યત્ર દેવીઓ સમક્ષ ધર્મના નામે નિર્દોષ પશુઓનાં બલિદાન આપવાની આપણા દેશમાં જે પ્રથા સદીઓથી આજ સુધી ચાલતી આવી છે તેનું હૃદયસ્પર્શી વિવરણ કરીને જણાવે છે કે "હું જૈન ભાઈઓને

पूछुं छुं के आ असानुषी हत्यानो केम विरोध करता नथी ? मात्र पना पर धर्मनो सिक्को लागेलो पटले ज ने ?," आ प्रश्न वांचीने तेमना अज्ञान विषे जराक आश्चर्य थाय छे. तेमने ए तो खबर होवी जोईए के आजथी २५०० वर्ष पहेलां धर्मना नामे यज्ञोमां अपातां निर्दोष पशुओनां बलिदान सामे भगवान महावीर अने बुद्ध प्रचंड विरोध उठाव्यो हतो अने सतत धाराए चाली रहेला विरोधना परिणामे आ प्रकारना यज्ञो आपणा देशमांथी नाबूद थया छे। आवी रीते देवीओने अपाता भोगो सामे पण अनेक दयाप्रेमी साधुसन्तो अने सज्जनो विरोध उठावता रह्या ज छे अने तेमां जैनो स्वाभाविक रीते मोखरे रह्या छे। घणां देशी राज्योमां महाजनो के जेमां जैनोनुं अग्रस्थान रहेतुं हतुं तेमणे दशेराना दिवसे पाडा के बकराना अपाता बलिदान सामे प्रचण्ड विरोध करीने आवी हिंसा अटकाव्याना अनेक दाखलाओ आज सुधीना इतिहासमां ज्यां त्यां नोंधायेला नजरे पडे छे। आ ज कार्य आजे मोटां शहेरोमां केटलांय वर्षोथी उभी थयेली जीवदयामण्डळीओ करी रही छे अने आ मण्डळीओनुं संचालन मोटा भागे जैनोना हाथमां होय छे अने आवी अने अन्य प्रकारनी हिंसानी अटकायत माटे जैनो मारफत मळता हजारो रुपिया खरचाय छे। एमां कोई शक नथी के आ बाबतमां जैनो सौथी वधारे दर्द अनुभवे छे। पण एम छतां आ अमानुषी हत्या बन्ध थई शकी नथी तेनुं कारण विरोधनो अभाव छे एम नथी, पण विरोध अने ऊंडो अणगमो होवा छतां अज्ञान अने अंधश्रद्धाथी भरेली धर्मानुयायीओनां मानसमां आ कुत्सित प्रथानी बहु ऊंडी अने उखेडवी अत्यन्त मुस्केल एवी जडपडी छे। आपणने न गमे एवुं, आपणो तीव्र विरोध होय एवुं घणुं अमानुषी कार्य

आ जगतमां चाल्या ज करे छे। ज्यां सुधी अज्ञान अने अंधश्रद्धानी लोकोना मानस उपर मजबूत पकड छे, अने ज्यां सुधी करुणावृत्ति लोकोना दिलने पूरता प्रमाणमां स्पर्शी नथी त्यां सुधी आवा अनर्थो धर्मने नामे चाल्या ज करवाना छे। आपणुं कर्तव्य आ अज्ञानना, अंधश्रद्धानां अने निष्ठुरतनां बळोने बने तेटलां नाबूद करवामां रहेलुं छे।

जैनोना रेशम अने मोतीना व्यापारव्यवसाय सामे श्री वत्सलाबहेने वारंवार टकोर करी छे। ते संबंधमां तेमनुं आटलुं बधुं तीव्र संवेदन आश्चर्य उत्पन्न करे छे। जाणे के आखी जैन कोमनो आ मुख्य व्यापारव्यवसाय होय एवी रीते तेमणे आ बाबतने विस्तारी विस्तारीने पोताना मूळ चर्चापत्रमां अने पछीना जवाबमां रजू करी छे। मोती अने रेशमना व्यापारमां रोकायेला जैनोनी संख्या बहु नानी छे। बीजा अनेक निरामांसाहारी लोको पण आ व्यवसाय करे छे। अल्प संख्याना जैनो अमुक खोटुं काम करता होय तो पण तेनो बचाव करवो एवी प्रबुद्ध जीवननी कोई नीति नथी। जेणे आहारना क्षेत्रे निरामिषाहार स्वीकार्यो ते प्राणीजन्य पदार्थोनो व्यापार लोभवशात छोडी न शके ते जुदी वात छे, पण निरामिषाहार पाछळ रहेली वृत्ति साथे आवी प्रवृत्ति संगत नथी अने मूळ वृतिने वफादार बनवानी इच्छा धरावनारे आवी प्रवृति छोडवी ज जोईए एमां कोई बेमत होवा संभव नथी।

हवे बीजा महत्त्वना मुद्दा उपर आवीए ते पहेलां, रेशम संबन्धमां स्वामी सत्यभक्ते ता. १६-५-.६१ ना प्रबुद्ध जीवनमां जे जणाव्युं छे तेनो विचार करी लईए। तेओ आ बाबतमां जणावे छे के, "मोतीने माटे जे हिंसा करवामां आवे छे ते खरी रीते बीनजरूरी छे, पण रेशमनी बाबतमां एम कही

शकाय तेम नथी; केमके देशमां कपासनी पण तंगीछे तेथी रेशम मारफत एनी जेटली पूर्ति थाय एटलानुं स्वागत करवुं घटे छे ।

देशमां कपासनी खरेखर तंगी छे ए विधान बरोबर नथी लागतुं, कारण के सुतराउ कापडनी तो परदेश निकास थाय छे; पण मानी लईए के कपासनी तंगी छे तो पण आर्टिफिशियल सील्क रेयोन, नाईलोन वगेरे एटली बधी कापडनी जातो देशमां बनती अने चालु वपराशमां वहेती थई छे के रेशमनुं उत्पादन देशमांथी सदन्तर बंध करवामां आवे तो पण कापडनी कोई तंगी पडवा संभव नथी; आ कारणे स्वाभी सत्यभक्तनुं रेशमनी आवश्यकता विषेनुं उपरनुं विधान मने बरोबर लागतुं नथी ।

हवे आपणे खेतीनी रक्षा अर्थे अने वैज्ञानिक तथा वैद्यकीय संशोधन अर्थे उंदर, ससलां, वांदरां, कूतरा, हरण, रोज वगेरेनी अहीं तेम ज पाश्चात्य देशोमां आजे चाली रहेली हिंसा अने तेना अनुसंधानमां आपणा देशमांथी करवामां आवती वांदरानी निकासनी योग्यायोग्यताना प्रश्ननो विचार करीए । आ पहेलां आपणा देशनुं आजथी सोएक वर्ष पहेलांनुं जीवन अने आजनी जीवनपरिस्थिति वच्चे केवुं मोटुं अंतर पडयुं छे तेनो जो कांईक ख्याल आपवामां आवे आ जटिल प्रश्ननो उकेल कांईक सरळ बनवा संभव छे ।

आजथी सो एक वर्ष पहेलां देशमां अलबत्त प्रजानो अमुक समुदाय मांसाहारी तो हतो ज, पण जे नानी दुनियामां आपणे निरामिषाहारीओ वसता हता ते दुनियाथी जाणे के दूर अगोचर एवा विभागमां मांसाहारीओनो वसवाट हतो अने ते समुदायना अस्तित्व विषे आपणे भाग्ये ज सभान

हता। देशनी जरूरियात करतां सारा प्रमाणमां वधारे अनाज पाकतुं हतुं अने ऊगेला पाकने आसपासनां जानवरो गमे तेटलुं नुकसान करे तो पण ते कोई ने जणातुं नहोतुं अने तेने बचाववा खातर एक प्राणीनी हिंसा करवानो कोई ना दिलमां प्रश्न ज ऊभो थतो नहोतो। परदेश साथे आयातनिकाशनो वेपार कंई काळथी चाल्यो आवतो हतो, पण तेनुं प्रमाण बहु नानुं हतुं अने तेमां पशु-पंखी के मत्स्यनी निकासनो कोई प्रश्न ज ऊभो थतो नहि। दर्दोनां निदान चिकित्सा मोटा भागे आयुर्वेद उपर आधारित हतां अने औषधो अने उपचारोने कोई प्राणीजन्य पदार्थो साथे संबंध नहोतो। देशमां वैद्यकीय वैज्ञानिक संशोधननुं नामनिशान नहोतुं अने आजना वैद्यकीय शिक्षणमां जीवहिंसा अनिवार्य बनी गई छे तेवा कोई वैद्यकीय के वैज्ञानिक शिक्षणनो देशमां प्रारंभ थयो नहोतो। आम होवाथी वैज्ञानिक वैद्यकीय संशोधन के शिक्षणना कारणे आजे चाली रहेली पार विनानी हिंसानी ए काळे कोई ने कल्पना सरखी नहोती। प्रमाणमां बधुं सोंघुं हतुं; जीवनव्यवस्था सरळ हती। आज जेवां मोटा शहेरो नहोतां। वस्तीनी कोई भींस नहोती।

आजे आखुं चित्र बदलाई गयुं छे। वस्ती एकदम वधती चाली छे। चीजोनी अछत नित्य जीवननो विषय थई पड्यो छे। देशनी जरूरियातना प्रमाणमां अनाज बहु ओछुं पाके छे। परदेशथी ढगलाबन्ध अनाज लाववुं पडे छे। परिणामे धरतीना पाकने रानी पशुओनी रंजाडथी बचाववानो प्रश्ने जुदुं ज महत्त्व धारण कर्युं छे। आयुर्वेद अप्रतिष्ठित थयो छे। एलोपथी अने सर्जरीए तेनुं लगभग सर्वत्र स्थान लीधुं छे। विज्ञान आपणां जीवनां

सर्व अंगोने स्पर्शी रह्युं छे । शिक्षणना प्रदेशमां वैज्ञानिक अने वैद्यकीय शिक्षणनुं महत्त्व वधतुं जाय छे। वळी आजादी मळ्या बाद वैज्ञानिक संशोधननी प्रवृत्तिने आपणा देशमां असाधारण वेग मळी रह्यो छे । अणुसंशोधनना क्षेत्रमां आपणा देशे सारी प्रगति साधी छे । आ वैज्ञानिक शिक्षण अने संशोधन जेनी साथे घणा मोटा प्रमाणमां जीवहिंसा जोडायली छे तेनो लाभ लेवा माटे आपणी प्रजाने आपणे होंश अने आशासेर वैज्ञानिक शिक्षण आपती भिन्न भिन्न संस्थाओमां दाखल करीए छीए तथा तेने लगता उच्च अभ्यासार्थे परदेश मोकली रह्या छीए । अहीं करतां पण युरोप-अमेरिकामां घणा मोटा पाया उपर वैज्ञानिक संशोधनो चाली रह्यां छे अने संख्याबंध प्राणीओ उपर करवामां आवता प्रयोगो द्वारा अनेक आश्चर्यजनक औषधो अने इन्जेकशनो शोधायां छे, जेना परिणामे असाध्य लेखातां दर्दो अने व्याधियो दा. त. क्षय अने केन्सर सुसाध्य बनतां जाय छे अने जेना परिणामे शस्त्रक्रिया सर्जरीना क्षेत्र कल्पनामां न आवे एवा विक्रमो सधाया छे अने सधाता जाय छे । अने तेथी जेना जीवननी आशा छोडवामां आवती हती ते हवे साजो थाय छे । मानवीनी आवरदानुं प्रमाण वध्युं छे अने दुनियाने शारीरिक स्वास्थ्यना क्षेत्रे अवर्णनीय लाभ थयो छे। आ हिंसाप्राप्त औषधो, इन्जेकशनो अने वैद्यकीय उपायोनो हिंसावादी अहिंसावादी सौ कोई, विरल अपवादो बाद करतां, मुक्त मने लाभ लई रह्या छे । आजनी आ परिस्थिति छे । तेना संदर्भमां प्रथम पाकनी रक्षानो प्रश्न आपणे विचारीए । रानी पशुओना रंजाडथी खेतीनो जे नाश थई रह्यो छे ते आजनी अनाजतंगीना दिवसोमां लोकोने परवडे तेम नथी । आ रीते नुकसान करतां वांदरा वगेरे

प्राणीओने बीजी रीते अटकाववा पण नथी । आ संयोगोमां शुं करवुं ? अथवा तो आ बाबतमां जेनी विशेष जवाबदारी छे ए सरकार शुं करे ? खेतरने रंजाडता पशुओनी हिंसा सिवाय मोटा भागे बीजो विकल्प देखातो नथी । बीजी बाजुए आ निर्दोष पशुओनो बंदूक पिस्तोलथी नाश करवामां आवे ए करुणाप्रेरित मानवी माटे असह्य घटना छे। आवी हिंसा अनिवार्य बने तेनुं तेने पारावार दुःख छे । आ बाबातनी चर्चा करतां मारा मित्र श्री चीमनलाल चकुभाई शाहे पोताना लेखमां जणाव्युं छे ते मुजब "खेतीवाडीनुं रक्षण करवा वांदराने मारवा पडे ए पण अहिंसानो कोयडो छे । वांदराने न मारवा पडे एवा उपायो योजवा जोईए। अनिवार्य होय तो ओछामां आछी हिंसा करवी जोईए अने तेमां पण अन्तरमां खेद होय । एमां राचवुं, एनो अतिशयता करवो ए खोटो मार्ग छे ।" खेतीवाडीना व्यवसायमां पडेलो अहिंसावादी मानवी आम ज विचारे अने वर्ते ।

— ० —

परिशिष्टो

१

धर्मविचार

विनोबाजी

कासमीरथी पाछा फरता विनोबाजीए हिमाचल प्रदेशमां प्रवेश कर्यो हतो, अने गांधीजीनो जन्मदिन-ओकटोबर मासनी बीजी तरीखे तेमनो द्रढा गाममां पडाव हतो । चारसो-पांचसो फूट नीचे रावीनो सरळ प्रवाह, एनो

आसपास दिगन्त सुधी प्रसरेली पहाडोनी –एकथी एक चडियाती पर्वी –ऊंची हारमाळा, अने आ बाजु खाडीना किनारे सांकडी जग्या उपर वसेलुं नानुं सरखुं गाम। विनोबाजी केटलीये वार सुधी अहींनी मनोरम दृश्यराजी देखता रह्या अने पछी सवारनी सभामां एमणे कह्युं के' ' आठ नव सालनी यात्रामां में केटलांये सुन्दर स्थान जोयां छे। एमांथी केटलां परम सुन्दर स्थान सदाने माटे स्मरणमां स्थिर थयां छे। एमांनु आ एक छे। जाणे के कोई देवता अथवा तो ब्रह्मदेव उपरथी चौद भुवनोनुं दर्शन करी रहेल होय एवुं दिव्य, भव्य, अने रम्य स्थान आ छे ...सारुं थयुं के आजे बापुनां थोडां भक्त भाई –बहेन आ सुन्दर स्थानमां तेमनुं स्मरण करी रह्यां छे।"

सांजनी सभामां' पहाडनी टोच उपर अने नदोना तट उपर वसेलां नानां गामडांओमांथी भाईबहेनो एकठां थयां हतां। तेमनी समक्ष गांधीजीनुं जीवन तथा पराक्रमनुं सरळ वर्णन करतां विनोबाजीए कह्युं के "आज सुधी धर्मने एक व्यक्तिगत बाबत तरीके लेखवामां आवतो हतो'। लोको मानता हता के धर्म तो व्यक्ति माटे ठीक छे, पण समाज माटे एटलो ठीक नथी। ऊलटुं सामाजिक ध्येयो माटे धर्मविचारने दूर राखी शकाय छे. सत्यने छोडी शकाय छे, हिंसानुं आचरण करी शकाय छे। आ प्रमाणे पुराणा जमानाथी लोको मानता आव्या छे अने आजे पण दुनियाना लोकोए आ विचार छोड्यो नथी। आजे बधा धर्मोना आ ज हाल छे। एम मानवामां आवे छे के धर्ममां थोडुं पाणी मेळवीने आपणे लेवुं जोईए। नहि तो शुद्ध धर्म आपणे पचे नहि। गांधीजीओ आमां फेरफार कर्यो अने कह्युं के जो आपणे व्यक्ति तथा समाजरचनाने एक बीजाथी अलग

करी दईशु, अने समाज माटे धर्म छोडवाने तैयार थई जईशुं तो ते धर्मनो प्रभाव समाज उपर तथा मन उपर नहि पडे। एम करवाथी धर्म परलोकनी साथे जोडायलो रहेशे' आ लोक साथे तेनो कोई संबंध नहि रहे। अने जो एम बनसे तो धर्म ज कपाई गयो समजो। एमांथी कोई पण अवशेष रहेवानो नहि। पण गांधीजीए आ धर्मविचारमां सुधारो कर्यो। एम नहि के गांधीजीए जे कह्युं ते शास्त्रोमां नहोतुं। ए चीज शास्त्रोमां तो हती ज' पण लोकोए पोतानी बुद्धिथी तेमां फेरफार करी नाख्यो हतो। त्रण प्रकारना तेमां फरक करवामां आव्या हताः (१) धर्म व्यक्ति माटे छे' समाज माटे नथी। (२) धर्म परलोक माटे छे, आ लोक माटे नथी। (३) धर्मनो उपयोग हवे पछीना जमानामां थशे' आ जमानामां नहि। आ रीते लोकोए धर्मने 'कोल्ड स्टोरेज' मां मूकी दीधो। गांधीजीए कह्युं के धर्मने आ रीते भविष्यना जमाना उपर धकेलवो ए योग्य नथी। तेनुं आचरण आजे ज थवुं जोईए। आपणे लोको एकथी बीजा विचारने पकडीने काम करी रह्या छीए। पण आपणे विचारीशुं तो मालूम पडशे के आपणे उपरनी त्रण बाबतो समज्या नथी। ज्यारे आपणे मकानोनी दीवालो बनावीए छीये। त्यारे काटखूणानो (सेट स्कवेरनो) उपयोग करीए छीये। संभव छे के पुराणा जमानामां लोकोए काटखूणानी मदद विना सरखा मेळ विनानां मकानो बनाववानी कोशिष करी हशे अने एमां निष्फल नीवड्या हशे। शुं सत्य अने अहिंसाने आपणे काटखूणा माफक अपरिहार्य मानेल छे? शुं गांधीजीना विचारने समाजे ग्रहण कर्यो छे? नथी ग्रहण कर्यो।

"आज सवारथी मारा मनमां आ विचार चाली रह्यो

हतो के समाज आ विचारने क्यारे पकडशे ? धर्मविचार सायन्स जेटलो ज सत्य छे । जेम सायन्सने तेम ज धर्मविचारने आपणे छोडी शकता नथी । दुनियाभरना सुतार, लुहार' एन्जीनियर वगेरे सायन्सना नियमो अनुसार काम करे छे । जो ए नियमोने तेणे छोडी दे तो एमनुं काम नहि थाय । तेमां तेमनो अटल विश्वास होय छे । ज्यारे धर्म -विचारोमां ए प्रकारनी अटल श्रद्धा पेदा थशे त्यारे कही शकाशे के दुनियामां धर्मनी स्थापना थई छे ।

"भगवाने आ काम माटे वारंवार अवतार लीधा छे' पण जेम कोई छोकरो मेट्रीकनी परीक्षामां वारंवार बेसे छे अने वारंवार नापास थाय छे' तेम भगवान वारंवार नापास थया छे । आज सुधी दुनियामां धर्मनी स्थापना थई ज नथी । हुं आपक वहु मोटी वात करी रह्यो छुं । पुराणा लोकोए कोशिष सारी करी हती । तेनो लीधे थोडीसरखी श्रद्धापेदा थई छे, पण धर्मनी स्थापना थई नथी । ज्यां सुधी दुनियामां पचास-सो धर्म छे त्यां सुधी समजवुं के ते धर्म ज नथी । पुल बनाववा माटे पच्चास-सो नियम होता नथी । एक ज सायन्सना नियम होय छे । ज्यां पच्चास-सो धर्म अने सेंकडो संप्रदाय छे, त्यां समजी लेवुं के तेनो प्रयोग मात्र चाली रह्यो छे । प्राचीन काळमां ऋषि - मुनिओए धर्म - विचारने सिद्ध कर्यो हतो, एम छतां पण सामाजिक प्रयत्नो अंगे तेमां अपवाद करवानी तेओ सलाह आपता हता । आम होवाथी धर्म -स्थापनानु श्रेय एमने आपी शकातुं नथी । गांधीजीए एवी कोशिष करी के धर्म-विचारोनुं स्थिर मूल्य समाजमां मान्य बने आ माटे तेमणे आपणी सामे अगियार व्रत रजू कर्यां । ए व्रत तो पुराणां ज हतां पण गांधीजीए सामाजिक क्षेत्रमां

पण तेमणे लागु करवानी कोशिष करी । पण एमणे मात्र प्रयोग ज कर्यो । तेनुं जे परिणाम अपेक्षित हतुं ते न आव्युं । प्राचीन युगना ऋषि-मुनिओ माफक तेओ पण असफल बन्या । आम थते थते एक दिवस ए प्रयोग सफल थशे । ए भगवाननी मारफ़त ज थशे, पण आपणे आपणा जीवनमां ए समजी लईए के धर्मनी स्थापना हजु सुधी थई नथी ।

— ० —

२

करुणानी वेदना

परमानंद कापडिया

मोटां शहेरोमां मोटा भागे 'झुओलोजिकल गार्डन्स,' ऊभा करवामां आवेला होय छे । आवा बगीचामां दुनियामां विचरतां पशुओ -जळचर तथा भूचर- ने तेम ज पक्षीओने तथा जातजातना सर्पोने एकठां करवामां आवे छे । आवी रीते जनतानुं पशुसृष्टि विषेनुं कुतूहल तृप्त थाय छे, अने कदी नहि जोयेलां प्राणीओ अने तेमनां हलनचलन जोतां लोको एक प्रकारनो आनंद अनुभवे छे । आ रीते पशुप्राणीओ अंगेनी जाणकारीमां पण वधारो थाय छे ।

आवां संग्रहस्थानोमां जेने जंगली अने शिकारी पशुओ कहेवामां आवे छे-दा. त. सिंह, वाघ, चित्ता, वरु वगेरे पशुओने पण वसाववामां आवे छे । आवां पशुओने पांजरामां पूरेलां होईने लोको तेमनी चेष्टाओ अने हिलचाल सुरक्षित पणे जोई, जाणी तथा माणी शके, छे । आ रीते तेमने यथेच्छ निहाळवानी सगवड होवा छतां लोकोमां रहेली कुतूहलवृत्ति पूरी तृप्ति अनुभवती नथी । कारण के

पिंजरग्रस्त जीवनना भोग बनवाने लीधे आ पशुओने खरी खुमारी अने रुवाब जोवा मळतां नथी । अन्य पाळेलां पशुओ माफक आ पशुओ पण स्वाभाविक रीते मंद-रांक -हतप्रभ बनी गयेलां होय छे । तेनो खरो रुवाब जोवो होय तो तेओ ज्यां स्वतंत्रपणे भटकतां होय त्यां जईने जोवो जोईए -आवी आकांक्षा पांजरामां पुरायला वाघ-सिंहने जोईने माणसना कल्पनाशील मनमां स्वाभाविक रीते जन्मे छे । प्राणीओनां संग्रहस्थानमां गमे एटलीवार वाघ-दीपडा जोया होय, एम छतां पण, जंगलमां के पर्वतना कोतरमां भटकता आवा कोई पशुने नजरे निहाळवानो प्रसंग जो कोइना नसीबे बन्यो होय तो तेना जातअनुभवनी वातो सांभळतां आपणे एक प्रकारनो रोमांच अनुभवीए छीए अने एवा अनुभवमांथी पसार थवा आपणुं मन कदी कदी तलसे छे ।

रानी पशुओ अने तेमां पण सिंह-वाघने जंगलमां यथेच्छ भटकता नजरे निहाळवानी मानवीना दिलमां रहेली आ तलपने लक्ष्यमां लईने अने सौराष्ट्रना गीरप्रदेशमां बहोळी संख्यामां विचरता सिंहोने जाते जोवानुं कोईना पण माटे शक्य छे ए हकीकतथी प्रेराइने मुंबई सरकारे आवा शोखीनो माटे गया फेब्रुआरी मासनी २७-२८ तारीखथी एक खास सगवड ऊभी करी छे' अने ए रीते आवकनु एक नवुं साधन योज्युं छे ।

आ सगवडना परिणामे दरेक अठवाडियाना छेल्ल बे दिवस शनिवार तथा रविवारना रोज आकाशमार्गी एक पर्यटन गोठववामां आवे छे । हर शनिवारे आवा शोखीनोने बिमानमार्गे मुम्बईथी केशोद लई जवामां आवे छे । त्यांथी तेमने सरकारी मोटरमां बेसवाळ थईने प्रभासपाटणनी यात्र

कराववामां आवे छे। सोमनाथ महादेवनां दर्शन करीने आ प्रवासीओ वेरावळना राजमहेलमां पधारे छे। त्यां भोजन तथा आराम पाछळ थोडा कलाक पसार करिने नमता पहोरे शासण मुकामे तेओ आवे छे अने त्यांथी गीरनां जंगलोमां तेमने फेरववामां आवे छे।

आम तो आ प्रदेशमां वसता लोकोने सिंह जोवानी कोई नवाई होती नथी। केटलांक वर्षो पहेलां मारा एक मित्र मोटरमां बेसीने तुलसीश्याम तरफ जई रह्या हता। तेमणे अडधे रस्ते सडकने आंतरीने बेठेला छ सात सिंहोनो एक साथे भेटो थयो हतो। मोटर सामे तुच्छकारभरी दृष्टि करीने आ वनराजो सडकनी एक या बीजी बाजुए सरी गया हता अने मोटरना प्रवासीओ सहीसलामत तुलसीश्याम पहोंची गया हता।

ए चालु अनुभवनो विषय छे के आ वनराजो साधारण रीते मानस उपर कदी धसारो करता ज नथी। अवारनवार मळी रहेला जंगलनां जानवरोथी तेओ संतुष्ट होय छे। ऊलटुं मान्यता तो एम छे के तेओ मानसथी अने मोटरना धमधम अवाजथी बीए छे। छंछेडायलो होय अथवा तो लांबा समयथी कशुं खाद्य न मल्युं होवाना कारणे अकरांतीओ थयो होय तो ज सिंह मानस सामे कूडी नजर करे छे। आम होवाथी गीरना पहाडी मुलकमां सिंहो जोवा ए एक साधारण घटना छे। ते कोई मोटी बहादुरीनो विषय पण नथी।

पण चोक्कस समये, चोक्कस ठेकाणे सिंह शोखीनो माटे सिंहो हाजर ज होय एम खात्रीपूर्वक कही शकाय ज नहि अने पूरा दाम लईने अहीं सुधी लाववामां आवेला प्रवासीओने कोई पण संयोगोमां निराश कर्या तो पालवे ज नहि।

आम होवाथी आ सरकारी महेमानो आ विभागमां आववाना होय छे त्यारे तेमना माटे नक्की करायलां मार्गनी वहु नजीकमां एक भेंस के पाडो वांधवामां आवे छे अने आ जीवता भक्ष्यथी आकर्षाईने आस पास वसता सिंहो अने तेनां बच्चांओ हाजर थई जाय छे । आ टोळामांनो एक सिंह-सौथी पहेली सहेलगाहमां सामेल थयेला एक मित्रे जणाव्युं हतुं ते मुजब -गोठवायेलां मारण उपर आक्रमण करे छे । पाडो वें वें करतो भों भेगो थाय छे अने प्राणान्तसूचक चीसो पाडतो काळने शरण थाय छे। त्यारवाद आ पशुदेहनी सिंहो अने तेनां बाळ बच्चांओ उजाणी करे छे । छेवटे सिंहण आवे छे अने ते पण भिजवानीमां सामेल थाय छे । सहेलाणीओ आ दृश्य दोढ वे कलाक सुधी जोया करे छे अने ऊंडी कृतकृतत्यता अनुभवे छे । त्यारवाद सांजना वखते नजीकना मुसाफरीवंगलामां तेओ पाछा फरे छे। त्यां भोजनविधि पताव्या वाद अंधरामां रात्रीना आठ नव वाग्या आस पास वळी पाछा आ स्थळे टोर्च लाईटो साथे प्रवासीओ आवी पहोंचे छे अने मारणना बाकी रहेला अवशेषो चाटता, पूरुं खावानुं भळवाथी तृप्ति अनुभवता अने आमतेम आळोटता सिंहोने कलाक दोढ कलाक सुधी निहाळीने पाछा फरे छे अने मुसाफरी बंगलामां आराम करे छे । बीजे दिवसे सवारे फाकब्रेस्ट (नास्तो) करावीने प्रवासीओने चोरवाड लई जवामां आवे छे । त्यां बपोरना भोजननी व्यवस्था होय छे । नमता पहोरे केशोद आवीने उत्तर दिशाएथी आवता अेरोप्लेईनमां बेसीने सांजना समये आ प्रवासीओ मुंबई पाछा फरे छे । आ बे दिवसनी सहेलगाह माटे प्रत्येक सहेलाणीए रु. २२५ आपवा पडे छे। आम दरेक अठवाडिक सहेलगाह प्रसंगे एक एक भेंस या

पाडानो भोग अपाय छे, अने सिंहोना आ अपूर्व दर्शन साथे पाडाने सिंह केम मारे छे ते प्रक्रिया पण सहेलाणीओ माटे एक विचित्र प्रकारना आनंद अने उत्तेजनानो विषय बने छे।

आ सिंहोने जोवा माटे केटलांक वर्षो पहेलां—घणुं-खरुं सोमनाथ महादेवना नवमन्दिरनो पायो नाखवामां आवेलो त्यारे-आपणा राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद आ ज प्रदेशमां गयेला, पण उपर जणावेला मारणनी ते प्रसंगे कोई गोठवण करवामां आवेली नहि होय तेथी, सांभळ्या मुजब तेमने निराश थई ने पाछा फरवुं पडेलुं। त्यारबाद त्रण चार वर्ष पहेलां आ ज हेतुथी प्रेराई ने भारतना महा अमात्य जवाहरलाल नेहरु पण सौराष्ट्रना प्रवास दरमियान गीरनां जंगलोमां गयेला। तेमनो आंटो निष्फल न जाये ते माटे ए वखतनी सौराष्ट्र सरकार तरफथी केटलाय दिवसो सुधी हमेशां अमुक एक स्थळे मारण (भक्ष्य बननारुं पशु) बांधवामां आवतुं हतुं अने ए रीते ते स्थळ साथे आसपासना सिंहोने टेवाडवामां आव्या हता। आ रीते भारतना अग्रतम राजपुरुषनी आंखोने तृप्त करवा खातर केटलांय पशुओनुं ए दिवसोमां बलिदान आपवामां आव्युं हतुं।

आ बधुं जाणीने सांभळीने आपणुं दिल कंपी ऊठे छे। निर्दोष पशुओनी प्राणान्त चिचियारी साथे संकळीयेला आ कमनसीब सिंहदर्शनमां मानवीने शुं आनंद आवतो हशे? आवो प्रश्न आपणा दिलने बेचेन करी मूके छे। खीणो अने जंगलोमां शहेनशाहनी माफक विचरता, बादशाही केशवाळी झुलावता, भव्यतानी मूर्ति समा आ वनसम्राटोने प्रत्यक्ष जोवामां एक प्रकारनो रोमांच रहेलो छे ए वाततनो कोई इनकार करी शके नहि। पण ए जोवा-देखाडवा माटे मुम्बई सरकारे शा माटे आवी जंगली रीत अखत्यार

करी हशे ते समजातुं नथी । गीरना प्रदेशमां जमीनथी बहु ऊंचे नहि एवी रीते परोप्लेईननां आमतेम चक्करो लगाव वाथी सिंहो सहजपणे जोई शकाय तेम छे । आथी वधारे जेमने तलसाट होय तेवा लोकोए ते प्रदेशमां जईने बे चार दिवस रहेवु, जोईए अने ते खातर थोडुंक जोखम पण खेडवुं जोईए । आफ्रिकामां ज्यां सिंहोनो वसवाट छे त्यां मारणनी कशी पण गोठवण कर्या सिवाय मोटरमां बेठां बेठां बहु नजीकथी सुरक्षितपणे सिंहो निहारी शकाय छे । गीरमां पण, आजे ज्यारे सिंहोनी वस्ती वधी रही छे त्यारे सिंहोनुं आवुं दर्शन जरूर सुगम होवुं जोईए । सिंहो जोवा माटे आवुं कोई निर्दोष आयोजन विचारवा मुम्बई सरकारने प्रार्थना छे ।

एमां कोई शक नथी के आजे सिंहो जोवा माटे मुम्बई सरकार तरफथी जे प्रकारनो प्रबंध करवामां आव्यो छे ते साथे पशुओ प्रत्येनी निष्ठुरता नीतांतपणे जोडायेली छे, अने ते प्रबंधनो लाभ लेनाराओमां पण एवी ज निष्ठुरता केळवाय छे । आ सहेलगाहे गयेला मित्रोने पूछवामां आवे के "आ तो बधुं ठीक' पण ए विचार निर्दोष पाडानो आवी रीते जीव लेवातो जोईने तमारा दिलमां कोई अरेराटी जन्मी नहि ? " जवाब मळे छे के "एमां शुं ? आमेय ते पाडो बीजे क्यांक कपावानो तो हतो ज ने ? " आजनी आनन्द माणवानी घेलछा जन्मजातकरुणाना-दयाना-संस्कारोने केवी रीते आवरी ले छे, चीरी भूंसी नाखे छे तेनुं आ सूचक दृष्टांत छे ।

वळी 'एक निर्दोष अवाचक पशुना भोगे तमे आ शुं आनंद माणी रह्या छो ? एवा प्रश्नना जवाबमां चोतरफ चाली रहेली विविध कोटिनी हिंसाओ, मांसाहार माटे

चलावातां कतलखानां, खेतीबचाववा माटे थतो पांदराओनो संहार, दवादारू माटे थतो अनेक पशुओनो वध, विज्ञानना नामे करवामां आवती पारविनानी प्राणहानि–आ वधुं आपणी सामे धरवामां आवे छे अने आ बधुं ज्यां चोतरफ चाली रह्यं छे त्यां पाडाना नामनो आ शुं पोकार उठावी रह्या छो ? आ सामे पांच पचीस पाडानी ते शुं विसात छे ?' एवो जवाब आपणा माथामां मारवामां आवे छे । चोतरफ चाली रहेला हिंसातांडवमां पांच दस पाडानी कोई विसात नथी ए वात बरोबर छे । आम छतां पण उपर गणावेला अनर्थोना बचावमां कांईक उपयुक्तता सूचवती युक्ति प्रयुक्ति कल्पी शकाय छे । ज्यारे अहीं शरू करवामां आवेली हिंसानी कोई उपयुक्तता कल्पी शकाती नथी । मात्र मानवीना मनमां रहेला एक कुतूहलनी तृप्ति, दूरथी आवेला माणसोने बे घडी आनंद आपवा माटेनी एक अनोखी तरकीब–आथी बीजुं कोई कारण प्रस्तुत पाडावध पाछळ नजरे पडतुं नथी ।

अलवत्त, आ दुनियामां वसता मानवी मात्रने एक या बीजी रीते आनंद मानवानो अधिकार छे; पण आ अधिकार भोगववानी एक मर्यादा सभ्य समाजे हंमेशां स्वीकारेली छे अने ते ए छे के आपणो आनंद परपीडनमांथी निर्माण थवो न जोईए । न्याय अने नीतिनी आ अपेक्षाने कोईप पण अवगणवी न घटे । आपणो आनंद ज्यारे परपीडन साथे जोडाय छे त्यारे ते आनंद आसुरी रूप धारण करे छे अने एवो आनंद भोगववानी लालसा माणसने धीमे धीमे राक्षस बनावी मूके छे । आवी आनंदजनक प्रक्रियाओने उत्तेजन आपवाथी प्रजामानस निष्ठुर बने छे, तेमां रहेली कुमळी लागणीओ बुठ्ठी बनी जाय छे ।

भिन्न भिन्न निमित्तोथी प्रेरायेली भिन्न भिन्न प्रकारनी

हिंसानी गुणवत्ता (Quality) मां–मातरमां –अमुक फरक
रहेल। होय छे। मानवीदिल हमेशां अहिंसाथी–प्रेमथी–करु-
णाथी प्रेरित रहे छे, पण तेना संयोगो, संस्कारो, आदतो
अने साचा तेम ज मानी लीधेली अंगत जरूरियातो तेने
जाण्येअजाण्ये हिंसक प्रवृत्तिओ अने प्रक्रियाओ तरफ वळे
छे। आम छतां पण पोते कांईक खोटुं करे छे, अयोग्य
करे छे, पोतानां सुखसगवड खातर अन्य कोई ने बाधा
पहोंचाडवानो पोताने कोई हक्क नथी–आवो कोईक खटको
तेना मनमां हंमेशां सळवळया ज करतो होय छे, अने तेथी
ज्यारे पण कोई अमुक हिंसक प्रक्रियामांथी तेने छूटवानी
तक देखाय छे अथवा तो तेवो ताकात पोते अंदरथी अनुभवे
छे त्यारे ते मोटो छूटकारो–अंदरनी–राहत–अनुभवे छे, अने
तेवी तकने ते झडपी लेवा मथे छे अथवा तो तेवी ताकातनुं
अवलंबन लईने तेटला पूरतो ते हिंसामुक्त बनवा प्रयत्न
करे छे। मानावोमात्रनुं ध्येय हिंसामांथी अहिंसा तरफ गति
करवानुं होवुं जोईए। एविषे आजे कोई बेमत नथी।
व्यक्तिनी दृष्टिए आवी प्रगति त्यां सुधी ज शक्य छे के ज्यां
सुधी चालु हिंसक प्रवृत्तिओ अने प्रक्रियाओ विषे तेना दिल
मां शरम होय, संकोच होय, कांईक अकळामण होय, कांईक
ओंठप होय। पण ज्यारे हिंसाविषयक आवी शरम, संकोच,
अकळामण के ओंठप मानवीना दिलमांथी सरी जाय छे
त्यारे तेनी हिंसावृत्ति सीधी नफट बनी जाय छे अने हिंसा
विषे ते शरम अनुभववाने बदले शेखी करतो थई जाय छे।
मोजमजा साथे संकळायेली हिंसा मानवीना चित्तमां हंमेशां
आ प्रकारनी विकृति पेदा करे छे अने अहिंसा तरफनी
प्रगतिना द्वारा तेना माटे बंध थता जाय छे, अने परिणामे
ते अधिकाधिक हिंसा तरफ घसडातो रहेछे। मुंबई सरकारे

अखत्यार करेली आम प्रजाने सिंहो देखाडवानी प्रस्तुत यो जनामां हिंसा संबंधमां मानवीने वधारे ने वधारे नफट अने नठोर बनाववानुं जोखम रहेलुं छे अने तेथी ते सामे आजे जे विरोध थई रह्यो छे ते सर्वथा योग्य छे।

सर राधाकृष्णने एक प्रसंग उपर कहेलुं के आजे आपणे त्यां crisis of charsctr-चारित्र्यनी कटोकटी-ऊभी थई छे। आथी पण वधारे चिन्ताजनक आपणे त्यां, मारी दृष्टिए, crisis ofc on passion-करुणानी कटोकटी—ऊभी थई छे। मानवीना दिलमांथी करुणा उत्तरोत्तर ओसरती आवी छे। करुणाना सोरसवा साथे आखी मानवसंस्कृति अने सभ्यता जोखमावा लागी छे। 'एमां शुं ?', 'एमां शुं ?' एम कहेतो कहेतो गमे तेटली हिंसा आचरतां आजनो मानवी अचकातो नथी। हीरोशीमानो नाश हजु आपणे गई काले, जोयो; आथी भयंकर विनाश, मानवीचित्तमां थई रहेला करुणालोप साथे, आपणा माथा उपर डेमोकलीसनी तरवार माफक लटकी रह्यो छे। आ आखी नोंधनुं ध्येय मात्र एक के एकवीश पाडाओने आरीते मरता बचाववानुं नथी-काळना क्रम मुजब एने कोई मारवानुं छे अथवा ए स्वतः मरवाना छे-पण आजे एथी पण वधारे महत्त्वनो सवाल छे ओसरती जतो करुणाने बचाववानो अने एमां कोई शक नथी के मुंबई सरकारे प्रजा-मनोरंजननी आ जे नवी प्रवृत्ति हाथ धरी छे तेनुं सीधुं के आड कतरु एक परिणाम निःसहाय पणे मानवीना दिलमां रहेली करुणावृत्तिने अल्प या अधिक अंशे छेदवामां आववानुं छे। 'आ रीते मराता पाडाने बचावो। ए पाछळ खरो पुकार तो छे, 'आजे सुप्त थती जती करुणाने बचावो।, कारण के करुणा जो मानवीना दिलमांथी नाबूद थशे तो मानवी पशु नहि पण राक्षस बनी

जशे, अने पाछी बाह्य विभूतिओना गंजना गंज खडकाशे तोपण मानवीजीवनमां जोवचा जेवुं कशुं तत्त्व नहि रहे।

आजनी दुन्यवी परिस्थितिमां रहेलुं आ भयस्थान लाचुं होय तो प्रस्तुत चर्चाना संदर्भमां अहींनी के अन्य प्रदेशनी कोई पण सरकार पासेथी आटली अपेक्षा राखवी वधारे पडती नहि लेखाय के कोई पण जवाबदार सरकार आनंदमजानां के सहेलगाहोने लगतां एवां कोई आयोजन न ज करे के जेनुं परिणाम शासित प्रजाने सरवाळे आजे ते जेवी छे ते करतां वधारे घातकी, निष्ठुर क्रूर बनवामां आवे अने स्पेनमां आखलाओनी जे प्रकारनी साठमारी चाले छे ते प्रकारे अन्य निर्दोष अवाक प्राणीओनी रिबामणी ए ज लोकोना आनंदनो विषय बनी जाय।

बीजा देशमां लोकोनां मनोरंजनार्थे गमे ते प्रवृत्तिओ चालती होय, पण आपणे भगवान महावीर, बुद्ध अने महात्मा गांधी द्वारा जे दयानो अने करुणानो वारसो मल्यो छे ते जोतां आपणे त्यांनां लोकरंजननां आयोजनो कोई पण काळे हिंसाप्रधान नहि होय, परपीडनलक्षी नहि होय-आटली आपणा देशनी विशेषता सदा जळवाई रहेवी घटे छे। आ रीते विचारतां प्रजाकल्याणनी दृष्टिए तथा प्रजामानसमां करुणावृत्ति स्थिरप्रतिष्ठ बने ए हेतुथी उपर जणावेला पाडाना प्रत्यक्ष वध साथे जोडायलो सिंहो जोवानो मुंबई सरकार द्वारा गोठवायलो प्रबंध त्वरित बंध करवा जवाबदार सत्ताधीशोने आग्रहपूर्वक अनुरोध करवामां आवे छे।

—०—

३

उपयोगवाद विरुद्ध वत्सलाबहेनने पत्र

दयामुनि

या देवी सर्वभूतेषु वात्सल्यरूपे तिष्ठति
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्य सर्वदा

पूज्य पुनित मातृहृदय वत्सलाबहेननी पवित्र सेवामां, अहिंसा परमधर्म छे' कारण के मृत्युलोकमां सात्त्व अने मनुष्यत्व बन्ने परमात्मीय बक्षिस अहिंसाए ज आपी छे। माणस जे दिवसे जन्म्यो ते दिवसे असहाय हतो। ए दिवसे अहिंसा-मातृहृदये ज एनुं रक्षण कर्युं हतुं अने अहिंसा ज एनुं रक्षण करे छे।

अहिंसाए मानवने नहि परंतु मानवताने जन्म आप्यो छे अने स्नेहार्द्र हृदयथी पोष्यों छे। आ सकल सृष्टिनो महानियम अहिंसा, वात्सल्य, प्रेम, करुणा, दया, उदारता, क्षमा छे जेनाथी मातृहृदय बाळकने उछेरे छे, प्रेमथी पोषे छे। तेना माटे अगरबत्तीनी जेम आत्मविसर्जन फना थई विराट विश्वपुरुष बनवानुं छे। स्वार्थी मटी परार्थी -परमार्थी बनवानुं छे। परार्थ-परमार्थमां स्वार्थ अनुभववानो छे। सत्पुरुषो पोतानी प्रतिकृतिरूप विश्व एकोऽहं बहुस्याम् समजी विश्वना सर्व भूतोना हितार्थे श्रेयार्थे जीवन समर्पण करीने विश्वने बोधपाठ आपे छे। वासुदेव सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः आ गीता माताना महद्‌वाक्यनी तेओ जीवंत मूर्ति होय छे।

दुनियाना सर्व धर्मो अने संतो जैन, बौद्ध, वेद ईसाई, इस्लाम, जरथुस्त्र एक ज प्रेमधर्म-रहमधर्म प्रबोधे छे।

प्रेम-स्नेह-करुणा वरसावनार रहम दिल छे। (कुराने शरीफ -महम्मद पेगंबर)

Do not kill, blessed are the merciful

हिंसा न करो दयालु सुखी छे (महात्मा इसु-बायबल) अहिंसा मातामां वात्सल्य बनीने उभयराय छे, अने दूध बनीने मानवमां अन्तर्व्याप्त बनी जाय छे। अहिंसा पितामां प्रेम बनीने खीले छे,अने कर्तव्यनुं रूप लईने मानव जगमनुं पोषण करे छे। अहिंसा भाई मां स्नेह बनीने उभराय छे, अहिंसा पत्नी बनीने आवे छे, अने दया, उदारता अने सौम्यताना रूपमां विस्तार पामे छे। अहिंसा श्रमण संस्थानी मौलिक प्रेरणा छे, जेनाथी श्रमण त्रिलोक्य पूज्य बन्या छे अहिंसाए भक्तोने भगवान, नरने नारायण अने मानवने महामानव बनावी दीधा छे।

पश्चिम अने पूर्वमां हिंसा सामे अहिंसाए अनादि काळथी अवाज उठाव्यो छे। पाइथेगोरस, प्लेटो 'सोक्रेटीस' जीसस, अलेकझांडर पोप, शेक्सपीयर, शेली, ड्रायडन, काउपर, संत फ्रान्सीस, बर्नाडशो, विक्टरह्युगो, आनार्किंग्सफोर्ड अने वर्तमान युगमां आल्बर्ट स्वीत्झर, पश्चिमना चिंतको, वेगनो जेओनी संख्या दिन-प्रतिदिन सर्व देशो आस्ट्रेलिया, अमेरिका अने आफ्रिकामां वधती जाय छे। वेगन लोको तो अहिंसाने टोचे-शिखरे पहोंचाय छे; जेओए प्राणीज पदार्थ दूध, दही घी, माखण, छाश, पनीर मध, चामडुं, रेशम वगेरेनो त्याग अपनाव्यो छे अने खेती के वाहनमां बळद, घोडानो उपयोग करता नथी।

आपणे आर्य संस्कृतिनुं धावण धाव्या छतां समयना प्रवाहमां तणाया छीए, अने आपणी अंदर वर्तती प्रकटती

सव्वे जीवा सुह साया दुःख पडिकुलो
सव्वे जीवावि इच्छन्ति जीविउं, न मरिज्जिउं
तम्हा पाणि वहुं घोरं निग्गथापरिवज्जन्ति

(महावीर)

बधा जीवोने साता-प्रिय अने दुःख प्रतिकूल छे, वळी बधा जीववा इच्छे छे, मरवुं कोई इच्छतुं नथी, माटे निर्ग्रंथ मुनिओ प्राणीवध जे घोर भयंकर छे तेने छोडे।

अहिंसा सव्वपाणानं, अरियो ति पवुच्चति

(भगवान बुद्ध)

बधा प्राणीओ साथे जे अहिंसा सेवे छे, तेओ आर्य कहेवाय छे।

ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः
सर्व भूत जीवयोनिना कल्याणमां ज गुंथायला मने पामे छे।

(भगवान श्री कृष्ण-गीताजी-)

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्
तारा आत्माने प्रतिकूळ आचरण, बीजा प्रति न आचर।

परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्
बीजा प्रति उपकार धर्म अने बीजाने दुःख देवुं अधर्म छे।

(वेद-भगवान व्यास)

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे
आपणे बधा मित्रनी दृष्टिथी सर्व सर्जनने जोईए

बिस्मिल्लाह, हिर रहमान हिर रहीम-हुं खुदा
शरू करुं छुं, जे प्रेममूर्ति-वात्सल्यमूर्ति छे, अ

प्रेम-स्नेह-करुणा वरसावनार रहम दिल छे। (कुराने शरीफ -महम्मद पेगंबर)

Do not kill, blessed are the merciful

हिंसा न करो दयाळु सुखी छे (महात्मा इसु-बायबळ) अहिंसा मातामां वात्सल्य बनीने उभयराय छे, अने दूध बनीने मानवमां अन्तर्व्याप्त बनी जाय छे। अहिंसा पितामां प्रेम बनीने खीले छे,अने कर्तव्यनुं रूप लईने मानव जगमनुं पोषण करे छे। अहिंसा भाई मां स्नेह बनीने उभराय छे, अहिंसा पत्नी बनीने आवे छे, अने दया, उदारता अने सौम्यताना रूपमां विस्तार पामे छे। अहिंसा श्रमण संस्थानी मौलिक प्रेरणा छे, जेनाथी श्रमण त्रिलोक्य पूज्य बन्या छे अहिंसाए भक्तोने भगवान, नरने नारायण अने मानवने महामानव बनावी दीधा छे।

पश्चिम अने पूर्वमां हिंसा सामे अहिंसाए अनादि काळथी अवाज उठाव्यो छे। पाइथेगोरस, प्लेटो 'सोक्रेटीस' जीसस, अलेक्झांडर पोप, शेक्सपीयर, शेली, ड्रायडन, काउपर, संत फ्रान्सीस, बर्नाडशो, विकटरह्युगो, आनाकिंग्सफोर्ड अने वर्तमान युगमां आल्बर्ट स्वीत्झर, पश्चिमना चिंतको, वेगनो जेओनी संख्या दिन-प्रतिदिन सर्व देशो आस्ट्रेलिया, अमेरिका अने आफ्रिकामां वधती जाय छे। वेगन लोको तो अहिंसानी टोचे-शिखरे पहोंचाय छे; जेओए प्राणीज पदार्थ दूध, दही घी, माखण, छाश, पनीर मध, चामडुं, रेशम वगेरेनो त्याग अपनाव्यो छे अने खेती के वाहनमां बळद, घोडानो उपयोग करता नथी।

आपणे आर्यसंस्कृतिनुं धावण धाव्या छतां समयना प्रवाहमां तणाया छीए, अने आपणी अंदर वर्तती प्रकटती

सव्वे जीवा सुह साया दुःख पडिकुलो
सव्वे जीवावि इच्छन्ति जीविउं, न मरिज्जिउं
तम्हा पाणि वहुं घोरं निग्गथापरिवज्जन्ति

(महावीर)

वधा जीवोने साता –प्रिय अने दुःख प्रतिकूल छे, वळी वधा जीववा इच्छे छे, मरवु कोई इच्छतु नथी, माटे निग्रंथ मुनिओ प्राणीवध जे घोर भयंकर छे तेने छोडे।

अहिंसा सव्वपाणान्, अरियो ति पवुच्चति

(भगवान बुद्ध)

वधा प्राणीओ साथे जे अहिंसा सेवे छे, तेओ आर्य कहेवाय छे।

ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः
सर्व भूत जीवयोनिना कल्याणमां ज गुंथायला मने पामे छे।

(भगवान श्री कृष्ण-गीताजी-)

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्
तारा आत्माने प्रतिकूळ आचरण, वीजा प्रति न आचर।

परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्
वीजा प्रति उपकार धर्म अने वीजाने दुःख देवु अधर्म छे।

(वेद–भगवान व्यास)

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे
आपणे वधा मित्रनी दृष्टिथी सर्व सर्जनने जोईए।

विस्मिल्लाह, हिर रहमान हिर रहीम–हुं खुदाना नामथी शरू करुं छुं, जे प्रेममूर्ति –वात्सल्यमूर्ति छे, अने खरेखर

प्रेम-स्नेह-करुणा वरसावनार रहम दिल छे । (कुराने शरीफ -महम्मद पेगंबर)

Do not kill, blessed are the merciful

हिंसा न करो दयाळु सुखी छे (महात्मा इसु-बायबल)

अहिंसा मातामां वात्सल्य वनीने उभयराय छे, अने दूध बनीने मानवमां अन्तर्व्याप्त वनी जाय छे । अहिंसा पितामां प्रेम वनीने खीले छे, अने कर्तव्यनुं रूप लईने मानव जगमनुं पोषण करे छे । अहिंसा भाई मां स्नेह बनीने उभराय छे, अहिंसा पत्नी वनीने आवे छे, अने दया, उदारता अने सौम्यताना रूपमां विस्तार पामे छे । अहिंसा श्रमण संस्थानी मौलिक प्रेरणा छे, जेनाथी श्रमण त्रिलोक्य पूज्य बन्या छे अहिंसाए भक्तोने भगवान, नरने नारायण अने मानवने महामानव बनावी दीधा छे ।

पश्चिम अने पूर्वमां हिंसा सामे अहिंसाए अनादि काळथी अवाज उठाव्यो छे । पाइथेगोरस, प्लेटो 'सोक्रेटील' जीसस, अलेकझांडर पोप, शेक्सपीयर, शेली, ड्रायडन, काउपर, संत फ्रान्सीस, वर्नार्डशो, विकटरह्युगो, आनार्कि-ग्सफोर्ड अने वर्तमान युगमां आल्वर्ट स्वीत्झर, पश्चिमना चिंतको, वेगनो जेओनी संख्या दिन-प्रतिदिन सर्व देशो आस्ट्रेलिया, अमेरिका अने आफ्रिकामां वधती जाय छे । वेगन लोको तो अहिंसाली टोचे-शिखरे पहोंचाय छे; जेओए प्राणीज पदार्थ दूध, दही घी, माखण, छाश, पनीर मध, चामडुं, रेशम वगेरेनो त्याग अपनाव्यो छे अने खेती के वाहनमां बळद, घोडानो उपयोग करता नथी ।

आपणे आर्यसंस्कृतिनुं धावण धाव्या छतां समयना प्रवाहमां तणाया छीए, अने आपणी अंदर वर्तती प्रकटती

अहिंसाज्योत रूपी संस्कृतिने अवगणी छे। वाल्मीकि, अने व्यास मुनिना नामे शास्त्रोमां धर्मना नामे क्षेपक श्लोको दाखल करी हिंसा घुसाडी छे। परंतु आनो विरोध वेदांतकेसरी स्वामी दयानंद सरस्वतीए अने पंडित सातवलेकरजीए गोरक्षा कल्पतरुमां आप्यो छे।

देशनी किंमती जमीन आपणी संकुचित दृष्टिने लीधे अर्थना मोहमां तमाकुनी उत्पत्तिमां वापरीए छीए। आ दुर्व्यय अटकावी दारुथी पण बदतर अनुत्पादक तमाकुनो बहिष्कार पोकारवो जोईए अने अनाजनी तंगीमां आ जमीननो उपयोग आपवो जोईए, जेथी देशनी अनाजनी खाद पुराय। हिंदुस्तान उष्णकटिबंध प्रदेश होवाथी अहीं तो नंदनवन आ विज्ञानना युगमां बनावी शकाय तेम छे।

विज्ञानना नामे दवाना प्रयोगोना नामे इंग्लांडमां गये वर्षे–१९६० मां ३३ लाख जनावरोनो संहार थयो। तेओने रिबाई रिबाई ने मरवु पडयुं आ आपणी आर्यसंस्कृतिनुं कलंक छे।

जनावरो–प्राणीज योनि मनुष्यआश्रित छे। तेओ आपणां लघु बाळको छे। आपणे तेमने अवगणीशुं तो तेमनो धणीधोरी कोण? तेमना दुःखे दुःखिया ने सुखे सुखिया थइशुं तो आपणी मानवता दीपी ऊठशे। हिंसामां हिणमानवता छे।

पश्चिममां आवी घोर हिंसा सामे चळवळ चालु छे। Anti-Vivisectionist– Vegetarian News, American Vegetarian संस्थाओ सामयिको चलावे छे। जेनी सेंकडो शाखाओ छे। जेना रिपोर्टमां तेमना तरफथी चालती शाकाहारी होटलो अने प्रचारकार्यनी नोंध प्रकट थाय छे। वनस्पत्याहारीनी वस्तीगणत्री अमेरिकामां त्रीस लाख सुधी पहोंची छे।

कुदरतनी योजना एवी छे के मनुष्ये आव-पाणीना सर्जननो उपयोग करवो । पाणीनु सर्जन वनस्पति फळसृष्टि छे; ज्यारे पेसाबनी सृष्टि पशु, पक्षी, जलचरो छे । तेनो-उपयोग खाद्यमां न करवो । जेनो स्पर्श नापाक बनावे एवो पेसाब, तेनाथी उत्पन्न थतां पशुओ तिर्यंचयोनिना जीवोनो आपणा खाद्यपदार्थो तरीके उपयोग न ज करवो ।

कुदरतनी योजना प्रमाणे मनुष्य सर्व प्राणीमात्र साथे अनुसंधायेलो छे । सृष्टिसर्जननी माळानो ते मुख्य मणको मेळ छे । ते सर्वतोरक्षक, सर्वतोभद्र छे । ते सर्वतोभक्षक संहारक नथी । कुदरतमां सर्व समतुल समाप छे । पोतानु डहापण सर्जीने कुदरतनी शांतिमां विक्षेप आणवानो नथी । ते शुद्ध बुद्ध मुक्त बने ।

स्वयंभू रमण स्पर्धी करुणारस वारिणा
अनंतजिन अनंताश्च प्रयच्छतु सुखश्रियः

विशेष शुं लखु ? जेवु तमारु हृदय वत्सल स्नेहार्द्र छे, तेवु तमारुं मन बुद्धि बनावो । वहार जुवो नहि, पटले सर्व समाधान जागशे । शांति प्रकटशे, आनंद व्यापशे । इति ॐ शांति मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।

— ० —

४

वत्सलाबहेनने जवाब

मुनिश्री जेठमलजी

वत्सलाबाई प्रबुद्ध छापामां मांसाहारने समर्थन आपे छे के हिन्दमां मोटो भाग मांसाहार करे छे-ना जवाबमां जगतमां अज्ञानतानो मोटो भाग होवाथी जीवदयाना संस्का-

रना अभावेगअने जीवना स्वादने कारणे करे छे। हराम वस्तु लोकप्रिय होवाथी कीडी जेवी नानी जीवात पण गोळ साकर उपरथी मांसना लोचा उपर दोडी जशे। कूतराने लाडवा नाखवा छतां रुधिरभीना हाडकाने वधु पसंद करी तेने चगळशे, हाडकानी कणस मोढामां लागतां पोताना मोढामां नीकळता लोहीने हाडकामांथी नीकळतुं मानी तेने वधु चगळशे, जीवनो स्वभाव ज अधोगामी छे। भूतकाळमां घणा भवमां ते खाधेल होवाथी, तेनी स्मृति ताजी थतां भूतपूर्वनी टेवने वश बनशे। पण मान वीभवमां सुसंस्कारने लई घटिताघटित, पेचापेव, भक्ष्याभक्ष्यनुं भान थतां तेने छोडी दे छे। अज्ञान एक मोटी बदी छे, ईश्वरी शाप छे।

वत्सलाबाई कहे छे के जैनो अहिंसक होवानो दावो करनार मोती अने रेशमनो वेपार करी शके खरा ? जे मोती छीप अने काळु नामनी माछलीमांथी नीकळे छे तेना पेटमांथी चीरीने काढवामां आवती होवाथी ते हिंसा नहीं ? जवाबमां आज सुधी मोती छीपमांथी नीकळवानी माहिती होवाथी ते छीप बे इन्द्रिय जीव छे। पंचेन्द्रियकरतां ओछुं पाप होवा साथे खावुं ए एक वस्तु छे अने शरीर उपर धारण करवुं ए बीजी वस्तु छे। मांस खावा साथे मदिरापान करवामां आवे छे, कारण ? ते पचावनार छे। आथी बुद्धि बगडे छे, अने दया नाबूद थाय छे त्यारे मोती पहेरवाथी एवी असर थती नथी, तेथी अस्थाने छे। वळी खावुं अने पहेरवुं एमां घणी ज असमानता छे। झेर खावाथी मृत्यु थाय छे, पण हाथमां लेवाथी मृत्यु थतुं नथी। ए उपनये घण विरोधाभास ऊभो थाय छे। मोतीनो वेपार एकला जैनो ज करे छे तेम नथी, जगतभरमां करनारा छे जैनो तो मूठीभर

होवाथी कदाच छोडीदे तो पण उत्पादन बंध न थाय, पण जगत बंधु जो छोडी दे तो बन्ध थाय । भालनुं पण तेम ज छे ।

मांसमां समे समे त्रसजीव उत्पन्न थाय छे, पण मोतीमां थता नथी । तेथी पंचेन्द्रियना मांसनो खानारो नर्के जवानुं भगवान महावीर प्रभुए कहेल छे । हिंसानी व्याख्यामां तो भाजीपालो वगेरे एकेन्द्रिय जीवनो समावेश थवाथी ते पण न खावां । गई ता. —१०–६१ ना रोज अमदावादमां जैन तपस्वी साधु चतुरलालजी महाराजे जेम आजीवन अन्नपाणीना करेल त्याग मुजब जगत बधुं करे तो खूब ज इच्छवा योग्य छे, पण ते बनवुं जेम अशक्य छे तेम वनस्पत्याहारनो त्याग करवो अशक्य बनी जाय छे । तेथी ते प्रश्न अतिप्रश्न होवाथी अस्थाने छे । तर्क करतां कुतर्को अनंत छे । अलबत्त, मांस खानारा अन्ननो त्याग करता नथी, जो करता होय तो बराबर छे, तो ते बचेलअन्न वनस्पत्याहारीने आपवाथी अन्ननो प्रश्न सहेलाईथी हल थाय ।

रेशमनुं पण तेम ज छे । कोशेटो–जीव बे इन्द्रिय छे । तेनी साथे तेमांथी थता रेशममां समे समे तेमां त्रसजीव उत्पन्न थता, नथी तेथी मांस खावा साथे तेनो मुकाबलो अस्थाने छे । जैन धर्मनुं ज्ञान जगतना धर्मना मुकाबले घणुं ऊंडुं होवाथी तेनो अभ्यास करवो जोईए । जगतमां बे इन्द्रिय, त्रेन्द्रिय चौरेन्द्रिय, जीव कया कया ? ते जैन सिवाय कोई जाणतुं नथी ।

त्रीजो प्रश्न छे जैन साधु मुंबईमां गुजराती हस्पितालमां सारवार लई रहेल तेनो । साधुओ, इन्जेकशनो अने दवाओ लेता तमे जोयेल छे ते छे । तेमां पंचेन्द्रिय जीव

वांदरा, वाछडा, कूतरा अने ससलाने चीचोडामां पीली तेना शरीरमांथी नीकळतां रसनां ईन्जेकशनो वनतां होवाथी ते लेवां न जोईए। वळी अंग्रेजी दवा वे प्रकारनी पैकी, प्रवाहीमां अने लाईकर होई छे। तेमां प्रवाहीमां दारू आवतो होवाथी तें न खपे, अने लाईकर नाम भूकी खपे। तेमां पण टीकडीओ वगरेमां पण इंडांनो रस अने अमुक जीवोतुं मांस आवतुं होवाथी ते पण न खपे। अर्थात जैन साधु विलायती दवा न लई शके ते वात तमारी माननीय होवाथी तेना मांटे ध्यान खेंचवा वदल तमारो हार्दिक आभार मानवो रह्यो एम हुं तो मानुं छुं।

— ० —

९

अहिंसानी उत्क्रान्ति

परमानन्द कापडिया

['करुणाविचार विरुद्ध उपयुक्ततावाद' ए मथाळा नीचेनी लेखमाळाना उपसंहारमां श्री परमानंदभाईए पशु-सृष्टिने केन्द्रमां राखीने अहिंसाविचारनी विस्तारथी आलोचना करीछे। ए ज विचारनी चर्चा मानवीने केन्द्रमां राखीने श्री परमानंदभाईए आजथी २२ वर्ष पहेलां एटले १९४०ना जुलाईनो ३१ थी सप्टेम्बरनी १५मो सुधीना 'प्रवुद्ध जैन' ना चार अंकोमां 'अहिंसानी उत्क्रान्ति' ए मथाळा नीचे करी हती। अहिंसा जेवा महत्त्वना विषय उपर चिन्तन करतां भाई-बहेनोने आ लेखमाळा एक पूरक विचारणा तरीके उपयोगी थशे एम समजीने प्रस्तुत पुस्तकना परिशिष्टरूपे ए लेखमाळाने प्रगट करवानुं अमोए उचित धार्युं छे।

प्रकाशक]

भूतकाळना गर्भागारमां ऊंडे ऊंडे आपणे नजर नाखीए छीए तो अहिंसानो विचार मानवीमां मानवता प्रगटी ते घडीथी प्रादुर्भाव पाम्यो होय एम मालूम पडे छे। ए घडी कई हती ते तो आज सुधीमां शोधायलो इतिहास कही शके तेम नथी। पण एक काळे एवी परिस्थिति कल्पी शकाय छे के ज्यारे मानवी अने पशु वच्चे मानवीनी क्रमकुशलता सिवाय बीजो कशो पण तफावत नहि होय। ज्यारे मानवी मनुष्येतर सृष्टिनो फावे तेवो उपयोग करतो हशे, एटलुं ज नहि पण, सशक्त मानवी पोताना स्वार्थ खातर अन्य निर्बळ आदमीओ उपर पण गमे तेवां आक्रमणो कर्ये जतो हशे अने कोईनी गरदन उपर हथियार चलावतां तेनो हाथ जरा पण पाछो पडतो नहि होय, एवी परिस्थिति चालती हशे; एवामां एकाएक तेने विचार आव्यो हशे के "मारो कोई प्राण लेवा आवे तो जेम मने भारे दुःख थाय छे तेम जेनो प्राण लेवाने हुं प्रवृत्त थाउं छुं तेने पण एटलुं ज भारे दुःख केम नहि थतुं होय? जे मने न गमे ते तेने पण केम गमे? अने जो आम छे तो जेम सामेनो माणस मने जरा पण इजा न थाय एम वर्ते एवी हुं तेना तरफथी अपेक्षा राखुं छुं ते मुजब तेने पण माथारी जराये इजा न थाय एवी रीते ज मारे तेनी साथे वर्तवुं जोईए। अन्यथा वर्तुं ते योग्य न कहेवाय।" आ विचारमाळमांथी अहिंसावृत्तिनो उद्भव थयो हशे; धर्मबुद्धिनी जागृति थई हशे।

अनेक पशुपक्षीओ पण ए काळे निर्दोष जीवन गाळतां हतां अने आजे पण गाळे छे। केटलांय पशुपक्षीओ ए काळे निरामिष आहारी हतां अने आजे पण छे। आ कारणे तेमने अहिंसक कहेवां ए वाजबी नथी। पशुपक्षीओ संज्ञाप्रधान प्राणीओ छे; तेओ पोतानी संज्ञाना आदेश अनुसार

हिंसा-अहिंसा आचरे छे। आ उपरथी तेओ खरी रीते हिंसक के अहिंसक ठरतां नथी। हिंसा-अहिंसाने जागृत हृदय अने बुद्धि साथे संबंध छे अने ए जागृत हृदय अने बुद्धि मात्र मानवजातने ज वरेली छे। एक ज सरखा संयोगोमां एक माणस बुद्धिपुर्वक मांसाहार करे छे, बीजो माणस बुद्धिपुर्वक निरामिष भोजन स्वीकार छे; एक माणस समजी करीने अन्य उपर शस्त्रप्रयोग करे छे, बीजो माणस अन्यथा विचार करीने कोई उपर हिंसक आक्रमण करतां अटकाय छे-पाछो फरे छे। जेवो जेनो निर्णय अने ते मुजब जेवी जेनी प्रवृत्ति होय छे ते मुजब ते मानवी हिंसक या तो अहिंसक ठरे छे।

उपर जणाव्युं ते मुजब मानवीना मानसमां एक वखत अहिंसानी वृत्तिनो उद्भव थयो। पछी तो ते वृत्ति दिन-प्रतिदिन पोषावा अने संवर्धित थवा लागी। ते ज विचार अने वृत्तिना आधारे मानवीकुटुंबो अने मानवसमाजनी रचना थवा लागी। ते ज भावनामांथी मोटी मोटी धर्मसंस्थाओ ऊभी थवालागी। ते ज कल्पनामांथी जेम आसपास वसता मानवीओ प्रत्ये तेम ज चोतरफ विचरती पशुसृष्टि प्रत्ये पण अहिंसानी दयानी भावना फेलावा लागी। आ अहिंसाविकासना इतिहासनुं मोटामां मोटुं सीमाचिह्न ते भगवान बुद्ध अने महावीरनो युग। भगवान बुद्धे जगतने मानव बन्धुतानो संदेश आप्यो अने मानवीना जन्म, जरा व्याधि अने मृत्युनां दुःखो जोई ने करुणापरायण बनेला तेमणे जगतना लोकोने ते दुःखचक्रमांथी उगरवानो मार्ग दर्शाव्यो। भगवान महावीर आथी पण आगळ गया अने मात्र मनुष्यसृष्टि नहि, मात्र पशुसृष्टि नहि, पण जड गणाती

छतां चैतन्यथी भरेली वनस्पतिसृष्टि सुधी तेमणे अहिंसानी परिघरेखाने लम्बावी अने मिति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई। ए सूत्रनी तेना वास्तविक अर्थमां उद्घोषणा करी। माणसे पोताना जीवनमां अहिंसा केवी रीते उतारवी अने संपूर्णांशे आचरवी ए प्रश्ननी अपूर्व झीणवटभरी तेमणे मीमांसा करी अने अहिंसक आचारनुं अद्भुत शास्त्रीय विज्ञान रच्युं। आ आखुं अहिंसाशास्त्र व्यक्तिना आध्यात्मिक मोक्षने ध्येयस्थाने राखीने रचवामां आव्युं हतुं। समाजना ऐहिक कल्याण -अकल्याणनी दृष्टि तेमां गौण हती। संसार तो छे एवोने एवो चालवानो छे; समाजनुं चक्र पण हिंसा अहिंसाना चित्रविचित्र चीला उपर चाल्या करवानुं छे; राजकारणनो तो पायो ज हिंसा उपर छे; समाजसुधारानी वातो करवी ते आखरे कोठी धोईने कादव काढवा जेवुं छे! अनादिकाळथी आत्मा कर्मबंधोथी जकडायलो छे। ते कर्मबंधोनुं मूळ रागद्वेष अने तेमांथी परिणमती हिंसा छे। समाज साथे जेटलो गाढ संबंध तेटलां रागद्वेषनां निमित्तो वधारे अने ते निमित्तो हिंसक आचार तरफ ज व्यक्तिने आखरे घसडी जवानां। माटे जे व्यक्ति ओने कर्मबंधोथी मुक्त थईने आध्यात्मिक मोक्ष-पारलौकिक मुक्ति मेळववानी आकांक्षा होय तेणे समाज साथेनो संबन्ध तोडी नाखवो अने देहनो अध्यास बने तेटलो कमी करवो, रागद्वेषनां मूळ छेदवा अने हिंसाने पोताना जीवनमांथी संपूर्णांशे नाबूद करवी।

आ रीते प्ररूपायेली अहिंसाए मानवव्यक्ति माटे तो एक भव्य आदर्श अने तेने पहोंची वळवानो योग्य कार्यक्रम रजू कर्यो पण समाजनां वहेण तो वहेतां हतां एवां ज लगभग वहेतां रह्यां। शुद्ध अहिंसकनी दृष्टिए राजकथा -देशकथा -धर्म्य

हिंसा-अहिंसा आचरे छे । आ उपरथी तेओ खरी रीते हिंसक के अहिंसक ठरतां नथी । हिंसा-अहिंसाने जागृत हृदय अने बुद्धि साथे संबंध छे अने ए जागृत हृदय अने बुद्धि मात्र मानवजातने ज वरेली छे । एक ज सरखा संयोगोमां एक माणस बुद्धिपूर्वक मांसाहार करे छे, बीजो माणस बुद्धिपुर्वक निरामिष भोजन स्वीकार छे; एक माणस समजी करीने अन्य उपर शस्त्रप्रयोग करे छे, बीजो माणस अन्यथा विचार करीने कोई उपर हिंसक आक्रमण करतां अटकाय छे-पाछो फरे छे । जेवो जेनो निर्णय अने ते मुजब जेवी जेनी प्रवृत्ति होय छे ते मुजब ते मानवी हिंसक या तो अहिंसक ठरे छे ।

उपर जणाव्युं ते मुजब मानवीना मानसमां एक वखत अहिंसानी वृत्तिनो उद्भव थयो । पछी तो ते वृत्ति दिन-प्रतिदिन पोषावा अने संवर्धित थवा लागी । ते ज विचार अने वृत्तिना आधारे मानवीकुटुंबो अने मानवसमाजनी रचना थवा लागी। ते ज भावनामांथी मोटी मोटी धर्मसंस्थाओ ऊभी थवालागी । ते ज कल्पनामांथी जेम आसपास वसता मानवीओ प्रत्ये तेम ज चोतरफ विचरती पशुसृष्टि प्रत्ये पण अहिंसानी दयानी भावना फेलावा लागी । आ अहिं-साविकासना इतिहासनुं मोटामां मोटुं सीमाचिह्न ते भगवान बुद्ध अने महावीरनो युग । भगवान बुद्धे जगतने मानव बन्धुतानो संदेश आप्यो अने मानवीना जन्म, जरा व्याधि अने मृत्युनां दुःखो जोई ने करुणापरायण बनेला तेमणे जगतना लोकोने ते दुःखचक्रमांथी उगरवानो माग दर्शाव्यो । भगवान महावीर आथी पण आगळ गया अने मात्र मनुष्यसृष्टि नहि, मात्र पशुसृष्टि नहि, पण जड गणाती

छतां चैतन्यथी भरेली वनस्पतिसृष्टि सुधी तेमणे अहिंसानी परिधरेखाने लम्बावी अने मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई । ए सूत्रनी तेना वास्तविक अर्थमां उद्घोषणा करी। माणसे पोताना जीवनमां अहिंसा केवी रीते उतारवी अने संपूर्णांशे आचरवी ए प्रश्ननी अपूर्ण झीणवटभरी तेमणे मीमांसा करी अने अहिंसक आचारनुं अद्भुत शास्त्रीय विज्ञान रच्युं । आ आखुं अहिंसाशास्त्र व्यक्तिना आध्यात्मिक मोक्षने ध्येयस्थाने राखीने रचवामां आव्युं हतुं । समाजना ऐहिक कल्याण -अकल्याणनी दृष्टि तेमां गौण हती । संसार तो छे अेवोने एवो चालवानो छे; समाजनुं चक्र पण हिंसा अहिंसाना चित्रविचित्र खीला उपर चाल्या करवानुं छे; राजकारणनो तो पायो ज हिंसा उपर छे; समाजसुधारानी वातो करवी ते आखरे कोठी धोईने कादव काढवा जेवुं छे ! अनादिकाळथी आत्मा कर्मबंधोथी जकडायलो छे । ते कर्मबंधोनुं मूळ रागद्वेष अने तेमांथी परिणमती हिंसा छे । समाज साथे जेटलो गाढ संबंध तेटलां रागद्वेषनां निमित्तो वधारे अने ते निमित्तो हिंसक आचार तरफ ज व्यक्तिने आखरे घसरी जवानां । माटे जे व्यक्ति ओने कर्मबंधोथी मुक्त थईने आध्यात्मिक मोक्ष-पारलौकिक मुक्ति मेळववानी आकांक्षा होय तेणे समाज साथेनो संबन्ध तोडी नाखवो अने देहनो अध्यास बने तेटलो कमी करवो, रागद्वेषनां मूळ छेदवा अने हिंसाने पोताना जीवनमांथी संपूर्णांशे नाबूद करवी।

आ रीते प्ररूपायेली अहिंसाए मानवव्यक्ति माटे तो एक भव्य आदर्श अने तेने पहोंची वळवानो योग्य कार्यक्रम रजू कर्यो पण समाजनां वहेण तो वहेतां हतां एवां ज लगभग वहेतां रह्यां । शुद्ध अहिंसकनी दृष्टिए राजकथा -देशकथा -वर्ज्य

गणावा लागी। आ अहिंसाशास्त्रमां समाजथी पोतानो संबंध उत्तरोत्तर कमी करीने आध्यात्मिक दिशाओ आगळ वधवा इच्छनार माटे उत्तरोत्तर उच्चतर गुणस्थानकोनी सरस आयोजना करवामां आवी हती। पण समाजमां रहेनार माणसे केम वर्तवुं, समाजना अने राज्यसत्ताना अन्यायो अने त्रासो निवारवा माटे शुं करवुं, एक राज्य अन्यराज्य उपर आक्रमण करे त्यारे प्रजाजनोए शा शा उपायो हाथमां लेवा, ए बधी बाबतो संबंधमां अहिंसानी दृष्टिए कसो खुलासो तत्कालीन अहिंसाशास्त्रमां जोवामां आवतो नहि। ए वखतनी अहिंसामां माणसे हिंसा न करवी ए वातनी मुख्यता हती, पण कोईने रक्षण आपवानी के उगारवानी, पीडित, त्रासित अने तिरस्कारायेला वर्गने बचाववानी, अथवा तो समाजनां के राज्यनां अघटित शासनोनो सामनो करवानी बाबत मुख्यताए नहोती। 'समाज तो एवो ज होय, राज्य तो एम ज चाले, दरेक वर्गनी ऊंचीनीची स्थिति तेमनां कर्मने आधीन छे।', आवुं ज वलण ए समयनी अने लगभग आजसुधी चाली आवती अहिंसानी दृष्टिमां जोवामां आवे छे। ऊलटुं जे जैनधर्म व्यक्तिने पोतपोतानो कुटुंब अने समाजनो परित्याग करीने-एटले के ते साथे असहकार करीने निवृत्तिमार्ग लेवानुं कहे छे ते ज जैनधर्म राज्यो अने राज्याधीशोने शान्ति इच्छे छे। एनो अर्थ एटलो ज छे के 'ए बधां तंत्रो चालतां होय तेम भले चाले। तुं तेने सुधारनार कोण? तुं तारुं संभाळ अने तारा आत्मकल्याणनो विचार कर!, आ तत्कालप्ररूपित अहिंसामांथी नीकळतो होय एम लागे छे। संक्षेपमां एम कही शकाय के ए अहिंसाना विचार पाछळ व्यक्तिनुं कल्याण मुख्यपणे जोवामां आवे छे। अहिंसानुं व्यक्तिगत आचरण

जरूर समाजकल्याणमां परिणमे छे। एम छतां पण ए इष्ट परिणाम ध्येयना स्थाने नहोतुं, केवळ आनुषंगिक हतुं।

आ विवरणनो अर्थ कोई एम न करे के आ रीते अहिंसाना पूर्वद्रष्टाओ कोई रीते न्यून हता अथवा तो तेमनी दृष्टि संकुचित हती एम कहेवानो के सूचववानो मारो आशय छे। काळे काळे युगपुरुषो पाके छे,जनताना सुखकल्याणने पोषक सनातन जीवनसिद्धांतो रजू करे छे। पोतपोताना काळने अपेक्षीने तेमांना कोई एक सिद्धांत उपर, तो कोई अन्य सिद्धांत उपर वधारे भार मूके छे अने तेने अनुलक्षीने तत्कालीन परिस्थितिने अनुरूप जीवनव्यवहार अने आचार-नियमो तारवे छे। पोताना काळने अपेक्षीने तेमणे जे कांई विधानो कर्यां होय ते ते आकारमां ज आगामी काळने लागु पाडी शकाय ज नहि। काळनी मर्यादा 'सर्वज्ञ-अल्पज्ञ'-सौ कोईने लागु पडे छे।

भगवान बुद्धना अने महावीरना समयमां अने आजना समयमां केटलो फेर छे? ते काळ ए हतो के ज्यारे समाजनी समस्या आटली बधी जटिल नहोती, ऊंचानीचाना भेद आटला तीव्र नहोता, जीवनसंग्राम आटलो कठण नहोतो, एक राज्यनुं अन्य राज्य उपरनुं आक्रमण प्रजाना चालु जीवन उपर आजनी माफक बहु व्यापक असर करतुं नहोतुं, विज्ञान केवळ बाल्यावस्थामां हतुं अने तेनी संरक्षक के संहारक, सुखदायक के दुःखदायक शक्ति आजनी सरखा-मणीए केवळ नजीवी हती। काम ओछुं हतुं,नवराश वधारे हती। शहेरो ओछां हतां अने ते पण आटलां विस्तृत नहोतां, ग्राम्यजीवन ज मुख्यस्थाने हतुं, अने एकान्त अने शांति पुष्कळ हतां। चालु वातावरण ज पारलौकिक विचार अने चिन्तनने पोषक हतुं अने समाजव्यवस्थामां आध्यात्मिक

गणावा लागी । आ अहिंसाशास्त्रमां समाजथी पोतानो संबंध उत्तरोत्तर कमी करीने आध्यात्मिक दिशाओ आगळ वधवा इच्छनार माटे उत्तरोत्तर उच्चतर गुणस्थानकोनी सरस आयोजना करवामां आवी हती । पण समाजमां रहेनार माणसे केम वर्तवुं, समाजना अने राज्यसत्ताना अन्यायो अने त्रासो निवारवा माटे शुं करवुं, एक राज्य अन्यराज्य उपर आक्रमण करे त्यारे प्रजाजनोए शा शा उपायो हाथमां लेवा, ए बधी बाबतो संबंधमां अहिंसानी दृष्टिए कसो खुलसो तत्कालीन अहिंसाशास्त्रमां जोवामां आवतो नहि। ए वखतनी अहिंसामां माणसे हिंसा न करवी ए वातनी मुख्यता हती, पण कोईने रक्षण आपनी के उगारवानी, पीडित, त्रासित अने तिरस्कारायेला वर्गने बचाववानी, अथवा तो समाजनां के राज्यनां अघटित शासनोनो सामनो करवानी बाबत मुख्यताए नहोती । 'समाज तो एवो ज होय, राज्य तो एम ज चाले, दरेक वर्गनी ऊंचीनीची स्थिति तेमनां कर्मने आधीन छे।, आवुं ज वलण ए समयनी अने लगभग आजसुधी चाली आवती अहिंसानी दृष्टिमां जोवामां आवे छे। ऊलटुं जे जैनधर्म व्यक्तिने पोतपोतानो कुटुंब अने समाजनो परित्याग करीने-एटले के ते साथे असहकार करीने निवृत्तिमार्ग लेवानुं कहे छे ते ज जैनधर्म राज्यो अने राज्याधीशोने शान्ति इच्छे छे। एनो अर्थ एटलो ज छे के 'ए बधां तंत्रो चालतां होय तेम भले चाले ! तुं तेने सुधारनार कोण ? तुं तारुं संभाळ अने तारा आत्मकल्याणनो विचार कर !, आ तत्कालप्ररूपित अहिंसामांथी नीकळतो होय एम लागे छे । संक्षेपमां एम कही शकाय के ए अहिंसाना विचार पाछळ व्यक्ति नुं कल्याण मुख्यपणे जोवामां आवे छे। अहिंसानुं व्यक्तिगत आचरण

जरूर समाजकल्याणमां परिणमे छे। एम छतां पण ए इष्ट परिणाम ध्येयना स्थाने नहोतुं, केवळ आनुषंगिक हतुं।

आ विवरणनो अर्थ कोई एम न करे के आ रीते अहिंसाना पूर्वद्रष्टाओ कोई रीते न्यून हता अथवा तो तेमनी दृष्टि संकुचित हती एम कहेवानो के सूचववानो मारो आशय छे। काळे काळे युगपुरुषो पाके छे,जनताना सुखकल्याणने पोषक सनातन जीवनसिद्धांतो रजू करे छे। पोतपोताना काळने अपेक्षीने तेमांना कोई एक सिद्धांत उपर, तो कोई अन्य सिद्धांत उपर वधारे भार मूके छे अने तेने अनुलक्षीने तत्कालीन परिस्थितिने अनुरूप जीवनव्यवहार अने आचार-नियमो तारवे छे। पोताना काळने अपेक्षीने तेमणे जे कांई विधानो कर्यां होय ते ते आकारमां ज आगामी काळने लागु पाडी शकाय ज नहि। काळनी मर्यादा 'सर्वज्ञ-अल्पज्ञ—सौ कोईने लागु पडे छे।

भगवान बुद्धना अने महावीरना समयमां अने आजना समयमां केटलो फेर छे? ते काळ ए हतो के ज्यारे समाजनी समस्या आटली बधी जटिल नहोती, ऊंचानीचाना भेद आटला तीव्र नहोता, जीवनसंग्राम आटलो कठण नहोतो, एक राज्यनुं अन्य राज्य उपरनुं आक्रमण प्रजाना चालु जीवन उपर आजनी माफक बहु व्यापक असर करतुं नहोतुं, विज्ञान केवळ बाल्यावस्थामां हतुं अने तेनी संरक्षक के संहारक, सुखदायक के दुःखदायक शक्ति आचनी सरखा-मणीए केवळ नजीवी हती। काम ओछुं हतुं,नवराश वधारे हती। शहेरो ओछां हतां अने ते पण आटलां विस्तृत नहोतां, ग्राम्यजीवन ज मुख्यस्थाने हतुं, अने एकान्त अने शांति पुष्कळ हतां। चालु वातावरण ज पारलौकिक विचार अने चिन्तनने पोषक हतुं अने समाजव्यवस्थामां आध्यात्मिक

जीवनने महत्त्वनुं स्थान हतुं । आ परिस्थितिमां अहिंसानुं वधारे व्यापक निरूपण ए काळे संभवित ज नहोतुं ।

बीजुं, अहिंसाने मनुष्यजीवन साथे सीधो संबंध होवाथी जेम जेम मानवजीवन पलटातुं जाय छे अने समाजरचना वधारेने वधारे जटिल बनती जाय छे तेम तेम अहिंसाने लगता ख्यालोमां फेरफार तेम ज सुधारा तथा वधारा थता ज जाय छे । अहिंसानो सिद्धान्त एक अने सनातन ए बरोबर, पण ते सिद्धान्त उपरथी नीपजता आचारविचार पलटाता जाय छे। वळी आजे एक क्षेत्रने अहिंसानो विचार लागु पाडवामां आवे तो आवती काले माणसनी बुद्धि आवा कल्याण कल्पद्रुमने बीजा क्षेत्रमां वाववानो विचार न करे ? वळी जो अहिंसाथी व्यक्तिनुं पारलौकिक श्रेय थतुं होय तो तेनुं ऐहिक श्रेय पण अहिंसा वडे केम न सधाय ? जो अहिंसाने व्यक्तिगत जीवन उपर लागु पाडवामां आवे तो सामाजिकजीवन उपर पण शा माटे लागु न पाडवी ? जो व्यक्ति अहिंसक बनीने, पोतानी जातनो भोग आपीने समाजकल्याण साधी शके तो समाज एवी ज रीते अहिंसक बनीने पोताना टूंका स्वार्थनो भोग आपीने राष्ट्रने उन्नत केम न बनावे अने एवी ज रीते राष्ट्र अहिंसाने अख्त्यार करीने जगतनो समग्र उद्धार केम न साधे? अहिंसा जो साचो अने सनातन सिद्धान्त होय तो तेनी मात्र व्यक्तिगत मोक्षसाधना पूरती ज उपयोगिता होई न शके, पण व्यक्ति तेम समाजना ऐहिक जीवनना सर्व अंगउपांगो उपर पण ते लागु पडवी जोईए अने तेनाथी सार्वत्रिक कल्याण थवुं जोईए । आवी रीतनी विचारसरणीमांथी आजे गांधीजीना अहिंसावादनो जन्म थयो छे । आज विचारना टोल्स्टोय, थोरो जेवा अनेक पुरोगामीओ थई गया

छे, पण तेने चोक्कस आकार आपनार अने आखो दुनियाना तारणहार तीर्थ तरीके रजू करनार गांधीजी छे । आ गांधी-वादनो विचार अने तेने अनुसरवा मथती आपनी मर्यादा-ओनो विचार हवे पछो करीशु ं

[२]

जेवी रीते आगळ आपणे जोयु ं के मानवीमां मानव-ताना जन्म साथे ज अहिंसावृत्तिनो उद्भव थयो, पण ए अहिं-सावृत्तिमांथी स्थायी जीवनशास्त्रनु ं निर्माण तो आपणा देशमां भगवान बुद्ध अने महावीरना समयथी ज थयु ं । तेवी ज रीते दुनियाना इतर भागोमां अहिंसावृत्तिनो उद्भव तो कंई कालथी थयेलो, पण खिस्तो धर्मना उद्भवे ए वृत्तिने मनुष्य-जीवननु ं एक महत्त्वनु ं अंग बनाव्यु ं । ए धर्मना अुत्पादक इसु खिस्ते अहिंसामय जीवन जीवी वताव्यु ं अने ए समयना लोकोने भ्रातृभावनो संदेशो आप्यो । तेमना धर्मपुस्तक बाईबलना 'जोन' रचित प्रकरणमां अपायलु ं 'गिरिप्रवचन' प्रेमसेवा–समभावनी ज एक अपूर्व गीता छे । 'मेथ्यु' रचित प्रकरणमां पण एक स्थळे इसु खिस्त पोताना अनुयायीओने उदेशीने कहे छे के ' तमे आज सुधी सांभळता आव्या छो के कोई तमारी आंख फोडे तेनी तमे आंख फोडी नाखो अने दांतने बदले दांत खेंची काढो ! पण हु ं तमने कहु ं छु ं के अन्यायी के अधर्मीनो सामनो न करो ! पण तमने जे कोई जमणा गाल उपर तमाचो मारे तेनी सामे डाबो गाल धरो अने कायदाथी लडीने जे कोई तमारो कोट लई ले तेने तमारो कामळो पण आपी दो अने जे तमने एक गाउ घसडीने लई जाय तेनी साथे तमे बे गाउ चालो अने जे मांगे ते तेने आपो अने जे कोई उधार लेवा आवे तेने तमे पाछो टाळो नहि । आवी ज रीते ए ज प्रकरणमां

अन्यत्र इसुखिस्त कहे छे के 'तमने आज सुधी कहेवामां आव्यु छे के तमे तमरा पडोशीओने चाहजो अने दुश्मनोने धिक्कारजो! पण हुं तमने एम कहुं छुं के तमारा दुश्मनोने पण तमे चाहजो। तमने जे श्राप आपे तेने आशीर्वाद आपजो। तमने तिरस्कारे तेनुं तमे भलुं करजो, अने जे तमारा विषे मत्सरभाव चिन्तवे अने तमने त्रास आपे तेना माटे प्रार्थना करजो। आ रीते ज जे पिता स्वर्गमां वसे छे तेना तमे खरा पुत्र बनी शकशो। कारण के तेओ तो जेओ सारा छे तेम ज खराब छे ते बन्नेने पोताना सूर्यनुं सरखुं अजवाळुं आपे छे अने न्यायी अने अन्यायी उभय उपर वरसादनी एकसरखी महेर वरसावे छे। जे तमने चाहता होय तेने तमे चाहो एमां तमे एवुं मोटुं पुण्य शुं कर्युं ? अने तमारा भाई ओने ज तमे सलाम करो तेमां तमे बीजाथी विशेष शुं कर्यो ? तमारी आसपासना लोको पण शुं एम नथी करता ? जेवी रीते तमारो दिव्यपिता पूर्ण छे तेवी ज रीते तमारे पण पूर्ण बनवुं जोईए'।

खिस्ती धर्मना कहेवाता अनुयायीओए आज सुधी गमे तेम वर्तन कर्युं होय अने आजे लडाइना नामे गमे तेटली तेओ हिंसा आचरी रह्या होय, पण खिस्ती धर्मनो मर्म तो उपर वर्णव्यो ते ज हतो अने छे। अने ते मर्मने हृदयमां धारण करीने अनेक खिस्ती साधुसन्तो आदर्श जीवन जीवी गया छे अने स्वपरनुं कल्याण साधी गया छे। खिस्ती धर्मनी दया, अहिंसा, मनुष्यकोटि सुधी ज लंबायली जोवामां आवे छे। तेनुं मूल तो ते धर्मनी सृष्टि निर्माणने लगती एक मुख्य मान्यताने आभारी छे के जे एम प्ररूपे छे के इश्वरे प्रथम चर-अचर देखाती जड सृष्टि उत्पन्न करी अने तेनी अंदर दिव्य प्राणोथी प्राणवान एवा 'आदम' अने 'इव'ने

मूकया, जेमांथी आ आखा मानवसमाजनो विकास थयो। आ मान्यताए पशुप्राणीओने आत्मतत्त्वथी वंचित बनाव्या अने ए कारणे मानवदयाना अनधिकारी ठराव्या। [illegible] मानव समाजनुं कल्याण अने सेवाने खिस्ती धर्ममां खूब प्राधान्य आपमां आव्युं। दीन, दुःखी, दलित मांदा कोढीआ, पतितोनी सेवा उपर जे भार खिस्तीधर्म मूके छे ते अन्य धर्मसंप्रदायोमां जोवामां आवता नथी।

पण आ बधी दया, प्रेम, विश्वबंधुत्वनी वातो मोटेभागे व्यक्तिगत आत्मसाधना साथे जोडायली रही। तेनी असर सामुदायिक जीवन उपर जरूर सारा प्रमाणमां पडती रही, पण राज्यतन्त्रोथी निर्मातुं सामुदायिक जीवन तो मोटे भागे पशु-बळ उपर ज निर्भर बनी रह्युं। कालान्तरे गई सदीमां रशियामां टोल्स्टोयनो जन्म थयो। ते भारे धर्मात्मा हता; चिन्तक हता; समाज अने राजकारणना प्रश्नोना प्रखर विवेचक हता। आज सुधी अहिंसानो अर्थ एटलो ज करवामां आवतो हतो के पोताना जीवनने बने तेटलुं निरवद्य बनाववुं, हिंसक प्रवृत्तिओथी बने तेटला अळगा रहीने अपरिग्रही पवित्र जीवन गाळवुं अने बने तेटली ईश्वरसाधना करवी। पण साथे साथे तेमां एक तत्त्व उमेरायुं। पोतानी मान्यता मुजब वर्तवामां समाज के राजकारण कदी आडे आवे तो पण पोतानी मान्यताने वळगी रहेवुं अने तेम करतां गमे तेटलां कष्टो सहेवां –प्राणनुं बलिदान आपवानो प्रसंग आवे तो तेम करतां पाछा हठवुं नहि। आ बाजु के ते बाजु पोतपोतानी धार्मिक मान्यता खातर शान्त निरवरोध प्राणबलिदान अपायानां अनेक दृष्टान्तो बन्या ज करतां हतां। आवा बनावोए अहिंसानो आदर्श जनसमाज समक्ष जीवतो अने जागतो राख्यो हतो एटलुं ज नहि, पण तेमां अहिंसक

सामनानी कंई कंई झांखी थवा लागी हती। पण अहिंसा-वृत्तिनुं प्रयोगक्षेत्र तो हजु सुधी धार्मिक मान्यताओना प्रदेश पूरतुं ज मर्यादित रह्युं हतुं। समाज के राष्ट्रना प्रश्नो उकेलवामां, राज्यनां अन्यायो दूर करवामां के परराज्यनां आक्रमणोनो सामनो करवामां अहिंसाविचारनो योजना पूर्वक कदी उपयोग करवानुं कोईने सुझतुं ज नहोतुं। मोटा सामाजिक फेरफारो विचारोना स्वाभाविक परिवर्तनमांथी परिणमता अथवा तो कोई बळवान व्यक्ति समाजपरिवर्तक विचारो एवा जोरथी समाज समक्ष मूकती अने तेने अनुसरनारुं अनुयायीदल एवी उग्रताथी काम करतुं के सामे समाजनी बहु मोटी बहुमती होय तो पण नमी जती अने नवा विचारों अने नवा आदर्शोने अपनावी लेती आवी ज रीते राज्यवहीवटमां चाली रहेला अन्यायो पण कां तो कहेवाती वंधारणपूर्वकनी हीलचालथी दूरकराता अथवा तो राज्य करती संस्था उपर सीधुं के आडकतरुं असाधारण दवाण लावीने ते ते अन्यायो रद करवानी राज्यसंस्थाने फरज पाडवामां आवती। आवां चालु दवाणो आववा छतां पण जो राज्यसंस्था मक्कम रहेती तो आखरे हिंसापूर्ण बलवो थतो अने राज्यक्रान्ति आवीने ऊभी रहेती। परराज्यनां हिंसक साधनो सिवाय अन्यथा बचाव थई शके एवुं आज सुधी कदी कोईने सूझयुं ज नहोतुं अने आजे पण गांधीजी सिवाय बीजा कोईने आ कल्पना हजु व्यवहारु लागती ज नहोती। आम सामाजिक, राष्ट्रिय, के आन्तरराष्ट्रिय कोई पण प्रदेशमां अहिंसाना विचारने स्पष्टपणे हजु सुधी स्थान मळ्युं ज नहोतुं। व्यक्ति अने समाजना जीवनने घडवामां बळवान भाग भजवनारा साधुसन्तो समाज अने राष्ट्रनी सामान्य प्रवृत्तिओथी

घणुं खरुं अलग रहेता अने लोकोने पोतपोताना मानी लीधेला धर्ममार्गे चालवानो अने ईश्वरप्राप्ति तरफ वळवानो उपदेश आपता। आ आखी विसंवादी परिस्थिति तरफ मारी समज प्रमाणे सौथी प्रथम टोल्स्टोयनुं ध्यान खेंचायुं। बाईबलनुं वेदवाक्य-Resist not the evil-असत्यनो-अधर्मनो-सामनो न करो- आ वाक्ये तेना मनमां भारे मन्थन ऊभुं कर्युं। असत्यनो-अधर्मनो सामनो न करवो एटले शुं? असत्य अधर्मने नमी जवुं? आम केम बने? आ उपदेश आपनार ईसुख्रिस्ते ज ते समयनी वहेम अने अज्ञानथी भरेली धार्मिक मान्यताओनो जबरजस्त सामनो कर्यो हतो अने ते सामनामां ज पोताना प्राणनुं बलिदान आप्युं हतुं। तो शुं इशुनो उपदेश अने आचरण बन्ने परस्पर विरोधी हतां? आम तो न ज बने। वधारे विचार करतां तेने मालूम पडयुं के सामनो न करवो एनो अर्थ हिंसाथी-पशुबळथी सामनो न करवो एटलो ज होई शके। हिंसा ए अधर्म छे। अधर्म सामे अधर्म वापरवाथी अधर्म ज वृद्धिने पामे। बाकी तो जेनामां धर्मबुद्धि छे तेणे अधर्मनो विरोध तो करवो ज रह्यो। आ उपरांत टॉल्स्टॉयने आजनी आखी संस्कृति, समाजरचना, मूडीवाद, सर्व व्यवस्था केवळ हिंसा उपर ज रचायली मालूम पडी। हाथमजूरीनो सोभो गयो अने यंत्रोए मानवीना मोटा मोटा समूहोने स्थानभ्रष्ट कर्या। मजूरो परसेवा अने लोहीथी द्रव्य उत्पादन करे अने मूडी धरावनार गण्यागांठ्या माणसो ए द्रव्य उपर केवळ एशआराम करे। राज्यतंत्रो दबायलाने दबावे अने नबळां राज्यो उपर आक्रमण करे। आखी व्यवस्थाना मूळमां तेने केवळ पशुबळ अने हिंसा भरेली मालूम पडी। आ सामे तेना मनमां भारे बळवो ऊभो थयो।

वसी गयुं के जो जगतमां सुख अने शान्ति लाववां होय तो आ आखी रचनानो नाश करवो जोईए अने जे समाजमां बळजोरी, बेकारी, अत्युत्पादन अने बुर्झवा-एशआरामी वर्ग-न होय एवी समाजरचना ऊभी करवी जोईए। आ क्रान्ति मारफाड़ करीने नहि पण लोकोनां हृदयनो पलटो करी वेठो वळवो जगाड़ीने निपजाववी जोईए। आवी रीते टोल्स्टोये खिस्ती धर्मशास्त्रोना अध्ययनमांथी ज प्रेरणा मेळवीने अहिंसक विरोधना तत्त्वने जन्म आप्यो अने ते तत्त्व सामाजिक अने राजकीय प्रश्नोने लागु पाडवानो प्रयत्न आरंभ्यो। ए अरसामां थोरॉ नामना तत्त्वचिन्तके असहकारकना सिद्धांतने जगत समक्ष बहु असरकारक रीते रजू कर्यो। तेनी प्ररूपणानो सार ए हतो के कोई पण माणस, जे समाज तेम ज राज्यतंत्र नीचे वसतो होय तेना न्याय अन्यायथी निरपेक्ष रहेवानो दावो करी शके ज नहि समाज अने राज्यतंत्रना अवलंबन वडे ज दरेक माणस सुखपूर्वक जीवे छे अने पोतानी सर्व प्रवृत्तिओ चलावे छे। तेथी ते समाजरचना के राज्यतंत्रना पायामां रहेला न्याय अन्यायोमां दरेक व्यक्तिनी भागीदारी रहेली छे। तेथी ज्यारे पण कोई पण व्यक्तिने एम भासे के पोतानो समाज के पोताना उपर चाली रहेलो राज्यवहीवट चोक्कस प्रकारनो अन्याय करी रहेल छे के अत्याचार आदरी रहेल छे त्यारे ते व्यक्तिनो धर्म थई पडे छे के तेणे ते समाज के राज्यवहीवट साथे असहकार करी ते अन्याय-अत्याचार-टाळवानो प्रयत्न करवो। आखरे समाज व्यक्तिओनो बनेलो छे, राज्यसंस्था पण व्यक्तिना सीधा के आडकतरा सहकार उपर ज चाले छे। तेथी आ सहकार ज्यारे व्यक्तिमां व्यक्ति उमेरातां मोटो समूह एकत्र बनीने

पाछो खेंची ले के तुरत ज ए समाज के राज्यनुं तंत्र अटकी पडे अने खेंची लेवायलो सहकार पाछो मेळववा माटे ते संस्थाए चालु अन्यायो बंध करवा ज पडे। कोई पण प्रकारनां हिंसक साधनोनो उपयोग कर्या विना-एक पण माणसनुं लोही रेड्या सिवाय आवो असहकार मोटामां मोटी राज्यक्रान्ति निपजावी शके।

अहिंसाना विचारने आ रीते टालस्टाय, थोरो जेवा महापुरुषोद्वारा सामाजिक तेम ज राजद्वारी प्रश्नो उपर लागु पाड़वाना प्रयत्नो शरू थया। चोतरफ आ विचारो फेलावा लाग्या। रशियामां साम्यवादनी प्राथमिक भूमिका टॉल्स्टॉये रची। जेमां अहिंसाना ख्यालने पूरुं प्राधान्य आपवामां आव्युं हतुं। पण ते साम्यवादना आद्यविधायक कार्ल मार्क्से अहिंसाना सिद्धांतने तिलांजली आपी अने येन केन प्रकारेण वर्तमान समाजरचनानुं साम्यवादी परिवर्तन साधवा उपर ज तेणे खूब भार मूक्यो। टालस्टोय अने थोरोए सत्याग्रह अने असहकारनां वावेलां बीजने अमली कार्यद्वारा जलसींचन करी वृक्ष रूपे विकसाववानुं कार्य तो गांधीजीए ज दक्षिणआफ्रिकानी सत्याग्रहनी लड़त द्वारा कर्युं। आ लड़तनो इतिहास सौ कोई जाणे छे। त्यां वसता हिंदीओ बळजोरीथी लड़वा नीकल्या होत तो वधु गुमावी बेसत एवा संजोगोमां सत्याग्रहनो धर्ममय मार्ग त्यांनी हिंदी प्रजाने देखाडीने, एटलुं ज नहि पण ए मार्गे आखी प्रजाने दोरीने त्यांनी राज्यसंस्थाने प्रजानी व्याजवी मागणीओ स्वीकारवानी फरज पाडी। अहिंसाना इतिहासमां अभूतपूर्व बनावे विचारक दुनियानुं खूब ध्यान खेंच्युं। त्यारबाद गांधीजी हिंदुस्तानमां आव्या अने प्रजा पासे नाना अथवा मोटा क्षेत्रमां सत्याग्रहनो अमल

तेमणे अनेक सफळताओ मेळवी । गांधीजीना अहिंसात्मक असहकार अने सत्याग्रहनुं विशेष विवरण अने आजनी परिस्थिति विषे विशेष चर्चा हवे पछी करीशुं ।

[३]

अहिंसाने व्यक्तिगत जीवन उपर लागु पाडीने कई सीमा सुधी जई शकाय अने ए रीते व्यक्तिगत जीवनने केवी रीते परिपूरण बनावी शकाय ए संबंधमां इसु ख्रिस्ते, गौतम बुद्धे के महावीर स्वामीए पोतपोतानी रीते जगतने जे कांई शीखव्युं तेनो आपणे केटलोक विचार आगळना बे लेखोमां कर्यो । अहिंसाने आथी वधारे व्यापकक्षेत्रमां उतारवानुं अने खास करीने राजकीय क्षेत्रमां आपखुद सत्तानी सामे सफळ विरोध करवाना एक साधन तरीके वापरवानुं काम तो ते ज व्यक्तिथी थई शके तेम हतुं के जेनी नसेनसमां अहिंसा ज वहेती होय अने साथे साथे जेनामां राज्य करती सत्ताना जुलम, त्रास, अन्याय सामे दबायली प्रजानुं परित्राण करवानी अनिवार्य वृत्ति बळवानपणे काम करती होय । आज सुधी जे जे शुद्ध अहिंसापरायण जीवन गाळनारा साधुपुरुषो थई गया ते सर्व मोटा भागे अन्य सांसारिक तेम ज सामाजिक बाबतो माफक राजकीय बाबतो परत्वे पण केवळ विरक्ति धरावनारा ज हता । बीजी बाजुए जुलमी राजसत्तानी चूडमांथी गुंगळाती प्रजाने छोडावनार देश देशमां अनेक स्वातंत्र्यविधायको थई गया के जेनां आजे पण मुक्तकंठे गान गवाय छे; पण तेओनी सामे कदी अहिंसानो आदर्श हतो ज नहि। तेओ बळ सामे बळ वापरवामां मानता अने ते मुजब ज पोतानी प्रजाने दोरीने तेओए स्वाधीनता—आझादी—हांसल करी हती । त्यारे उपरनी बन्ने शरतो पूरी पाडे एवा तो जगतना पुण्ययोगे

गांधीजी आ अवनी उपर आव्या । दक्षिण आफ्रिकामां केवळ बॅरिस्टर तरीके धंधो करवा माटे तेओ गया अने जतां वेंत ज त्यां वसती हिंदी प्रजा उपर वर्ती रहेलो अने वधतो जतो त्रास जोईने तेओ क्षुब्ध बन्या; शरू करेली बेरिस्टरी एने ठेकाणे रही; अने पोताना जातभाईओना बचावना मार्गो योजवामां तेओ गूंथाया । कोई पण समजावटने अनुकूल बनवानी ना पाडती अने आखरे उद्धत करीने हिंदी प्रजाने पोताना लांबा वसवाटनी भूमिमांथी हांकी काढवानी मुराद सेवती सर्वसत्ताधीश गोरी राजसत्तानो विरोध शी रीते करवो अने हिंदी प्रजानां हकोनुं संरक्षण शी रीते करवुं ए प्रश्न गांधीजीने भारे मूझववा लाग्यो । बळवो करवो, 'मारामारी करवी, ज्यां त्यां खूनो करवां, गोरी प्रजाने वने तेटली रंजाडवी-त्रास करवाथी ध्येयनी सफळता थाय तेम हतुं ज नहि अने एम करवाथी सफळता मळे तोपण गांधीजी ए मार्गे कदी जाय ए तो बने ज नहि । अहिंसानुं अनुपान गांधीजीए गळथूथीमांथी ज कर्युं हतुं । पोते कोईने आंगळी सरखी पण अडाडे नहि । ते अन्य कोईने मारपीट करवानो तो आदेश केम ज आपे ? आ मन्थनमांथी तेमने सूझेली सत्याग्रहनी योजना तेमणे ते वखते हयाती धरावता सन्तपुरुष टोलस्टोयने जणावी अने टोलस्टोए जाणे के पोतानो बीजो कोई समानधर्मी पृथ्वी ने बीजे छेडे जन्म्यो होय एम आनंदमां आवी जई ने ए योजनाने खूब खूब आवकारी । त्यार पछी बनेला इतिहासे दुनियाने जणाव्युं के पशुबळ सिवाय बीजी एक एवी शक्ति छे के जेने संग्रहित करीने गमे तेवी निश्चळ राज्यसत्ताने हंफावी शकाय छे अने दबायेली निःशस्त्र प्रजानी व्याजबी मागणीओ स्वीकारवानी फरज पाडी शकाय छे । आ अनुभव साथे

गांधीजी हिंदुस्तानमां आव्या। हिन्दुस्तानमां राजकीय आन्दोलन लगभग दश पंदर वर्षथी. शरू थयुं हतुं। देशमां विनीत अने उद्दाम-एम वे पक्ष पडी गया हता। एक पक्ष केवळ बंधारणपूर्वकनी राजकीय हीलचालमां ज मानतो हतो अने एम करतां जे कांई धीरे धीरे मळे तेथी संतोष मानीने आगळने आगळ प्रयत्न चालु राखवानुं प्रजाने कहेतो हतो। तेने ब्रिटिश प्रजाना न्यायीपणामां भारे विश्वास हतो। बीजा पक्षनो आवी बंधारणपूर्वकनी हीलचालमांथी विश्वास ऊठी गयो हतो अने उग्र हीलचाल वडे एवुं लोकवळ ऊभुं करवुं के जेनी सामे स्थापित सरकार टकी शके ज नहि अने आपणने स्वराज्य आपवानी तेनी उपर फरज पडे-आ ध्येयपूर्वक काम करी रह्यो हतो। सरकारनुं दमन पण चालु ज हतुं अने देश-द्रोहना कारणे उद्दाम पक्षना एक या अन्य देशनेताने पकडी पकडीने अवारनवार जेलमां पुरवामां आवता हता। बंगाळमां एक एवो पण नानो सरखो वर्ग ऊभो थयो हतो के जे बंबो वडे मोटा मोटा अंग्रेज अधिकारीओना खून करीने स्थापित राज्यसत्ताने मुंझववा मागतो हतो अने ए रीते अकळायली राजसत्ता आपणने स्वराज्य आपी देशे एम मानतो-मनावतो हतो। आ परिस्थिति वच्चे गांधीजी आपणी वच्चे आव्या अने अंदरथी खूब ऊछळेली अने एम छतां निःशस्त्रपणाने लीधे असहायता अनुभवती प्रजा समक्ष तेमणे असहकार अने सत्याग्रहना सिद्धान्तो रजू कर्या। चंपारण, खेडा, बोरसद जेवां नानां नानां क्षेत्रमां सत्याग्रहनो अमल करीने प्रजा उपर गुजरता स्थानिक अन्यायो रद करवानी अंग्रेज सरकारने तेमणे फरज पाडी। परिणामे प्रजा तो जाणे के पोताना उद्धारनी एक नवी चावी मळी गई होय एम नवी आशा वडे ऊछळवा लागी। आमेय ते

आपणी प्रजानी-अथवा तो सामान्य जनस्वभावनी कहीए
तो पण खोटुं नथी-ए खासियत रही के लोही जोवुं के रेडवुं
आपणने कदी गमे ज नहि। एथी लोही रेडया सिवाय-
खूननी नदीओ वहाव्या सिवाय-स्वराज समीप जवानो-
प्रजानो आझादी हांसल करवानो-कोई आपणने रस्तो बतावे
तो आपणी निःशस्त्र प्रजा ते मार्गने जरूर वधावी ले एमां
शंका जेवुं हतुं ज नहि। असहकारनो अर्थ ए हतो के
आपणी प्रजा उपर आपणा ज माणसो वडे अंग्रेजी राज्य
चाले छे। ए प्रजाना माणसो जो पोतानो सहकार खेंची
ले तो अंग्रेजी राजतंत्र चलाववुं अशक्य थई पडे। सत्या-
ग्रहनो अर्थ ए हतो के गेरव्याजबी सरकारी कानूनो एक
पछी एक भंग करवा मांडवा अने एम करतां जे कांई सहन
करवानुं आवे ते सहन करवुं आ सत्याग्रहनी योजनामां
छेवटे नाकरनी लडतनो पण समावेश थई शके। राजकीय
लडतनो आ प्रकार पण जो प्रजानो मोटो भाग उपाडी ले
तो आ खरे स्थापित राजसत्ताने प्रजानी मागणीओ संतोष्या
सिवाय चाले ज नहि अने एम न करे तो एक वखत एवो
आवे के ज्यारे आखुं राजतन्त्र अटकी पडे अने परिणामे
प्रजाना हाथमां ज आवीने पडे। आ आखो कार्यक्रम पार
पाडवामां राज्य करती संस्थाना एक पण माणसने हाथ
अडाडवनो नहि। कोईने लेशमात्र ईजा करवानी नहि।
पोतानी प्रकृति अने परिस्थितिने अनुकूल आवो उद्धारमार्ग
कई प्रजा पकडी न ले? आ योजनामां अनेक जोखमो हतां,
अनेक भयस्थानो हतां। पण आझादीनी तमन्ना जे प्रजामां
एकवार प्रज्वलित थई छे ते जोखमो के भयस्थानोनो विचार
करवा बेसती ज नथी। ते कांम विनीतोनुं छे अने तेओ
तो आज सुधी ते ज काम कर्या करे छे। १८५७ना केवळ हिंसक

राजकीय आंदोलन बाद आजसुधीना हिंदी इतिहासमां बे भीषण आन्दोलनो ऊभां थयां एक १९२०-२२नुं असहकारनुं आन्दोलन बीजुं १९३० ३२नुं सत्याग्रह आंदोलन। आ बन्ने आन्दोलनना; परिणामे प्रजा खूब आगल वधी ज छे। नवां बळ, नवी शक्तिओ, नवो विश्वास जन्म पाम्यां छे; पण हजु स्वाधीनता आपणे घेर आवी नथी। आपणा उपर राज्य तो हजु अंग्रेजी सरकारनुं चाले छे। धारेला ध्येयने आपणे केम पहोंची न शक्या तेनां कारणो घणां छे; पण तेनी समालोचनाने अहीं स्थान नथी। अहींतो प्रस्तुत बाबत एटली ज छे के आपणी राजकरणी लडतमां तेम ज सामाजिक लडतमां पण अहिंसाए हवे निश्चयस्थान प्राप्त कर्युं छे। आवी बाबतोमां अहिंसाने कशुं स्थान ज कोई न शके ए भणेलाओनो मोटो वहेम हतो। ते वहेम छेल्लां वीश वर्षनी इतिहासघटनाए नाबूद कर्यो छे। जेवी रीते आझादीनी प्राप्ति अर्थे तेवी ज रीत अस्पृश्यतानिवारणनी दिशाए के मद्यनिषेधनी दिशाए सत्याग्रहनो एक या अन्य प्रकारनो अमल थयो छे अने थई रह्यो छे। राष्ट्रीय महासभाए पोताना सर्वकार्यक्रममां अहिंसाने अग्रस्थान आप्युं छे। अहिंसा आजे केवळ नकारात्मक वृत्ति नथी रही के जेनी चलणी बाजु केवळ निर्माल्यता ज हती। पण अहिंसाने एक शक्ति तरीके आजना विचारकोए स्वीकारी छे अने अनुभवी छे। अहिंसा एटले के मात्र थाय ते थवा देवुं अने बने ते जोया करवुं अने 'ईश्वर' ईश्वर नुं नाम भज्या करवुं एवी टूंकी अने गेररस्ते दोरनारी समज नथी रही, पण ज्यां ज्यां अधर्म के अन्याय थई रह्यो होय त्यां त्यां सामनो करवानी एक ज रीत छे अने ते व्यवस्थित पशुबलना उपयोगनी-एम आज सुधी मानवामां आवतुं हतुं;

तेना बदले मानवी पोतानी मानवता जालवीने अहिंसक उपाय वडे ते ते अधर्म के अन्यायनो सफल सामनो करी शके छे ए आज सुधीमां आ बनेला अनेक सत्याग्रहना बनावोए पुरवार करी आप्युं छे। जेम अमुक परिस्थिति असह्य बनतां ते सामे अमुक माणसे के अमुक वर्ग हल्लो करवानां छे ए सांभलतां सुलेहशान्तिना रक्षको चमके छे, तेवी ज रीते अमुक बाबतमां सत्याग्रह थवानो छे ए समाचार पण राजसत्ताने आजे चमकावे छे अने अकलावे छे। गांधीजीनो आ मोटो संदेशो छे के कोई पण अन्यायभरी परिस्थितिनो सामनो करवाने मानवीए पशु बनवानी जरूर छे ज नहि। ऊलटुं पशुबलनो उपयोग करवाथी पशुबल सामे पशुबलनो ज गुणाकार वधे छे, पण आवा प्रसंगे मानवी पोतानी मानवता पूरेपूरी जालवी शके छे अने एम छतां पण कोई पण अन्यायने पूरेपूरो प्रतिकार करी शके छे।

आम गांधीजी आपणने असहकार अने सत्याग्रह द्वारा अहिंसाने मार्गे दोरी रह्या छे अने आपणे दोराया छीए। मोटा मोटा देशनेताओ अने अखिल हिंदनी राष्ट्रीय महासभा पण गांधीजीना पगले आज सुधी चाली छे अने तेमनी अहिंसाने बने तेटली अपनावे छे। आम छतां आ प्रश्न उपर गांधीजी अने राष्ट्रीय महासभा आजे जुदा पडतां देखाय छे-एनुं शुं कारण? आ प्रश्ननुं विवरण करवामां न आवे त्यां सुधी अहिंसानी उत्क्रांतिनी समालोचना अधूरी गणाय। पण ते प्रश्ननो विचार हवे आपणे करीए।

४

गांधीजीए आपणी समक्ष जे अहिंसात्मक कार्यक्रम रजू कर्यो अने आपणा स्वातन्त्र्यनी अवरोधक राजसत्तानो सामनो

करवा जे प्रकारनो असहकार के सत्याग्रह करवानुं कह्युं तेनी बे बाजु हती। एक तो बाह्य बाजु एटले के सरकारी शाळा, कचेरी के धारासभानो बहिष्कार करवो। सरकारी नोकरीओ छोडी देवी, अमुक कायदाकानूननो सविनय भंग करवो, अमुक कर न भरवो के अमुक सरकारी कार्यमां सहकार न आपवो इत्यादि। आ बाह्य प्रकारनी दिशाए प्रजाए पोतानी ताकात प्रमाणे कांईने कांई करी बताव्युं अने साथे साथे कोई पण प्रसंगे सरकारी सत्तानो हिंसक सामनो नहि करवा पुरतो स्तुत्य संयम पण दाखव्यो। आ संयममां अपवादो बन्या ज नथी एम न कहेवाय, पण मोटे भागे ए संयम अखंडित जळवाई रह्यो हतो।

पण गाँधीजीनी अहिंसानी बीजी बाजु ए हती के आपणे आपणा प्रतिपक्षी विषे जरा पण द्वेष, मत्सर के क्रोध चिन्तववो नहि; तेनुं सदा भलुं इच्छवुं अने तेना भला माटे ईश्वरने सदा प्रार्थना करवी। आम करवाथी एक वखत प्रतिपक्षीनो हृदयपलटो थशे अने आपणी स्वराज्यनी मागणीने सरकार जरूर मंजूर राखशे एवी सदा श्रद्धा सेववी। आ आन्तर बाजु तरफ प्रजाए मूळथी ज बहु ओछुं ध्यान आप्युं घणाखराने मन गाँधीजीनो असहकार अने सत्याग्रह राज्य करती सत्ता उपर दबाण लाववानो ज एक सरस अने निःशस्त्र प्रजा माटे केवल व्यवहारु उपाय हतो। आपणामां क्रोध तो स्वाभाविक ज हतो अने प्रतिपक्षीना हृदयपलटानी वातने आपणामांना घणाखरा हसता। पथ्थर पीगळे पण आवा प्रतिपक्षीनो हृदयपलटो कदी थाय ज नहि एम अपाणामांना घणाखरा मानता। आम अहिंसाना मूलतत्त्वने अन्तरथी नहि स्वीकारवा छतां केवळ राजकीय हेतु वर

लाववा माटे गांधीजीनी योजना सिवाय बीजो कोई मार्ग व्यवहारु नथी अने ए योजनाने प्रजा मोटा पाया उपर अमलमां मूके तो परदेशी सत्ताने जरूर सत्ताभ्रष्ट करी शकाय एम बुद्धि पूर्वक समजीने गांधीजीने अनेक सारा सारा माणसोए साथ आप्यो अने ए साथ आपतां आवी पडेली यातनाओ भोगवी। अहीं आश्चर्यजनक तो ए ज छे के अहिंसा-दृष्टिने ध्यानमां राखीने योजायेल कार्यक्रम शुद्ध राजकीय दृष्टिए पण एटलो ज व्यवहारु मालूम पड्यो अने तेने लीधे शुद्ध अहिंसा पालनमां आपणामांना माननारा अने नहि माननारा सौ आज सुधी गांधीजीनी आगेवानी नीचे साथे चाल्या। वचागाळे सरकारी हिंदना अगियार प्रान्तोमांथी सात प्रान्तोना राज्यवहीवटनी जवाबदारी कांग्रेसे माथे लीधो। आ राज्यवहीवट ज आपणे अथवा तो राष्ट्रीय महासभाने गांधीजीथी छूटुं पाडनारु बळवान निमित्त बने तेवो संभव हतो। आ राज्यवहीवट दरमियान नानांमोटां कोमी हुल्लडो अथवा तो मजूरोनी हडताळोना केटलाक एवा प्रसंगो बनी गया के ज्यारे कोंग्रेस सरकारने रमखाणो अने हुल्लडो दबाववा खातर लश्करी बळनो उपयोग करवो पडेलो। आ सामे गांधीजी बहु जोरथी लखता रह्या; एमछतां राष्ट्रीय महासभा साथेनो तेमनो संबंध कायमनो कायम रह्यो। युरोपीय विग्रहनो आरंभ थयो; हिंदुस्तानना भावी विषे सरकारे पोतानी राज्यनीति स्पष्ट न करी; लोकोमां असंतोष वधवा लाग्यो; सत्याग्रहनी लडत आवी रही छे एम भणकारा वागवा शरू थया, रामगढनी महासभाए गांधीजीने फरीथी प्रजाना सरमुखत्यार बनाव्या। गांधीजीए ए मुखी-पणुं स्वीकार्युं। युरोपनी लडाई आगळ वधवा लागी अने तेनुं स्वरूप वधारेने वधारे भीषण बनवा लाग्युं। सरकारे

हिंद विषेनी पोतानी राजनीतिनी वधारे चोखवट करवा मांडी। कांग्रेसने आथी संतोष थयो नहि, पण छतां समाधाननी आशा कांईक बंधावा लागी। वाईसरोय अने गांधीजी वच्चे वाटाघाटो चालती ज रही। जो सरकार साथे आपणी समाधानी थाय अने कांग्रेसनी मागणीओ जो स्वीकारवामां आवे तो आपणे शुं करवुं ? सरकारने आजे चाली रहेला विग्रहमां साथ आपवो के नहि ? साथ आपवो तो कया प्रकारनो ? केवळ नैतिक के लश्करी अने आर्थिक ? आपणा देशमां आपणुं शासन स्थपाय पछी आपणे शुं करवुं ? परदेशी आक्रमण सामे बचाव करवा माटे सैन्य राखवुं के नहि ? देशमां गमे त्यारे कोमी रमखाणो थाय, बीजा पण हुल्लडो थाय तेवा वखते राज्यशासननी जवाबदारी धारण करतां आपणे शस्त्रबळना उपयोगथी तेनी अटकायत करवी के नहि ? आवा प्रश्नो एकाएक गांधीजी अने अन्य राष्ट्रनेताओ वच्चे आवीने ऊभा रह्या, अहिंसा जेना दिलमां मुख्यस्थाने छे ते देशना कोई पण संयोगमां शस्त्रबळना उपयोगने संमत करे ज केम ? एनी आगळ तो अहिंसानी ज वात होय अने अहिंसानी ज योजना होय। एमणे तो निशस्त्र ब्रिटनने पण जर्मनी सामे शस्त्र नहि उगामवानी सलाह करी हती। बीजी बाजुए जेमां सशस्त्र सैन्य राखवानुं ज नहि एवी हिंदुस्ताननी भावना, भावी राज्य तन्त्रनी घटना कारोबारी समितिना सभ्योए के अन्य राष्ट्रनेताओए कदी कल्पेली ज नहि। आखरे गांधीजीने मन अहिंसा मुख्य हती; आपणा जेवा घणा खराने मन-स्वराज्य-स्वाधीन राज्यतन्त्र अहिंसामय होय तो खरेखर आवकारदायक अने जो ए शक्य न होय तो अहिंसा-हिंसा मिश्रित राज्यतन्त्र-ए मुख्य वस्तु हती। गांधीजीनी अहिंसाने स्वीकारीने चालनारामां पण मन, वाणी अने कर्मथी अहिंसानुं पालन

करनारा घणा ज ओछा हता अने बाकीनामां केटलाक अर्ध-दग्ध अने बीजा आजे अन्य कोई व्यवहारु मार्ग नजरे नहि पडवाथी आ रीते पण सरकारनो असहकारक सामनो थई पडे छे अने लडतनी भूमिका ऊंची अने ऊंची जळवाई रहे छे एम समजीने गांधीजीने अनुसरनारा हता अने छे। वचगाळाना नानासरखा राज्यवहीवटे जेम आपणी ताकातनुं भान कराव्युं हतुं तेम ज आजना राज्यवहीवटमां हजू अहिंसापालननो केटलो ओछो अवकाश छे एनो पण ठीक ठीक ख्याल आप्यो हतो। वळी ए पण प्रश्न विचारवा जेवो छे के राष्ट्रीय महासभानुं आखरी ध्येय शुं छे? राष्ट्रने स्वाधीनसत्ताक बनाववानुं के अहिंसा जेवा एकान्त आदर्शनो कोई पण भोगे अने कोई पण संयोगमां देश पासे अने आखरे आखा जगत पासे अमल करावववानुं? सरकार सामे लडत करवानी होय त्यारे जे वडे असहकारक परिणाम आवे एटले आवश्यक दबाण सरकार उपर लावी शकाय तेम होय अने साथे साथे अहिंसा पण जळवाती होय एवा कोई मार्ग गांधीजी जेवा आपणने शोधे अने आपणे तेमने जरूर अनुसरीए। पण ज्यारे माथा उपर तन्त्रनी जवाबदारी आवे त्यारे केवळ अहिंसाथी तन्त्र चलाववुं अशक्य ज छे एवो आपणने आगळनो ताजो ज अनुभव हतो। अहिंसाना व्यक्तिगत अनुपालनमां आपणे करडवा आवता सर्पने न मारीए अने फाडी खावा ने धसी आवता वाघने न मारीए, पण कोई गामनी रखेवाळी जो आपणे माथे लीधी होय तो गामने रंजाडता सर्प के वाघ-वरूनी हिंसा आपणा माटे अनिवार्य बनवानी ज। आज अनुभव म्युनीसीपालीटीना सूत्रधारोनो पण छे। आवो ज रीते कोमी रमखाणो के बीजां हुल्लडो अटकाववा बीजा उपायो निष्फल निवडतां सशस्त्र

दमन कर्या सिवाय चालुवानुं ज नथी। आजे आपणे अहिंसानी आटआटली वातो करीए छीए, छतां कोई पण कोमी रमखाणने दाववा माटे सरकार चांपता उपायो नहि ले तो सरकार सामे पण आपणे भारे पोकार उठाववाना। पण आ चांपता उपायो एटले हुल्लडखोर सामे शस्त्रनो तात्कालिक अने जरूर मुजब ओछो के वधतो उपयोग नहि तो बीजुं शुं? आवुं ज वलण अने वर्तन सरहदी आक्रमणो संबंधमां समजावटना उपायो निष्फळ गये आपणे अख्त्यार करवाना ज। बीजी पण एक बाबत विचारवा जेवी छे। अहीं आपणे जे प्रकारनी अहिंसानी वात करीए छीए तेनो एक अर्थ ए पण छे के पोतानी जातनो भोग आपीने समुदायनो लाभ साधवो। आवी ज रीते समस्त राष्ट्रे अहिंसा अंगीकार करवी एटले समय आवे पोताना सर्वस्वना भोगे पण जगतमां अहिंसा अने शान्ति स्थापवा कटिबद्ध थवुं। आपणी अहिंसाए निवृत्तिमार्गीओनो छानो छोड्यो छे। अने समाज अने राष्ट्रना विशाल क्षेत्रमां ते अहिंसा पोतानी शक्तिनो प्रभाव दर्शावी रहेल छे। पण कोई पण महान आदर्श खातर देशनो पण भोग आपी देवा तत्पर थवुं ए हजु आजे तो आपणी कल्पनाक्षितिजनी सीमा बाहर छे। राष्ट्रविधायकोना माथे जेम प्रजाने दोरवानी जबाबदारी छे तेवी ज रीते प्रजाना बलाबलनुं माप पण बरोबर ध्यानमां राखीने राज्यवहीवटना विधिनिषेधो तेमणे घडवाना रहे छे। जेनुं एकान्त लक्ष्य अहिंसा छे अने जे अहिंसाविचारथी खरेखर ओतप्रोत बनी गया छे, तेओ जरूर एम कही शके के जो आखरे कांग्रेस हिंसाअहिंसाना मिश्र मार्गे चालवानी होतो पछी कांग्रेसमां अमने रस नथी। आम कहेनारनी प्रामाणिकताविषे अथवा तो उपरना कारणे तेओ कोंग्रेसनो त्याग करे

तो तेने लीधे तेमना विषे जरा पण अनादर चिन्तववो ए योग्य नथी। गांधीजीए आज सुधी आपणने अहिंसा मार्गे दोर्या पण राज्यतन्त्रनी जवाबदारी लेवानो आजे के कालान्तरे ज्यारे पण प्रसंग आवशे त्यारे गांधीजी हयात हशे तो तेमनाथी अथवा तो अहिंसा संबधे तेमना जेटलो आग्रह धरावनार कोई पण राष्ट्रनेताथी कॉंग्रेस जेवी संस्थाने एटले आपणा जेवा घणाखराने आ बाबत पूरता जूदा पाडवानो प्रसंग आवशे एवी भीति रहे छे।

पण आ तो बधी आपणा देशनी राजकारण पूरती अने तेना अहिंसा साथेना वधताघटता संबध पूरती आपणे वातो करी। पण ए उपरथी कोईए एम समजवानु नथी के अहिंसाना उपयोगने हवे मर्यादा आवी रही छे अने अहिंसानो वहेवा मांडेलो प्रवाह हवे अटकी जवानो छे। अहिंसा तो हवे उपाश्रय अने मठमांथी चोतरे अने राजद्वारे आवीने ऊभी छे अने त्यांथी कदी पाछी फरवानी छे ज नहि। आज सुधी मात्र परलोकने अजवाळती अहिंसा हवे आपणा घरखूणाने तेम ज शेरी-चौटांने अजवाळी रही छे अने सामाजिक तेम ज राजकारणजीवननी अनेक समस्याओ उपर नवो प्रकाश नाखी रही छे। आपणु परिवर्तन पामतु राजकारण आजे कदाच अहिंसाने पूरेपूरी अपनावी न शके अने ए ज कारणे आजनो आपणो सूत्रधार आवती काले लघुमतिमां कदाच जईने बेसे। छतां सशक्त अने स्वाधीन हिंद आखरे तो अहिंसाने ज वेग आपवानु छे।

आजे एक बाजुए अहिंसाधर्मनो मोटामां मोटो पयगंबर जगतने अहिंसानी आगमवाणी संभळावी रह्यो छे-

अहिंसानी दिगन्तव्यापी उद्घोषणा करी रह्यो छे, बीजी बाजुए हिंसानुं ज मूर्तिमान स्वरूप जाणे के कालभैरव प्रगट्यो न होय एवो बृहत् जर्मनीनो भाग्यविधाता हर हीटलर हिंसानो दिग्विजय साधी रह्यो छे। माणसोनी श्रद्धा पाछी डगमगवा लागी छे। अहिंसानो विचार तेने खूब गमे छे अने बीजी बाजुए हिंसाने विजयवती थती ते नीरखे छे। अहिंसा, धर्म, सत्य, न्याय, नीतिना मार्गे चालवानो प्रयत्न करतो मानवी पाछो ठोकर खाई ने पड्यो छे अने माणस शुं आखरे पशु ज छे ? एवी भ्रान्ति सेवी रह्यो छे। पण आथी निराश बनवानुं कशुं ज कारण नथी। हजु माणस हिंसाथी धरायी नथी पटले वारंवार ते हिंसाना चगडोळे चडे छे अने घुमरीओ खाधा करे छे। पण माणस एक वार हिंसाथी त्रासवानो छे। हिंसानी निष्फळता-ज मात्र नहि पण तेनी घातक परंपरा तेना दिलमां उतरवानी छे। संभव छे के गांधीजी कहे छे तेम आजे चाली रहेली लडाई हिंसानी छेल्ली होली बने; कारण के आजना युद्धमां चाली रहेलो अगणित निर्दोष मानवीओनो संहार आपणां दिलमां हिंसा अने हिंसक प्रवृत्तिओ प्रत्ये एकान्त अने मर्मस्पर्शी जे घृणा निपजावी रह्यो छे ते जो स्थायी स्वरूप पकडे तो जरूर मानवजात हिंसाना मार्गोथी पाछी फरे अने जेवी रीते निरामिषाहारी कोई पण संयोगमां मांसाहारनो विचारसरखो करतो नथी तेवी ज रीते केवल हिंसा, हिंसा अने हिंसाथी थाकेली, त्रासेली, कंटाळेली मानवजात पोतानो कोई पण हेतु के स्वार्थ सिद्ध करवा खातर एक पण मानवीने जरा पण ईजा पहोंचाडवानो कदी विचार नहि सेवे। ए समय आवशे त्यारे अहिंसा उपदेश के समजावटनो विषय नहि रहे, पण मानवजीवननी एक स्वाभा-

विक वृत्ति बनी जशे।

आज सुधीनी दुनियानी परिस्थितिनुं एक बीजु तत्त्व पण विचारवा जेवुं, छे। आजनी अननवी वैज्ञानिक शोधोए दुनियानी स्थूळ दीवालो तोडी नाखी छे; दुर गणाता देशो नजीक आव्या छे; विमानो एक खंडमांथी बीजा खंडमां जोतजोतामां लई जई शके छे; रेडियोनी शोध वडे दुनियाना कोई पण खूणे बनती बीनाना समाचार दुनियाना बीजे खूणे मोकली शकाय छे। आन्तरराष्ट्रीय व्यापार खूब ज वधेलो छे अने एक देशनी चीजो अन्य देशमां मोकली शकाय छे। आम होवा छतां आपणां वर्तमान मानसमां आंतरराष्ट्रीयता हजु ऊगी ज नथी; हजु राष्ट्रीय भावनानुं झनून मनमांथी खसतु ज नथी। मारो देश अन्यथी जुदो छे; मारा देशना स्वार्थो अन्यथी भिन्न छे। जो हुं नबळो छुं तो सबलो थवा मागुं छु अने सबळ बनीने अन्य नबळा देशो उपर आक्रमण करवानो मनोरथ सेवुं छुं। बीजु; आजना विज्ञाने माणस जातनी शक्ति खूब ज वधारी छे अने ए शक्तिने पचाववा योग्य नैतिक साधनामां अल्पशक्तिवाळा मानवी जेटली ज आजनी मानवजात पछात छे। बाळकना हाथमां तलवार आवे ते अणसमजने वस थईने आम तेम फेरवे अने आस पासना माणसोने घायल करी बेसे एवी आजे आखी मानव जातनी दशा छे। आज बाह्य अन्तर घटयुं छे अने सौ कोई एकमेकनी समीप आव्या छे। आजे एक ज माणस विज्ञाननी मदद वडे संख्याबंध मानवीओनो संहार करी शके छे आ परिस्थितिने जीरवी शके एवी मानसिक उन्नति एटले के आध्यात्मिक उदारता -विशालता -प्रेम आपणामां हजु केळवायां नथी। परिणामे आजे चोतरफ कातिल हरीफाई अने

घातक संहार आपणे जोई रह्या छीए । पण आ दुनियानी चिरस्थायी परिस्थिति होई ज न शके । नहि तो दुनियानो स्वयमेव ज नाश थई जाय । आजे नवी शक्तिनो मानवीने केफ चढयो छे । प थोडा कालमां ज ऊतरशे । अने अन्यना रक्षणमां ज पोतानुं रक्षण रहेलुं छे एवी स्वपरसंरक्षणनी वृत्ति जनताना मानसमां ऊभी थशे अने त्यारे जनता अहिंसा तरफ अभिमुख बन्या विना रहेशे ज नहि । हिंसा जेटली आजनी सत्य वस्तुस्थिति छे तेटली ज अहिंसा आवती कालनी निश्चत घटना छे ।

आपणे आटली लांबी समालोचना वडे जोयुं के मानवजीवनना इतिहासमां अहिंसानो विचार अने आचार उत्तरोत्तर विकास पामतो गयो छे । माणसनुं प्रवृत्ति-क्षेत्र जेम जेम व्यापक बनतुं गयुं छे तेम तेम ते क्षेत्रने अहिंसानो संस्कार आपवानो मानवी प्रयत्न करी रह्यो छे । कोई वार ते आगल वध्यो छे तो कोई वार पाछल पड्यो छे; पण अहिंसानो हंमेशने माटे त्याग करीने तेणे हिंसानी गुलामी कदी स्वीकारी नथी । ज्यां अहिंसाना विचार के आचारने अवकाश के स्थान ज न होय एम मानवामां आवतुं त्यां अहिंसा मार्ग करी रही छे अने पोतानी प्रभुता सिद्ध करी रही छे । व्यक्तिगत जीवनथी आगल वधीने समाज तेम ज राजकारणना प्रश्नोने अहिंसा स्पर्शी रही छे अने राष्ट्रना नवविधानमां अहिंसानो विचार पूरो अवकाश पामी रहेल छे । आ ज विचार हजु आन्तरराष्ट्रीय परिस्थितिने स्पर्शी शक्यो नथी । League of Nations–प्रजा–संघनी स्थापना आ दिशाए शुभ प्रयास हतो । पण ते आगल फाल्यो के फूल्यो नहि; कारण के ते संघना सूत्रधारोमां केवल स्वार्थ

अने हिंसावृत्ति भरेली हती अने सुलेह - शांति-अहिंसानो मात्र बाह्याडंबर ज हतो, पण कालान्तरे साचो प्रजासंघ स्थापवानो ज छे अने ते वडे अहिंसानो साम्राज्यनी स्थापना थवानी ज छे। पण ते त्यारे ज बनशे के ज्यारे प्रत्यक देशमां एक एक गांधी पाकशे। आजे गांधीजी एकला छे, अने एक पराधीन निःशस्त्र अने अवनत दशामां डूबेला देशना आगेवान छे। आवती काले स्वाधीन अने सशस्त्र देशो पण एक एक गांधीने जन्मावशे अने पोतपोताना देशनी प्रजाने अहिंसाना मार्ग तरफ वाळशे। ए दिवस आवशे त्यारे आजनां संहारक युद्धो भूतकाळनां बनी जशे अने परस्परना हितने पोषक एवी अन्योन्य सहकारी विश्वव्यवस्था जन्म पामशे।

ए सोनेरी युग जलदीथी समीप लाववामाटे आपणे शुं करीए? आ प्रश्न ज आपणे हवे विचारवो रह्यो। संपूर्ण अहिंसामय जीवन व्यक्ति के समष्टि माटे अशक्य ज छे। जीवन एटले ज एक रीते हिंसा छे। तेथी अहिंसामय जीवन जीववुं एटले हिंसाथी बने तेटलुं निवृत्त जीवन अख्त्यार करवुं। आ रीते आपणा अंगत जीवनने बने तेटलुं अहिंसामय बनावीए आपणा सामाजिक जीवने पण अहिंसानी दृष्टिए बने तेटलुं निर्मळ बनावीए। ज्यां ज्यां आपणा व्यक्तिगत के सामाजिक जीवनमां हिंसा भरी होय, अन्य वर्गोना व्याजबी हको उपर अघटित आक्रमण थतुं होय, कोई दबायलुं अवमानित, के तिरस्कृत होय, अनेक भूखे मरता होय-अने मात्र गणयांगांठया लोको वैभव माणता होय-आ सर्वदिशाए अहिंसा अने न्यायनी स्थापना करीए। आम आन्तरबाह्य अनेक परिवर्तनो साधीने आपणा राष्ट्रनी समग्र

व्यवस्थाने बने तेटली अहिंसापूर्ण बनावीए । आजे आपणने सैन्यविहोणा राज्यतंत्रनी घटना अव्यवहारु लागे छे; पण उपर जणावेली साधना साधतां साधतां आपणो सशक्त स्वाधीन देश ए कक्षाए पहोंचशे के ज्यारे अन्य राष्ट्रोनो सहकार मळतां सैन्यविहोणा राज्यतंत्रनुं गांधीजीनुं स्वप्न साचुं पडशे । त्यारे पृथ्वी उपर स्वर्ग अवतरशे अने अंधकार हशे त्यां सर्वत्र अजवालुं प्रगटशे । आजनी अन्याय विषम अर्थव्यवस्थानो अन्त आवशे अने सर्वत्र संतो सुख अने शाश्वत शान्तिनी स्थापना थशे । ए उज्ज्वल दिवसनी प्रार्थना करतां करतां अहिंसाधर्मना मार्ग उपर आपणो प्रवास चालु राखीए अने आपणा व्यक्तिगत तेम ज सामुदायिक जीवनने अहिंसा वड़े बने तेटलुं निर्मळ अने प्रकाशवाही बनावीए !!!

—०—

६

निरामिष आहार

परमानंद कापडिया

मानवी जीवनना पूर्वकाळनो इतिहास अने विकासक्रम जोईए छीए तो मालूम पड़े छे के एक काळे आपणी दुनियाना लोकोने खेती केम करवी अने धान केवी रीते पकववुं तेनो ख्याल नहोतो अने आ जगत उपर विचरतो मानवी जे कांई फळपान मले ते द्वारा अने शिकारथी मळेलां पशुओना मांसभक्षण द्वारा जीवननो निर्वाह करतो हतो । समयान्तरे खेतीनी शोध थई अने अनाज तथा कठोळ तेना खाद्य पदार्थोमां उमेरायां । खेती जेम जेम वधती गई अ

ष्काळ प्रमाणमां जेम जेम पाक ऊतरवा लाग्यो तेम तेम
ननिर्वाह माटे मांसभक्षणनी अनिवार्यता घटती गई अने
क अनाज -शाक तथा फल उपर जीवननिर्वाह शक्य
ो गयो । आम जेम खेती-विज्ञाननो ज मात्र नहि पण
स्पति -विज्ञाननो एक बाजुए विकाश थतो गयो तेम बीजी
ए मानवीना मननो, बुद्धिनो, हृदयनो, पण उत्कर्ष थता
अने कोमळता, करुणा, अनुकंपा आदि गुणो खीलवा
या । आ आन्तर्विकासना परिणामे कोई एक मानवीना
मां प्रश्न थयो के 'हुं जो वनस्पत्याहार उपर मारा
ननो-कशी पण अगवड, तंगी के अतृप्ति विना-निर्वाह
शकुं छुं, मारी रसेन्द्रिय तृप्त थाय छे अने प्राणवर्धक
वो पण वनस्पत्याहारमांथी मने पूराप्रमाणमां मळी रहे
तो पछी मारा जेवां ज पंचेन्द्रिय पशुओनो वध करीने
मांस हुं शा माटे खाउं ?, एक दिवस कतल थता
वरनी चीस ए मानवीना कान उपर अथडाई अने तेना
ठमां ते सोंसरी ऊतरी गई । ते पशुनुं पकवेलुं मांस
सामे आहार -उपभोग माटे आव्युं अने पेली चीसनुं
रण तेना दिलने चीरवा लाग्युं, अने ते पशुनी दीनताभरी
ा, फगरती आंखो, आन्तरचेतनाथी हलन चलन करतुं
सोहामणुं शरीर तेनी आंख सामे तरवरवा लाग्युं
'आ माराथी नहि खवाय, एम कहीने ते ऊभो थयो ।
ा दिलमां ऊंडी करुणानो ते दिवसथी उदय थयो :अने
साहारनो तेणे हंमेशांने माटे त्याग कर्यो ।

मांसाहारत्यागनी आ छे प्राथमिक भूमिका अने आजे
मांसाहारत्यागनी एज भूमिका रही छे । भगवान नेमनाथ
न मंडपथी पाछा फर्या, कारण के लग्नने लगती वरोठी

-जमण माटे कतल करवा अर्थे एकठां करवामां आवेलां पशुओनो चित्कार तेमना काने पड्यो अने तेमनो आत्मा अंदरथी ककडी ऊठ्यो के, 'अरे आ शुं ? मारा लग्ननिमित्ते आटलां बधां पशुओनी हिंसा ? मने आ लग्न ज न खपे; रथ पाछो फेरवाव्यो अने साथे साथे तेमनी जीवननी आखी दिशा पण बदलाई गई ।

आमिष के निरामिष आहार अंगे प्रस्तुत बाबत ए छे के मानवी जो पशुनी ज एक विस्तृत आवृत्ति होत, तेनामां पशुओमां जे नथी एवी बुद्धि, हृदयनी लागणी, स्मृति अने कल्पना न होत तो मानवी मोटमां मोटो मांसाहारी ज बन्यो होत । कारण के मांसाहारथी वारनारुं तेना माटे कोई कारण होत ज नहि । पण मानवी पोते बुद्धिथी विचारतो थयो अने बीजानां सुखदुःखने समजवा लाग्यो, हृदयथी संवेदतो थयो अने अन्यमां आत्मीयतानो प्रेम, अने सहानुभूतिनो अनुभव करतो थयो, स्मृति वडे पोताना अने अन्यना भूतकालने अने कल्पना वडे पोताना अने अन्यना भविष्यकालने ते वर्तमानना अनुबंधमां विचारतो, चिन्तवतो, संवेदतो थयो अने तेनी अने पशुनी रीतभातमां उत्तरोत्तर मोटो ने मोटो तफावत पडतो गयो । ए तफावत मांथी मानवीसभ्यता अने संस्कृतिनो उदय थयो, ज्ञानना अनेक प्रदेशो सर थवा लाग्या अने प्रेम, दया, करुणानी नवी दृष्टिथी जगतने-जगतनां प्राणीओने ते निहालवा लाग्यो धर्मसंस्थाओ उभी थवा लागी अने दुनिया साथेना तेना व्यवहारे अनेक नवां रूपो धारण करवा मांड्यां । आजे आपणी प्रकृतिमां जे निरामिषआहारनी वृत्ति स्थिर अने स्थायी रूप धारण करी बेठी छे ते सतत विकसती रहेली मानवी

सभ्यता अने संस्कृतिनु ज एक रूप छे ।

अमुक मानवीओ जो निरामिषआहारी छे तो अमुक पशुओ गाय, बलद, भेंस, हाथी, घोड़ा, बकरां, घेटां वगेरे पण –निरामिष आहारी छे अने घास अने भाजीपाला उपर नभे छे । पण तेमना अने मानवीना निरामिषआहारमां भारे मोटो तफावत छे । ते पशुओ प्रकृतिथी अने नहि के कोई उदात्त वृत्तिथी नरामिषाहारी छे । मानवीनी आ आहार मर्यादा केवल करुणावृत्तिमांथी निर्माण थई छे ।

आजे निरामिष आहारना समर्थनमां अनेक दलीलो करवामां आवे छे दा. त. वनस्पत्याहार मांसाहार जेटलो ज बलदायी छे, बल्के वधारे छे । मांसाहारथी केटलाक रोगो थाय छे जेनु वनस्पत्याहारीओ माटे कशु जोखम ज नथी । माणसना दांतनुं बंधारण ए प्रकारनुं छे के ते वनस्पत्याहार माटे सरजाया छे । हिंसक प्राणीओना दांत जुदा ज प्रकारना होय छे । जे पायामां करुणानी वृत्ति बलवान नहि होय तो आवी बधी दलीलो मानवीने मांसाहारथी वालवामां कामयावनीवडवा बहु संभव नथी । मांसाहारनुं बलवर्धक पणानी बाबतमां चडियातापणुं एटलो ज बळवान दलीलोथी पुरवार थई शके तेम छे । मांसाहारना कारणे अमुक रोगो पेदा थवानो संभव हशे तो वनस्पत्याहारमांथी पण अमुक दर्दोनी संभावना रजू करी शकाय तेम छे । रांधीने पकवेलुं अन्न खावाने टेवायली मानवजातिना दांत कशुं काचुं–पछी ते अनाज होय के मांस–खाई शकता नथी अने खावा जाय तो पण दांतनी चावावनी शक्ति मर्यादित होई ने तेवो खोराक ते पचावी शकता नथी । एटले निरामिषआ-

हारना समर्थनमां दांतनी दलीलनो बहु अर्थ नथी। आम मांसाहारना पक्षमां अने विरुद्धमां बळवान दलीलो रजू थई शके छे अने कोई एकान्त निर्णय उपर आववानुं साधारण माणस माटे मुस्केल बने छे। स्थूळ जगत उपर नजर नाखतां आपणी सामे एक ज कुदरती नियम तरी आवे छे के जीवो जीवनस्य जीवनम्' नीचेनी सृष्टिनो घात करीने उपरनी सृष्टि चोतरफ जीवननिर्वाह साधती मालूम पडे छे। आ रीते सृष्टिना विकासक्रमनी टोचे बेठेलो मानवी एम मानवाने अने वर्तवाने मुखत्यारे छे के 'हुं पण मारा शरीरनुं प्राण संवर्धन नीचेनी कोटिनी जीवसृष्टिना फावे तेवा उपयोग वडे करी शकुं छुं। मने एम करवानो पूर्ण अधिकार छे। आ प्रकारनी विचारणा माणसने मांसाहार तरफ आकर्षे छे अने जे कुलपरंपराथी मांसाहारी होय तेने मांसाहार उपर टकावी राखे छे। आपणे आ कुदरती नियमनो विचार करवो जोईए अने निरामिषआहार आपणने अभीष्ट होय तो आपणे उपर जणावेल कुदरती कानूनना अनुसंधानमां निरामिष आहारनुं समर्थन शोधवुं जोईए। मोटुं माछलुं नाना माछलाने खाय छे ते मुजब 'जीवो जीवस्य जीवनम्' ए सिद्धान्त खोटो छे एम आपणे कही नहि शकीए। मानवी सामे ज्यारे शुं खावुं अने शुं न खावुं एवो प्रश्न ऊभो थाय छे त्यारे ते एटलुं तो जाणे ज छे के 'मारे मारा निर्वाह माटे-प्राण धारण माटे-कांई ने कांई तो हिंसा करवानी रहेशे ज।' पण साथे साथे ते विचारे छे के "एक अने अन्य प्रकारनी हिंसा वच्चे पसंदगी करवानुं मारा माटे शक्य होय तो मारी लगभग समकक्षानां एवां पशुओ-जेमां मारा जेवुं ज चैतन्य चमकतुं नजरे पडे छे, जेनामां मारी जेवां ज भय, प्रीति, सुखनुं आकर्षण अने

दुःखीथी प्रतिनिवर्तन, आनंद अने शोकनी, प्रेम अने प्रतिकारनी लागणीओ रहेली छे, जेने हुं पंपाळुं छुं तो प्रसन्नता दाखवे छे अने जेनी सामे लाकडी उगामुं छुं तो एकाएक भयग्रस्त बनी जाय छे–तेने मारीने तेनुं मांस खावानो मने विचार ज केम आवे ? आ विशाळवसुधामां शाक, फळ, धान्य पार विनानां ऊगे छे, मने जोईए ते मळी शके तेम छे।” आम विचारीने ते पोताना निर्वाह माटे कनिष्ठ कोटिना जीवो–वनस्पति–नो उपभोग करीने संतोष चिन्तवे छे आ रीते माणसना आहारनी बाबतमां 'जीवो जीवस्य जीवनम्' ए नियम लागु तो पडे ज छे, पण पोताना जीवनुं जीवनुं–धारण ते मांसाहारथी नथी करतो–कारण के तेनामां ऊगेली मानवतानी–करुणानी–ऊंडी वृत्ति तेने तेम करतां अटकावे छे, पण वनस्पत्याहारथी जीवन धारण करवानुं ते पसंद करे छे।

मांसाहारना पक्षमां सौथी बळवान दलील तेनामां वधारे ताकात आपवानी गुणविशेषताने लगती छे। आनी सामे वनस्पत्याहारनी ताकात आपवानी शक्ति वधारे नहि तो मांसाहार जेटली तो छे ज एम वनस्पत्याहारना पक्षकारो जोर शोरथी कहेता होय छे। एम छतां मांसाहारनी उपर जणावेल गुणविशेषताने तोडी पाडवी मुस्केल छे। आम होवा छतां पण कोईए मांसाहार तरफ, वळवा के ढळवानी कशी ज जरूर छे ज नहि। अने ते एटला माटे के उपर जणाव्युं तेम एज तो मांसाहारत्याग एटले प्राणिजन्य सर्व पदार्थोनो त्याग एम समजवानुं छे ज नहि। नहि तो दूध अने मधु बन्ने वर्ज्य बनी जाय। पशुहिंसा विना बन्ने पदार्थो आजे सुलभ छे अने

शरीरनी ताकत वधारवा माटे आ बन्ने द्रव्यो घणां उपयोगी छे। अने वनस्पतिना विशाळ प्रदेशमां पण अनेक पदार्थो भरेला छे के जे मानवीनी शारीरिक ताकातमां जरूरी सर्व पुरवणी करी शके तेम छे। आ बधु छतां धारो के समग्रपणे विचारतां वनस्पत्याहार करतां मांसाहार वधारे ताकात आपे छे एम हकीकत रूपे सत्य होय तो पण मानवीनो आदर्श बने तेटला बलवान पशु बनवानो कदी हतो नहि, छे नहि। मानवी करतां अनेकगणु वधारे बल धरावतां पशुओ बद्यमान छे। एम छतां मानवीनु ते पशुओ उपर प्रभुत्व वर्तंतु हतु अने वर्ते छे। तेनु कारण ए छे के मानसनु विशिष्ट लक्षण तेनी शारीरिक बलवत्तरता नहि पण प्रखर बुद्धिमत्ता छे। एटले करुणाप्रेरित मानवीनु आ प्रश्न अंगे एक ज वलण होई शके के 'मारू' शरीर निरोगी होय, कार्यक्षम होय तो ते मारा माटे पूरतु छे। मल्ल के कुस्तीबाज थवु अथवा तो बलाढ्य पशु बनवु ए सामान्य मानवीनो आदर्श होई न शके। ताकातनी दृष्टिए मांसाहारनु गमे तेटलु चडियातापणु होय, तो पण एवी ताकातनी मने कोई जरूर नथी के जे मारा अन्तस्तत्त्वने जड बनावी दे, करुणा विहोणु बनावी दे। करुणाप्रेरित मानवी आम हंमेशां विचारे छे अने निरामिष आहार विषेनी पोतानी मक्कमताने कायम राखे छे।

निरामिष —आहारनी तात्त्विक कहो के नैतिक भूमिका आ प्रकारनी छे। तेनो विशेष संबन्ध बुद्धि साथे नहि पण हृदय साथे छे; विज्ञान साथे नहि पण धर्म साथे छे। आजना प्रतिकूल वातावरणमां बुद्धि एम कहेती संभळाय छे के 'दुनियाना मोटा भागना लोको मांसाहारी छे। पशु,

पंखी, मच्छी, मानवीना उपभोग माटे सरजायां छे। शरीरमां अनाज करतां मांस वधारे जलदीथी मली जाय छे, एकरूप थाय छे, पशुओ प्रत्ये आवो दया-करुणानी वातो करवी ए एक प्रकारनी लागणीविवशता छे; हृदय कहे छे के मानवेतर सृष्टिने केवल भोगोपभोगनी दृष्टिए जोवी ए बरोबर नथी। मारी माफक अन्य जीवोने पण जीववानो -सहअस्तित्वनो-एटलो ज अधिकार छे। मने कोई इजा पहोंचाडे, मारो कोई घात करे तो जेम मने गमतुं नथी तेम अन्य प्राणीओने इजा करीए के तेनो घात करीए तो तेमने गमतुं नथी। आ हुं जाणुं छुं अने तेथी तेमनी साथेना व्यवहारमां हुं तेमनी लागणीओनी उपेक्षा करी शकुं तेम नथी। प्रेम जे मारो स्वभाव-धर्म छे ते मात्र मानवीसमाज पुरतो पर्याप्त नथी बनी शकतो, पण भूतमात्रने स्पर्शवा-अपनाववा - झंखे छे। आ वृत्तिनी हुं अवज्ञा शी रीते करी शकुं? दुनियाना लोको गमे तेम वर्तता होय; मारा स्वभाव धर्मथी जे विरुद्ध भासे छे ते माराथी थई न ज शके।, आवी ज रीते विज्ञान केवल मानवलक्षी रह्युं छे। ते मानवीना उत्कर्ष खातर, हित खातर, स्वास्थ्य खातर गमे तेटली हिंसा करतां अचकातुं नथी। आजे तो विज्ञान मानवसमाजनो संहार करवा जाणे के तत्पर थयुं होय एवी भयानक परिस्थिति तेणे उभी करी छे। धर्म समग्र सजीव सृष्टि साथे तादात्म्य साधवानुं कहे छे। तेमां पण जो के मानवी मुख्य स्थाने छे अने होवो ज जोईए एम छतां पण मानवेतर सजीव सृष्टिनी उपेक्षा करवानुं ते कदी पण शीखवतो नथी। धर्मद्वारा प्ररूपित दया-अहिंसा नानामां नाना जीवने स्पर्शवा रक्षवा इच्छे छे। आ हिंसानिर्भर जगतमां संपूर्ण अहिंसक जीवन भले

शक्य न होय तो पण धर्मनुं लक्ष्य सर्व जीवो प्रत्ये कोमलता दाखववानुं, सर्व भूत विषे मैत्री चिन्तववानुं अने बने तेटली ओछी हिंसा वडे अने उपरनी कोटिना जीवोनी रक्षा पूर्वक समाजधारण करवानुं रहेलुं छे। आ धर्मविचार साथे मांसाहार कदी पण सुसंगत थई न ज शके। दयाना विस्तारने कोई छेडो होई न शके।

आ निरामिषाहारपरायण जीवनवृत्ति आत्माना गुण विकासने अनेक रीते उपकारक छे। एम छतां अहिंसानी साधना ए जेनुं जीवनलक्ष्य छे तेने मात्र निरामिषाहारथी संतोष मानवानी जरूर नथी। निरामिषआहार अहिंसानी उपासनानुं एक अंग छे। निरामिषाहारी अन्य मानवी साथेना वर्तावमां घणी वखत अप्रामाणिक स्वार्थी, दुष्ट, निष्ठुर जोवामां आवे छे, ज्यारे अन्य मानवी मांसाहारी होवा छतां मानवीसमाज साथेना व्यवहारमां सरल, नम्र, दयालु, जोवामां आवे छे। आनुं कारण ए छे के आपणी अहिंसावृत्ति- दयानी भावना जेटलां क्षेत्रने स्पर्शे छे तेटलां क्षेत्र पूरतो आपणो वर्ताव कूणो -दयार्द्र बने छे; तेथी इतर क्षेत्रमां ए कूणापणुं जोवामां आवतुं नथी। पशुदया उपर खूब भार मूकनारा लोको घणी वखत मानवी साथेना व्यवहारनो ऊंडाणथी विचार करता जोवामां आवता नथी। तदुपरांत पशुदया एटले पशुनी प्राणहानी-हिंसा न करवी एटली मर्यादित समजण तेमनामां घणी वखत जोवामां आवे छे, पण जीवतां पशुओ साथेना व्यवहारमां तेमना तरफथी केवळ निष्ठुरता-क्रुरता दाखववामां आवती मालूम पडे छे। मानवीना आवा अहिंसाविषयक वर्तनमां असंगतिओ पेदा थवानुं कारण ए छे के अहिंसानो सर्वांगी ख्याल अने तदनुरूप विवेकमयुं आचरण भाग्ये ज कोई मानवीमां पूर्ण-

पणे प्रगटेलुं जोवामां आवे छे। कोई एक बाबत उपर खूब भार मूके छे, तो बीजो बीजी बाबतने वधारे महत्त्वनी गणे छे। शाकाहारी कुटुंबमां जन्मेली व्यक्तिने मांसाहारनो भाग्ये ज ख्याल आवे छे। मांसाहारी कुलपरंपरामां जन्मेला मानवीने मांसाहारमां भाग्ये ज कांई अनौचित्य भासे छे। एवी ज रीते पशुदया उपर भार मूकनारो माणस मानवसमाजने वीसरी जाय छे, मानवताने आगळ धरनारने मन पशुजीवननुं कोई महत्त्व होतुं नथी। जीवनमां साची अने सर्वांगी अहिंसानो उदय थवा माटे माणसे पोताना जीवननुं–आहार तेम ज व्यवहारनुं–आमूल संशोधन करवुं जोईए, नियम अने अपवादना विवेकनी तेने सूझ होवी जोईए, एटलुं ज नहि पण ज्यारे अमुक अने अन्य प्रकारनी हिंसा वच्चे पसंदगी करवानी होय त्यारे साची पसंदगीनुं धोरण तेने सुलभ होवुं जोईए। आ रीते विचारतां मालूम पडशे के निरामिष–आहार अहिंसक आचारनुं मात्र एक पासुं छे अने ते आचारनी संपूर्णताने पहोंचवा बीजां अनेक पासांओनी तेनामां खीलावट थवानी जरूर रहे छे। आ रीते विचारतां ए पण मालूम पडशे के निरामिष आहारीने मांसाहार करती व्यक्ति प्रत्ये घृणा के अवगणनानी नजरे जोवानो अने तेनाथी पोते घणो ऊंचो छे; एवुं अभिमान चिन्तववानो लेशमात्र अधिकार नथी। कारण के आवा निरामिष आहारीना मानसमां अने आचरणमां बीजी पार विनानी हिंसा भरेली होय छे अने पेलो मांसाहारी बीजा व्यवहार अने आचारमां आ निरामिष आहारी करतां अनेक रीते चढियातो एटले के वधारे दयाळु होय एम मालूम पडे छे। संभव छे के ते पण पोताना संस्कार अने पोतानी रीत मुजब अहिंसानी ज अन्य प्रकारे आराधना

करतो होय । मानवीजीवन एटलुं वधुं जटिल अने एटली वधी असंगतिओथी भरेलुं होय छे के कोई पण माणसे पोताना अमुक आचारविचारविषे अभिमान चिन्तववुं अथवा ते कारणे पोताने अन्यथी चडियातो लेखवो ते केवळ अज्ञाननुं ज प्रदर्शन करवा बरोबर छे ।

निरामिष आहार संबंधमां आपणने अंगत गमे तेटलो आग्रह अने प्रतीति होय । पण छतां दुःख साथे ए कबूल कर्या सिवाय चाले तेम नथी के आजनो जीवनप्रवाह निरामिष आहारने भारे प्रतिकूळ बनतो जाय छे । कतलखानामां कपातां जानवरोनी संख्या दिनप्रतिदिन वधती ज जाय छे । जो ताकातवाळा थवुं होय तो मांसाहार करवो जोईए ए मान्यता जोसभेर फेलाती जाय छे । विशाळ समाजमां व्यापी रहेला वातावरण तरफ नजर करीए तो पशुदया ए कोई जूनवाणी विचार होय पण चोतरफ ए विषे केवळ उदासीनता मालूम पडे छे । भारतना महा अमात्य थोडा समय पहेला सौराष्ट्रमां आववाना हता त्यारे गीरनां जंगलोमां मुक्तपणे विचरता सिंहोने जोवानी तेमनी इच्छाने मान आपीने तेओ जे विभागमां फरवाना हता त्यां सिंहोने जताआवता करवा माटे केटलाय दिवसो सुधी सरकारी कर्मचारीओ तरफथी पाडा बकराओ बांधवामां आव्या हता । आ बाबतनुं न तो कशुं दुःख जवाहरलालने हतुं के न तो आम प्रजाने । परदेशमां प्रयोग करवा माटे हजारोनी संख्यामां आ देशमांथी वांदराओनी निकास करवामां आवे छे । अहीं पण जीवता वांदराओ उपर ए प्रयोगो चाली रह्या छे । आ बाबतमां कोईनुं दिल दाझतुं नथी के कोई पोकार उठावतुं नथी । आ

सैकामां बनी गयेलां, बे विश्वयुद्ध अने त्यार पछीनी अनेक घटनाओए मानवीजीवनमां नरी निष्ठुरता पोषवानुं काम कर्युं छे। अणुबोंब अने हाईड्रोजन बोंबनी शोधे मानवीनी संहारशक्तिने असीम बनावी दीधी छे। विज्ञान पोतानी शोधो माटे पशुओनी पार विनानी हिंसा करे छे। दया-करुणानुं तत्त्व मानवीमानसमांथी लुप्त थतुं चाल्युं छे। आजे अणुबोंबना चाली रहेला अखतराओ पशुसृष्टिनो केटलो मोटो विनाश करता हशे तेनो तो कोईने विचार सरखो पण आवतो नथी। एक एक वैद्यकीय शोध पाछळ संख्याबंध पशुओनी हत्या थयेली होय छे अने ए बाबतनी कोईना दिलमां जरा पण अरेराटी रही नथी। उलटुं मानवसमाजना हित खातर ए तो थवुं ज जोईए एम सारा समजदार माणसो पण दुःख के डंख सिवाय बोलता संभळाय छे। दवादारूमां प्राणीजन्य पदार्थोनो छूटथी उपयोग चाली रह्यो छे अने तेनो उपयोग करतां अहिंसा-वादी जैनोने पण जराय प्रकंप थतो जोवामां आवतो नथी। युरोप अमेरिका जता अनेक शाकाहारी कुटुंबना विद्यार्थीओ मोटे भागे मांसाहारी बनीने पाछा फरे छे। संप्रदायी मटवुं अने 'कास्मोपोलीटन' बनवुं एटले निरामिष आहार छोडीने मांसाहारी थवुं अने दूध छोडीने दारु पीता थवुं – आवी समजणना भोग बनता आपणा विशाळ समाजना अनेक युवको नजरे पडे छे। आवा प्रतिकूळ वातावरण अने हिंसाप्रचुर परिस्थिति वच्चे निरामिष आहारनी ततूडी कोण सांभळवानुं हतुं एवी निराशा मन अनुभवे छे। एम छतां पण बीजी बाजुए अहिंसानो विचार आजना जगतमां झडपभेर फेलाई रह्यो छे। समाजहित-चिन्तको अहिंसानी परिभाषामां जीवनना प्रश्नोनो विचार

करवा लाग्या छे । कोई पण काळे कोई पण संयोगोमां निरामिष आहारना स्वीकार सिवाय अहिंसानी साधना अधूरी ज रहेवानी छे-आवी जेनी श्रद्धा अने प्रतीति छे तेणे निरामिष आहारनुं महत्त्व लोको समक्ष सतत मूकवुं ज रह्युं । आजनी हिंसाग्रस्त दुनियाने माथा उपर झझूमी रहेला प्रलयमांथी बचवुं हशे तो अहिंसालक्षी बनवुं ज रह्युं । ए रीते ज्यारे दुनियानुं दृष्टिकोण बदलाशे, अहिंसाना धोरणे पोताना आचार विचारमां ते परिवर्तन करवा मांडशे त्यारे एक एवो दिवस पण जरूर आवशे के ज्यारे तेने मात्र दलित पीडित मानवीओनो ज नहि पण कपातां, चीरातां पशुओनो पण पोकार संभळाशे अने मांस खावुं ए मानवीसभ्यतानो इनकार करवा बरोबर छे ए परम सत्यनो ते स्वीकार करशे। ए दिवस आवशे त्यारे निरामिष आहार विशाळ मानव समाजनो स्वाभाविक आहार बनशे अने ए रीते मानवी सभ्यतानुं एक अगत्यनुं सीमाचिह्न सर थयुं लेखाशे।